सौप्तिक व स्त्री पर्व

भार्गवश्रेष्ठ मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., की आज्ञा से
पण्डित कालीचरण गौड़ ने संस्कृत से अनुवाद किया।

तीसरी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा।
सन् १९१५ ई०।

महाभारत भाषा सौप्तिकपर्व का सूचीपत्र ॥

इति ॥

महाभारत भाषा स्त्रीपर्व का सूचीपत्र ॥

इति ॥

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ॥

महाभारतभाषा सौप्तिकपर्व ॥

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ नवधाम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतं प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकं स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ या भाति वीणामिव वादयन्ती महाकवीनां वदनारविन्दे ॥ सा शारदा शारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभा नः प्रतिभां व्यनक्तु २ पाण्डवानां यशोवर्ष्म सकृष्णमपि निर्मलम् ॥ व्यधायि भारतं येन तं वन्दे बादरायणम् ३ विद्याविदग्रे सरभूषणेन विभूष्यते भूतलमद्य येन ॥ तं शारदालब्धवरप्रसादं वन्दे गुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगं सौप्तिकरम्यपर्वभाषानुवादं विदधाति सम्यक् ५ ॥

अथ सौप्तिकपर्व प्रारम्भः ॥

श्रीनारायण नरोंमें उत्तम नरको और सरस्वती अर्थात् जीव ईश्वरको प्रकट करनेवाली देवीको नमस्कार करके जयनाम महाभारत इतिहासको वर्णन करता हूं सञ्जय बोले इसके पीछे वह वीर एकसाथही दक्षिण ओरको चले और सूर्यास्त के समय डेरोंके पास आये १ तब वह शीघ्रही रथोंको छोड़कर भयभीत हुये और वनदेशको पाकर गुप्त निवासी हुये २ अपनी सेनाके निवासस्थानसे कुछ थोड़ेही अन्तरपर नियत हुये तेजशस्त्रोंसे टूटे अङ्ग चारों ओरसे घायल उन वीरोंने ३।४ लम्बी और उष्णश्वास लेकर पाण्डवोंकी चिन्ता करी फिर विजयाभिलाषी पाण्डवों के घोरशब्द को सुनकर ५ पीछा करने के भयसे भयभीत होकर पूर्वकी ओरको चलदिये वह सब एक मुहूर्त चलकर तृषार्त और थकी सवारी वाले सह न सके ६ वह बड़े धनुषधारी क्रोध और अशान्तताके आधीन और राजा के मारेजानेसे दुःखी चित्त होकर एक मुहूर्ततक नियत हुये ७ धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय ! भीमसेनने यह कर्म श्रद्धाके अयोग्य किया जो उस दशहजार

हाथीके समान मेरे पुत्रको मारा ८ हे सञ्जय! वह मेरा पुत्र जो कि सब जीवोंसे अवध्य वज्रके समान दृढ़ शरीरवाला था युद्धमें पाण्डवों के हाथसे मारागया ९ हे गोलकनके पुत्र, सञ्जय! मनुष्यों से प्रारब्ध उल्लंघन करने के योग्य नहीं है जो मेरा पुत्र पाण्डवों के सम्मुख होकर मारागया १० हे सञ्जय! निश्चय करके मेरा हृदय पत्थर है जो सौपुत्रों को मृतक सुनकर भी विदीर्ण नहीं होता ११ मृतकपुत्रवाला वृद्धों का मिथुन किसप्रकार से रहेगा मैं पाण्डवों के देश में निवास करनेको विचार नहीं करताहूं १२ हे सञ्जय! मैं राजाका पिता आप राजा होकर पाण्डवों का आज्ञावर्ती होकर सेवक के समान कैसे कर्म करूंगा १३ हे सञ्जय! पृथ्वी पर राज्यशासन करके और सब राजाओं के मस्तकपर नियत होकर कैसे उसकी आज्ञाका पालन करूंगा जिसने कि मेरे पुत्रोंका एक पूरा सैकड़ा मारडाला १४ हे सञ्जय! वचन को न करनेवाले उस मेरे पुत्रने महात्मा विदुरजीके वचनको सत्य किया १५ हे सञ्जय! कठिन नाश करनेवालेका मैं कैसे आज्ञावर्तीहूंगा और किसप्रकारसे भीमसेनके वचन सुननेको समर्थहूंगा १६ हे सञ्जय! अधर्म से मेरे पुत्र दुर्योधनके मरनेपर कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्वत्थामाने क्या किया १७ सञ्जय बोले हे राजन्! आपके वीर थोड़ी दूर जाकर नियत हुये और नानाप्रकारके वृक्ष लताओं से संयुक्त घोरवनको देखा १८ उन्होंने जल पीनेवाले उत्तम घोड़ों समेत एक मुहूर्त विश्राम करके सूर्यास्त के समय एक ऐसे वनको पाया १९ जो कि नानाप्रकारके मृगसमूहोंसे सेवित भांतिभांतिके पक्षीगणोंसे व्याप्त और बहुतप्रकारके वृक्ष लतादिकोंसे भराहुआ बहुत भांतिके सर्पोंसे सेवित २० नानाप्रकारके जलोंसे युक्त बहुत भेदके पुष्पों से शोभित सैकड़ों कमलनियों से पूर्ण और नीले कमलोंसे संयुक्त था २१ इसके पीछे चारोंओरको देखते उन वीरोंने उस घोर वनमें प्रवेश करके हज़ारों शाखाओं से युक्त वटके वृक्षको देखा २२ हे राजन्! तब उन नरोत्तम महारथियों ने वटवृक्षको पाकर उस उत्तम वृक्ष के नीचे जाके अपने २ रथोंसे उतरकर घोड़ोंको छोड़ा और न्यायके अनुसार स्नानादिक करके वह सब अपनी २ संध्यावंदन में प्रवृत्त हुये २३ । २४ इसके पीछे पर्वतों में उत्तम अस्ताचल में सूर्य के पहुँचने पर सब जगत् की धात्री रात्रि वर्तमान हुई पूर्ण ग्रह नक्षत्र और ताराओं से अलंकृत चारोंओर से दर्शनीय आकाश स्वर्णबिन्दुओंसे जटित वस्त्रके समान शोभायमान हुआ २५ । २६ जो रात्रिमें घूमनेवाले जीव हैं वह सब नींदके स्वाधीन वर्तमानहुये फिर रात्रिमें घूमनेवाले जीवोंके

शब्द भयानक हुये मांसभक्षी राक्षस अत्यन्त प्रसन्न हुये और घोररात्रि वर्तमान हुई २७ । २८ रात्रिके उस घोरमुखमें दुःख शोकसे संयुक्त कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्वत्थामा बराबर समीप बैठे २९ उस वटके सम्मुख कौरव और पाण्डवोंके होनेवाले नाशको शोचते ३० नींदसे पूर्णशरीर और परिश्रमसे अत्यन्त संयुक्त नानाप्रकारके बाणों से घायल पृथ्वीपर बैठगये ३१ इसके पीछे दुःखके अयोग्य और सुखके योग्य पृथ्वीपर बैठेहुये महारथी कृतवर्मा और कृपाचार्य नींदके वशी-भूत हुये ३२ हे महाराज ! थकावट और शोकसे युक्त पूर्वसमयमें बहुमूल्य श-यनोंपर सोनेवाले वह दोनों अनाथोंके समान पृथ्वीपर सोगये ३३ हे भरतवंशिन्! क्रोध और अशान्ति में वर्तमान और सर्पोंके समान श्वास लेते अश्वत्थामाजी ने निद्राको नहीं पाया ३४ शोकसे ज्वलितरूप उस वीरने निद्राको नहीं पाया तब उस महाबाहुने उस घोरदर्शन वनको देखा ३५ कि नानाप्रकार के जीवोंसे सेवित वनके कोणको देखते महाबाहुने वटके वृक्षको काकों से संयुक्त देखा ३६ हे कौरव ! उसवृक्षपर हजारों काकोंने रात्रिमें निवास किया और पृथक् २ निवासी होकर सुख से निद्रायुक्त हुये ३७ चारोंओर से उन विश्रब्ध काकों के सोजानेपर उन अश्वत्थामाजी ने अकस्मात् आनेवाले घोरदर्शन उलूकको देखा ३८ जो कि बड़ा शब्द बड़ा शरीर पीतनेत्र पिङ्गलवर्ण बहुत लम्बे नख और ऊंची नाक रखनेवाला गरुड़के समान तीव्रगामी था ३९ हे भरतवंशिन्! उस गुप्त आनेवाले के समान पक्षी ने मृदुशब्द करके वटकी शाखाको चाहा ४० काकोंके कालरूप उस पक्षीने वटवृक्षकी शाखापर गिरकर मिलनेवाले बहुत से काकोंको मारा ४१ चरणरूपी शस्त्रधारी ने कितनोंही के पक्षसमेत शिरोंको काटा और कितनोंहीके चरणोंको काटा ४२ उस बलवान्ने अपने सम्मुख दीखनेवाले अनेक काकों को एक क्षणमात्र में काटा हे राजन् ! उनके शरीरों के अङ्ग और शरीरों से वटके वृक्ष का मण्डल सबओरसे ढकगया इसके पीछे वह उलूक उन काकोंको मारकर प्र-सन्न हुआ ४३।४४ अर्थात् वह शत्रुओंका मारनेवाला इच्छाके समान शत्रुओं को मारकर प्रसन्न हुआ रात्रिमें उलूकके किये हुये उस छलयुक्त कर्मको देखकर ४५ उस छलमें संकल्प करनेवाले अकेले अश्वत्थामाजीने विचार किया कि इस पक्षी ने युद्ध में मुझको उपदेश किया है ४६ मेरे मतसे शत्रुओंका नाशकारी समय वर्तमान हुआ अब विजय से शोभा पानेवाले पराक्रमी कृतोत्साह लक्ष्यके प्राप्त करने वाले और प्रहार करनेवाले पाण्डव मेरे हाथ से मारनेके योग्य नहीं हैं और

मैंने राजाके सम्मुख उन सबके मारनेकी प्रतिज्ञा करी है ४७ । ४८ पतंग और अग्निके समान अपने नाश करनेवाली वृत्ति में प्रवृत्त होकर मुझ न्याय से लड़नेवालेका निश्चय प्राणत्याग होगा ४९ और छल करके बड़ी सिद्धिसमेत शत्रुओं का बड़ा नाश होगा इस हेतुसे जो संशयात्मक अर्थसे निस्संशयात्मक अर्थ होना योग्य है ५० जो विद्यावान् मनुष्य हैं वह इसको बहुत मानते हैं ऐसे स्थानपर जो वचन चाहै गर्हित और लोकनिन्दित भी होय ५१ वहक्षात्रियधर्म में प्रवृत्त होनेवाले मनुष्यको अवश्य करना योग्यहै अशुद्ध अन्तःकरणवाले पाण्डवोंने ऐसे छलसे भरेहुये कर्म किये जोकि गर्हित और पदपदपर निन्दित हैं इस विषय में पूर्वसमय में न्यायके देखनेवाले धर्मका विचार करनेवाले मुख्यताके ज्ञाता लोगोंके कहेहुये मुख्य प्रयोजन रखनेवाले श्लोक सुनेजाते हैं शत्रुओं के थकजाने, पृथक् होने और भोजन करने ५२ । ५३ । ५४ चलेजाने और प्रवेशहोनेपर शत्रुकी सेनाको मारना चाहिये जो सेना आधीरात्रिकी निद्राके समय निद्रासे पीड़ित और नाशयुक्त प्रधान ५५ पृथक् २ शूरोंवाली और दो भाग होनेवाली होय उसपर प्रहार करना चाहिये प्रतापवान् अश्वत्थामाने इस प्रकार पाञ्चालों समेत रात्रिके समय सोतेहुये पाण्डवों के मारने का निश्चय किया उसने निर्दयी बुद्धिमें नियत होकर बारम्बार निश्चय करके ५६ । ५७ अपने मामा और भोजवंशी कृतवर्मा इन दोनों सोनेवालों को जगाया तब उन जगनेवाले महात्मा महाबली लज्जायुक्त कृपाचार्य और कृतवर्माने एक मुहूर्तभर ध्यान करके आंशुओंसे व्याकुलनेत्र होकर यह वचन कहा ५८ । ५९ कि वह बड़ा बलवान् एक वीर राजा दुर्योधन मारागया जिसके हेतुसे हमारी शत्रुता पाण्डवों के साथ हुई ६० युद्धमें बहुत नीचोंसमेत ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी बड़े पवित्र पराक्रमवाला अकेला दुर्योधन भीमसेनके हाथ मारागया ६१ महाराजाधिराजका शिर जो पैरों से मर्दन किया यह नीच भीमसेनने बड़ा निर्दय कर्म किया ६२ पाञ्चालदेशी गर्जते हैं क्रीड़ा करते में हँसते हैं सैकड़ों शङ्खों को बजाते हैं और प्रसन्नचित्त दुन्दुभियों को भी बजाते हैं ६३ शङ्खोंके शब्दोंसे युक्त वायुसे चलायमान बाजों के घोरशब्द दिशाओंको पूर्ण करतेहैं ६४ हींसते घोड़े और चिंहाड़ते हाथियोंके बड़े शब्द और शूरवीरोंके भी यह सिंहनाद सुनेजाते हैं ६५ पूर्वदिशामें नियत होकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त जानेवालों के रथनेमियोंके शब्द जो कि रोमांचके खड़े करनेवाले हैं वहभी सुनेजाते हैं ६६ पाण्डवलोगोंने धृतराष्ट्रके पुत्रोंका जोयह नाश किया

है इस बड़ेभारी नाशमें हम तीन शेष हैं ६७ कितनेही सौहार्थीके समान पराक्रमी और कितनेही सब शस्त्रविद्याओं में कुशल थे वह पाण्डवों के हाथसे मारेगये मैं समयकी विपरीतता को मानताहूं ६८ निश्चय करके इस प्रकारके इतनेही कर्म मूलसमेत विचार करनेके योग्य हैं जैसे कि कठिन कर्म करनेपर भी ऐसी दशा है ६९ आपकी जो बुद्धि है वह मोहसे दूर नहीं कीजाती है इस बड़े प्रयोजन के वर्तमान होनेपर जो हमारा हितकारी और भला है उसको कहो ७० ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिद्रौणिमंत्रेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

कृपाचार्य बोले हे समर्थ ! जो तुमने कहा वह तुम्हारा सब वचन सुना हे महाबाहो ! अब मेरे कुछ वचनको भी सुन १ कि प्रारब्ध और उद्योग इन दोनोंके कर्मों में सब बँधेहुये हैं अर्थात् प्रारब्धमें सब ओरसे बँधेहुये हैं और उपायमें कम बँधेहुये हैं इस हेतुसे प्रारब्ध मुख्य है और उद्योग अमुख्य है इन दो बातों से कुछ अधिक वर्तमान नहीं है २ हे श्रेष्ठ ! अकेले दैव अर्थात् प्रारब्धसेही संसारके कार्य पूरे नहीं होते हैं और न केवल उद्योगही से सिद्ध होते हैं इस दशामें दोनों के मिलनेसेही कार्यकी पूर्णता होती है ३ सब छोटे बड़े प्रयोजन इन्हीं दोनों बातोंसे बँधेहुये हैं और सब कार्य जारी होकर पूर्ण होते दिखाई पड़ते हैं ४ अब उन दोनोंमें प्रारब्ध की मुख्यता वर्णन करतेहैं कि पर्वतपर वर्षा करनेवाला पर्जन्य किस फलको सिद्ध नहीं करता है अर्थात विना उद्योग और उपाय के पर्वतपर अपने आप सब वस्तुओं की उत्पत्ति होती है उसी प्रकार जोतेहुये खेतमें भी किस फलको प्राप्त नहीं करता है अर्थात् उद्योग प्रारब्धके आधीन है ५ प्रारब्ध को श्रेष्ठ माननेवाले उद्योग और उद्योगसे रहित प्रारब्ध भी निष्फल होता है इन दोनोंको सर्वत्र निश्चय करते हैं इसमें प्रथम बड़ा निश्चय है ६ जैसे कि अच्छेप्रकार दैवके वर्षने और खेतके जोतनेपर बीज बड़े गुणवाला होता है उसीप्रकार मनुष्यों का भी अभीष्ट सिद्ध करना है अर्थात् दोनोंही से काम पूरा होता है ७ इन दोनोंमें दैव बलवान् है कि वह आपही विना उपायके फल देनेको प्रवृत्त होताहै इसी प्रकार सावधान और ज्ञानी मनुष्य अच्छा निश्चय करके उपायमें प्रवृत्त होतेहैं ८ हे नरोत्तम ! मनुष्योंके सब कर्म उन दोनोंसेही जारी और पूरे होते देखनेमें आते हैं ९ जो उपाय किया है वह भी दैवसे ही सिद्ध होता है इसी प्रकार इन कर्मवालोंका कर्म सफल होता

है १० सावधान चतुर मनुष्योंका अच्छेप्रकार से कियाहुआ भी उद्योग जो दैवसे रहित है वह लोकमें निष्फल दिखाई देता है ११ मनुष्यों में जो लोग आलसी और असाहसी होते हैं वह उद्योगको बुरा कहते हैं उसको बुद्धिमान्‌लोग अच्छा नहीं मानते हैं १२ बहुधा कियाहुआ कर्म इस पृथ्वीपर निष्फल दिखाई देता है फिर दुःख होता है और कर्मको न करके बड़े फलको देखता है यह दोनों बातें बहुधा देखनेमें आती हैं १३ कर्मको न करके दैवयोगसे जो कुछ पाता है और जो कर्म करके भी फलको नहीं पाता है वह दोनों दुर्लभ हैं १४ सावधान और निरालस्य मनुष्य जीवता रहनेको समर्थ होता है और आलस्ययुक्त मनुष्य सुख से वृद्धि नहीं पाता है इस जीवलोक में कर्म करनेमें सावधानलोग बहुधा वृद्धिके चाहने वाले दिखाई देते हैं १५ जो कर्ममें सावधान मनुष्य प्रारब्ध कर्मसे कर्मफलको नहीं भोगता है उसकी कुछ निन्दा नहीं होती है जो प्राप्त होनेके योग्य अभीष्ट को नहीं पाता है १६ और जो अकर्मी कर्म को न करके लोक में फलको पाता है वह निन्दित होता है और बहुधा शत्रु होता है १७ जो मनुष्य इस प्रकारसे इसको निरादर करके इसके विपरीत कर्म करता है वह अपने अनर्थोंको उत्पन्न करता है यह बुद्धिमानों की नीति है १८ फिर जब उद्योग अथवा दैवसे रहित होय तब इन दोनों हेतुओंसे उपाय निष्फल होता है १९ इस लोकमें उपायसे रहित किया हुआ कर्म सिद्ध नहीं होता है जो मनुष्य देवताओं को नमस्कार करके अच्छीरीतिसे प्रयोजनों को चाहता है २० वह आलस्यसे रहित और सावधानीसे संयुक्त है कर्म की निष्फलतासे नाशको नहीं पाता है फिर अच्छे कर्मकी इच्छा यह है जो वृद्धों का सेवन करता है २१ जो अपने कल्याणको पूछता है और उनके हितकारी वचनों को करता है सदैव उठ २ कर वृद्धोंके अङ्गीकृत पुरुष पूछने के योग्य हैं २२ वह पुरुष अभीष्ट सिद्ध करनेमें बड़े तेज हैं और मूलरखनेवाली सिद्धि कहे जाते हैं जो मनुष्य वृद्धोंके वचनों को सुनकर उपायमें प्रवृत्त होता है २३ वह थोड़ेही समयमें उपायके फलको अच्छीरीतिसे पाता है जो मनुष्य राग क्रोध भय और लोभ से अभीष्टों को चाहता है २४ वह अजितेन्द्रिय और अपमान करनेवाला शीघ्रही लक्ष्मी से रहित होकर नाश होता है सो इस लोभी और अदूरदर्शी दुर्योधन ने अज्ञानतासे यह विना विचारा हुआ असमर्थ कर्म प्रारम्भ किया और निषेध करने वाले शुभचिन्तकों का अनादर करके नीचोंकी सलाह से २५।२६ बड़े गुणवान् पाण्डवोंसे शत्रुता करी बड़ा दुःस्वभाव मनुष्य प्रथमही धैर्य करनेके योग्य

नहीं है २७ और अभीष्टके पूरे न होनेपर दुःखी होता है कि मैंने अपने मित्रोंका वचन नहीं किया हमलोग उस पापी पुरुषके पीछे चलते हैं २८ इस हेतुसे हमको भी यह भयकारी अनीति प्राप्त हुई अबतक इस दुःखसे तपाये हुये २९ मुक्त चिन्ता करनेवालेकी बुद्धि अपने कुछ कल्याणको नहीं जानती है और अचेत मनुष्य से सुहृज्जन पूछनेके योग्य हैं ३० उसमें उसकी बुद्धि और नम्रताहै और उसीमें कल्याणको देखता है इस स्थानपर पूछेहुये वह ज्ञानीलोग इसके कार्यों के मूलों को बुद्धिसे निश्चय करके ३१ जैसे कहें वैसा करना चाहिये और वह उसीप्रकार से होगा हम सबलोग जाकर धृतराष्ट्र गान्धारी और बड़े ज्ञानी विदुरजीसे मिल करके पूछें वह हमारे पूछने पर जो कहें वह निस्सन्देह हमारा कल्याण है ३२।३३ वही हमको फिर करना चाहिये यह मेरा दृढ़ मत है कार्यों के प्रारम्भ किये विना कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है ३४ फिर उपाय करने पर भी जिनका कार्य पूरा नहीं होता है वह निस्सन्देह दैवके मारे हुये हैं ३५ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिकृपसंवादेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे महाराज ! तब अश्वत्थामाजी कृपाचार्यके उस वचनको जो कि अत्यन्त शुभ और धर्म अर्थसे संयुक्त था सुनकर दुःख शोकसे संयुक्त १ ज्वलित अग्निरूप के समान शोक से प्रज्वलित होकर चित्तको निर्दय करके उन दोनोंसे बोले २ कि पुरुष पुरुषमें जो २ बुद्धि होती है वही श्रेष्ठ है वह सब पृथक् पृथक् अपनी २ बुद्धिसे प्रसन्न रहते हैं ३ और सब लोकके मनुष्य अपने २ को बड़ा बुद्धिमान् मानते हैं सबकी बुद्धि बहुत अङ्गीकृत है और सब अपनी २ प्रशंसा करते हैं ४ सबकी निजबुद्धि अपनी उत्तमताके वर्णनमें नियत है दूसरेकी बुद्धिकी निन्दा करते हैं और अपनी बुद्धिकी बारम्बार प्रशंसा करते हैं ५ सभा में अन्य २ कारणों के वर्तमान होने से जिनलोगों की बुद्धि एकसी है वह परस्पर प्रसन्न होते हैं और बारम्बार अपनेको बहुत मानते हैं ६ उसी उसी मनुष्यकी वह वह बुद्धि जबतक समयके योगसे विपरीतता को पाकर परस्पर विनाशको पाती है ७ मुख्यकर मनुष्यों के चित्तकी विचित्रता से चित्त की व्याकुलता को पाकर वह वह बुद्धि उत्पन्न होती है ८ हे प्रभो ! इसीप्रकार बड़ा सावधान वैद्य बुद्धिके अनुसार रोगको जानकर औषधी देनेके द्वारा रोग की निवृत्ति के लिये

चिकित्सा करता है ९ इसीप्रकार मनुष्यभी अपने काम पूरे करने के लिये बुद्धि को करते हैं और अपनी बुद्धिसे युक्त मनुष्य उसकी निन्दा करते हैं १० मनुष्य तरुणाई में एक अन्य बुद्धिसे और सम्पूर्ण अवस्थाके मध्यमें अन्यबुद्धिसे मोहित होता है वह वृद्धावस्थामेंभी अन्यही बुद्धिको स्वीकार करता है ११ हे कृतवर्मन्! मनुष्य बड़े घोर दुःखको अथवा उसीप्रकारके ऐश्वर्यकोभी पाकर बुद्धिको विपरीत करता है १२ एकही मनुष्य में वह बुद्धि समय पर उत्पन्न होती है और समय न होनेपर उसको नहीं अच्छी लगती है और बुद्धिके अनुसार निश्चय करके जिस विचारको अच्छीरीति से देखता है उसीप्रकार का उत्साह करता है वह बुद्धि उसके उपायकी करनेवाली है हे भोजवंशिन्, कृतवर्मन्! प्रत्येक मनुष्य यह निश्चय करनेवाला है कि मेरा विचार अच्छा है और प्रसन्नचित्त होकर मारने आदिक में कर्म करना प्रारम्भ करता है १३।१४।१५ सब मनुष्य अपनी बुद्धि और चतुरताकोही जानकर नानाप्रकारके कर्म करते हैं और यही जानते हैं कि यह मेरा हितकारी कर्म है १६ अब मेरे दुःखसे उत्पन्न होनेवाला जो यह विचार पैदा हुआ है उस अपने शोक दूर करनेवाले विचार को मैं तुम दोनों से कहता हूं १७ ब्रह्माजी ने सृष्टिको उत्पन्न करके और उनमें कर्मको नियत करके हरएक वर्ण में विशेषण रखनेवाला एक २ गुण धारण किया १८ ब्राह्मणमें श्रेष्ठ वेद क्षत्रियमें श्रेष्ठ पराक्रम वैश्यमें श्रेष्ठ सावधानी कर्म और शूद्रमें श्रेष्ठ सब वर्णों का आज्ञाकारी होना कहा है १९ अजितेन्द्रिय ब्राह्मण निकृष्ट पराक्रमसे रहित क्षत्रिय निकृष्ट कार्य में असावधान वैश्य निकृष्ट और सब वर्णों की आज्ञाका न करने वाला शूद्र निकृष्ट होकर निन्दा किया जाता है २० सो मैं ब्राह्मणों के बड़े पूजित उत्तम कुलमें उत्पन्न हुआहूं और अभाग्यतासे क्षत्रियधर्मका कर्मकर्त्ता हुआहूं २१ जो मैं क्षत्रियधर्म को जानकर और ब्राह्मणोंके शमदमादि गुणों में नियत होकर बड़े कर्मको करूं वह मेरा कर्म साधुओं से अङ्गीकृत नहीं मैं युद्ध में दिव्य धनुष और अस्त्रों को धारण करता पिताको मृतक देखकर सभामें क्या कहूंगा २२।२३ अब मैं अपनी इच्छा के अनुसार उस क्षत्रिय धर्म की उपासना करके राजा दुर्योधन और महात्मा पिता के भी मार्ग को पाऊंगा २४ अब पाञ्चालदेशी विजय से शोभित बड़े विश्वस्त सवारी और कवचों से जुदे होकर प्रसन्नतायुक्त सोते हैं २५ वह थकेहुये परिश्रम से पीड़ावान् अपनी विजयको मानकर शयन करेंगे अपने डेरों में सुखसे नियत और सोनेवाले उन पाञ्चालदेशियों के डेरों

के उस नाश को करूंगा जोकि कठिनता से करनेके योग्य है अब उन अचेत मृ-
तकरूप पाञ्चालदेशियों को डेरेमें पराजय करके २६।२७ और पराक्रम करके ऐसे
मारूंगा जैसे दानवों को इन्द्र मारता है अब उन धृष्टद्युम्न आदिक सब पाञ्चालों को
एक साथही ऐसे मारूंगा २८ जैसे कि ज्वलित अग्नि सूखे वनको हे श्रेष्ठ ! मैं
युद्धमें पाञ्चालों को मारकर शान्तिको पाऊंगा २९ अब मैं युद्धमें पाञ्चालों को
मारता पाञ्चालों के बीचमें ऐसा हूंगा जैसे कि पशुओंको मारते पशुओं के मध्य
में क्रोधयुक्त पिनाक धनुषधारी आप रुद्रजी होते हैं ३० अब अत्यन्त प्रसन्न सब
पाञ्चालोंको मारकाटकर उसीप्रकारसे युद्धमें पाण्डवोंको भी पीड़ावान् करूंगा ३१
अब मैं पृथ्वीको सब पाञ्चालोंके शरीरों से पूर्णकरके प्रत्येकको मारकर पिताके
ऋणसे अऋणहूंगा ३२ अब मैं पाञ्चालोंको दुर्योधन कर्ण भीष्म और जयद्रथ
के कठिन मार्ग में पहुँचाऊंगा ३३ अब मैं रात्रिके समय थोड़ीही देरमें पाञ्चालों
के राजा धृष्टद्युम्नके शिरको ऐसे मथूंगा जैसे कि पशुके शिरको मर्दन करते हैं ३४
हे कृपाचार्यजी ! अब मैं पाञ्चालदेशियों के और पाण्डवों के सोतेहुये पुत्रोंको
रात्रिके समय युद्धभूमिमें तेजखड्गसे मथूंगा ३५ हे बड़े बुद्धिमन् ! अब मैं रात्रि
के युद्धमें उस पाञ्चालकी सेनाको मारकर कृतकृत्य होकर सुखी हूंगा ३६ ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वणि तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

कृपाचार्य बोले कि प्रारब्धसे बदला लेने में तेरी अविनाशी बुद्धि उत्पन्न हुई
है आप इन्द्रभी तेरे रोकने को समर्थ नहीं है १ हम दोनों एकसाथही प्रातःकाल
के समय तेरे पीछे चलेंगे अब रात्रि में कवच और ध्वजासे पृथक् होकर विश्राम
करो २ मैं और यादव कृतवर्मा अलंकृत रथों पर सवार होकर तुझ शत्रुओं के
सम्मुख जानेवाले के पीछे चलेंगे ३ हे रथियों में श्रेष्ठ ! प्रातःकाल के समय तुम
हम दोनोंके साथ सम्मुखता में पराक्रम करके शत्रु पाञ्चालों को उनके साथियों
समेत मारोगे ४ तुम पराक्रम करके मारने को समर्थ हो इस रात्रिमें विश्राम करो
हे तात ! तुझको जागतेहुये बहुत विलम्ब हुई तब तक इस रात्रि में शयन करो ५
विश्रामयुक्त शयन से सावधानचित्त तुम युद्ध में शत्रुओं को पाकर मारोगे हे
बड़ाई देनेवाले ! इसमें संशय नहीं है ६ देवताओं के मध्यमें इन्द्र भी तुझ रथियों
में श्रेष्ठ उत्तम शस्त्रधारी के विजय करने को उत्साह नहीं करता है ७ कृतवर्मा

से रक्षित और कृपाचार्य के साथ जानेवाले युद्धमें क्रोधयुक्त अश्वत्थामा से इन्द्र भी युद्ध नहीं करसक्ता ८ हम रात्रिमें विश्रामयुक्त शयन करनेवाले तापसे रहित प्रातःकाल शत्रुओं के लोगोंको मारेंगे ९ तेरे और मेरे दिव्य अस्त्रहैं और बड़ा धनुषधारी यादव कृतवर्मा भी युद्धों में निस्सन्देह सावधान है १० हे तात! हम तीनों एकसाथ मिलेहुये सब शत्रुओं को हठसे युद्ध में मारकर उत्तम आनन्द को पावेंगे ११ तुम सावधान होकर विश्राम करो और इस रात्रि में सुखपूर्वक शयन करो मैं और कृतवर्मा धनुषधारी शत्रुओं के तपानेवाले कवचधारी दोनों एकसाथ रथपर सवार होकर तुझ शीघ्र चलनेवाले नरोत्तम रथीके पीछे चलेंगे १२।१३इसके पीछे तुम उन्होंके डेरोंमें जाकर युद्धमें नामको सुनाकर युद्ध करनेवाले शत्रुओंका बड़ा भारी नाश करोगे १४प्रातःकालके समय उनका नाश करके ऐसे विहार करो जैसे कि महाअसुरों को मारकर इन्द्र विहार करता है १५ तुम युद्धमें पाञ्चालोंकी सेनाके विजय करने को ऐसे समर्थ हो जैसे कि सब दानवों का मारनेवाला क्रोधयुक्त इन्द्र दैत्योंकी सेनाको मारकर विहार करताहै १६ वज्रधारी समर्थ साक्षात् इन्द्र भी तुझ मेरे साथी कृतवर्मा से रक्षित को युद्धमें नहीं सहसक्ताहै १७ हे तात! मैं और कृतवर्मा युद्धमें पाण्डवों को विजय किये विना कभी लौटकर नहीं आवेंगे १८ हम सब युद्धमें क्रोधयुक्त पाञ्चालों समेत पाण्डवों को मारकर लौटेंगे अथवा मरकर स्वर्गको जायँगे १९ हे निष्पाप! हम प्रातःकाल युद्धमें सब उपायों से तेरे सहायकहैं हे महाबाहो! मैं यह तुझसे सत्य २ ही कहता हूं २० हे राजन्! मामाजी के ऐसे हितकारी वचनोंको सुनकर क्रोधसे रक्तनेत्र अश्वत्थामा ने मामाजी को उत्तर दिया २१ कि रोगी क्रोधयुक्त धनादिक के शोच करनेवाले और कामी इन लोगोंको निद्रा कहांसे होसक्ती है २२ अब यह मेरा क्रोध चौथाई उत्पन्न हुआहै वह चौथाई क्रोध दिनके अर्थ शयन का नाश करताहै २३ इस लोक में क्या दुःख है कि पिता के मरण को स्मरण करता और जलताहुआ मेरा हृदय अब दिन रात्रि शान्तिको नहीं पाताहै २४ मुख्य करके जैसे प्रकारसे मेरा पिता पापियों के हाथसे मारागया वह सब आपके नेत्रगोचर है वह मेरे मर्मों को काटताहै २५ लोक में मुझसा मनुष्य एक मुहूर्त भी कैसे जीसक्ता है जो मैं पाञ्चालों का वचन सुनता हूं कि द्रोणाचार्य मारेगये २६ मैं धृष्टद्युम्नको न मारकर जीवते रहनेको उत्साह नहीं कर सक्ताहूं वह मेरे पिताके मारनेसे काटने के योग्यहै और जो पाञ्चालदेशी इकट्ठे हैं वह सब भी वध्य हैं २७

इसके विशेष जो मैंने टूटी जंघावाले राजाका जो विलाप सुना वह किस निर्दयी के भी चित्तको नहीं भस्म करेगा २८ फिर टूटी जंघावाले राजाके उस प्रकार के वचनों को सुनकर कौनसे निर्दयी मनुष्य के अश्रुपात नहीं होंगे २९ मेरे जीवतेहुये जो यह मेरा मित्रपक्ष विजयकिया यह मेरे शोकको ऐसे बढ़ाताहै जैसे जलका वेग समुद्रको बढ़ाताहै ३० अब मेरा चित्त एकाग्रहै निद्रा और सुख कहां है हे श्रेष्ठ! मैं वासुदेवजी और अर्जुनसे रक्षित उन लोगोंको ३१ महाइन्द्रसे भी सहनेके योग्य नहीं जानताहूं और इस उठेहुये क्रोधकेभी रोकनेको समर्थ नहीं हूं ३२ मैं इस लोक में ऐसा किसीको भी नहीं देखताहूं जो मुझको मेरे क्रोध से रहित करसके इसीप्रकार साधुओं की अङ्गीकृत इस मेरी बुद्धिको भी कोई नहीं लौटासक्ता ३३ मेरे मित्रोंकी पराजय और पाण्डवों की विजय जो दूतोंने वर्णन करी वह मेरे हृदयको भस्म कररही है ३४ अब मैं रात्रि के युद्ध में शत्रुओंका नाश करके फिर ताप से रहित होकर विश्राम करके शयन करूंगा ३५॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वणि मन्त्रणायां चतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय॥

कृपाचार्य बोले कि दुर्बुद्धि और अजितेन्द्रिय मनुष्य सुननेका अभिलाषीभी सम्पूर्ण धर्म अर्थके जाननेको समर्थ नहीं है यह मेरा मतहै १ इसी प्रकार शास्त्रों के स्मरण रखनेवाली बुद्धिका स्वामी पुरुष जबतक नीति को नहीं सीखताहै तबतक वहभी धर्म अर्थके निश्चयको नहीं जानताहै २ अत्यन्त अज्ञान शूरवीर मनुष्य बहुत कालतक भी पण्डितके पास वर्तमान सेवा करके धर्मोको ऐसे नहीं जानताहै जैसे कि व्यञ्जनके स्वादुको चमचा नहीं जानताहै ३ ज्ञानी पुरुष एक मुहूर्तभी उस पण्डितके पास बैठकर शीघ्रही ऐसे धर्मोंको जानताहै जैसे कि दाल आदिके स्वादुको जिह्वा जानलेती है ४ बुद्धिमान् जितेन्द्रिय और सेवा करनेवाला पुरुष सब शास्त्रोंको जानताहै और ग्राह्य वस्तुओंसे विरोध नहीं करताहै ५ जो दुर्बुद्धि और पापी पुरुष है वह सच्चे मार्ग में पहुँचाने के योग्य नहीं है वह उपदेश कियेहुये कल्याणको त्याग करके बहुतसे पापोंको करताहै ६ फिर शुभचिन्तक लोग सनाथ पुरुषको पापसे निषेध करते हैं और धनका स्वामी उस पाप से लौटताहै परन्तु धनरहित पुरुष नहीं लौटताहै ७ जैसे कि विषयोंमें प्रवृत्तचित्त पुरुष नानाप्रकारके वचनोंसे आधीन कियाजाताहै उसीप्रकार शुभचिन्तक मित्र

से समझाने के योग्यहै और जो योग्य नहीं है वह पीड़ा पाताहै ८ इसी प्रकार ज्ञानीलोग पापकर्म करनेवाले बुद्धिमान् मित्रको सामर्थ्य के अनुसार बारम्बार निषेध करते हैं ९ वह कल्याण में चित्त करके और मनसे बुद्धिको आधीनता में करके उस वचनको करताहै जिसके कारणसे पीछे दुःखी नहीं होताहै १० इस लोक में सोनेवाले मनुष्यों का मारना और इसी प्रकार अशस्त्र रथ और घोड़ोंसे रहित मनुष्योंका मारना धर्मसे प्रशंसा नहीं किया जाताहै ११ जो कहे कि मैं तेराहूं जो शरणागत होय जो खुलेहुये केशहोय और जो मृतक सवारीवालाहै १२ हे समर्थ ! इन सबका मारना भी निषेध है कवचसे रहित मृतकके समान अचेत विश्वासयुक्त सब पाञ्चाल लोग सोते हैं १३ जो कुटिल पुरुष उस दशावाले उन पाञ्चालदेशियों से शत्रुता करेगा वह अथाह विना नौकावाले नरकरूपी समुद्र में डूबेगा १४ तुम लोकके सब अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ विख्यात हो इस लोकमें कभी तुझ से छोटासा भी पाप नहीं हुआ १५ फिर सूर्यके समान तेजस्वी तुम प्रातःकालके समय सूर्योदय होने और सब जीवोंके प्रकट होनेपर युद्धमें शत्रुओंके लोगोंको विजय करोगे १६ मेरे मतसे तुझमें ऐसा निकृष्ट और निषिद्ध कर्म ऐसा असम्भव है जैसे कि श्वेतरङ्गवाला पक्ष रक्तवर्ण होना असम्भवहै १७ अश्वत्थामा बोले हे मामाजी ! जैसा आप कहते हैं वह निस्सन्देह वैसाही है परन्तु प्रथम उन पाण्डवोंने ही इस धर्मरूपी पुलको तोड़ाहै १८ शस्त्र त्यागनेवाला मेरा पिता राजाओंके समक्षमें आपलोगोंकेभी देखतेहुये धृष्टद्युम्नके हाथसे गिरायागया १९ रथियों में श्रेष्ठ कर्ण रथचक्र के पृथ्वीमें घुसजाने पर बड़े दुःख में डूबाहुआ उस अर्जुनके हाथसे मारागया २० इसी प्रकार शस्त्र त्यागनेवाले धनुष आदिकसे रहित शन्तनुके पुत्र भीष्मजी भी शिखण्डीको आगे करके अर्जुनके हाथसे मारे गये २१ इसी प्रकार युद्धमें शरीर त्यागनेके निमित्त बैठाहुआ भूरिश्रवा राजाओं के पुकारतेहुये सात्यकीके हाथसे मारागया २२ दुर्योधन गदासमेत भीमसेन के सम्मुख होकर राजाओं के देखते अधर्म से मारागया २३ वहां अकेला नरोत्तम बहुत रथियोंसे घिरकर अधर्मयुक्त भीमसेनके हाथसे गिरायागया २४ मैंने दूतोंके मुखसे टूटी जंघावाले राजाका जो विलाप सुना वह मेरे मर्मस्थलों को काटताहै २५ इस प्रकारसे पाञ्चालदेशी लोग अधर्मी और पापी हैं जिनका कि धर्मका पुल टूट गयाहै आप इस प्रकारसे उन बे मर्यादवालोंकी निन्दा नहीं करतेहो २६ मैं रात्रिके समय निशायुद्ध में अपने पिताके मारनेवाले पाञ्चालों

को मारकर जन्म पाकर चाहे कीट पतङ्गभी होजाऊं २७ और मैं इसी हेतुसे शीघ्रता करताहूं कि जो यह मेरे कर्मकरने की इच्छाहै उस मुझ शीघ्रता करनेवाले को कहां निद्रा और सुखहै २८ वह पुरुष लोकमें न पैदा हुआहै न होगा जो कि उन पाञ्चालदेशियोंके मारने में यह मति देकर मुझको लौटावे २९ सञ्जय बोले हे महाराज, प्रतापवान्, अश्वत्थामाजी ! इसप्रकार कहकर और एकान्तमें घोड़ों को जोड़कर शत्रुओं के सम्मुख गये ३० बड़े साहसी कृतवर्मा और कृपाचार्यजी दोनों उससे कहनेलगे कि किस निमित्त रथको जोड़ाहै और क्या कर्म करना चाहते हो ३१ हे नरोत्तम ! तेरे साथ हम दोनों चलेंगे एकसा सुख दुःखवाले हम दोनोंपर तुमको सन्देह करना उचित नहीं है ३२ पिताके मरणको स्मरण करते अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजी ने अपने मनका वह सत्य सत्य विचार उनसे वर्णन किया जो उसके चित्तमें करनेकी इच्छाथी ३३ तेजबाणोंसे लाखों शूरवीरोंको मारकर शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरा पिता युद्धमें धृष्टद्युम्न के हाथसे मारागया ३४ निश्चय करके अब मैं इसी प्रकार इस पापी धर्मके त्यागनेवाले राजा पाञ्चालके पुत्र धृष्टद्युम्नको पापकर्म से मारूंगा ३५ मेरे हाथसे पशुके समान माराहुआ धृष्टद्युम्न किसी प्रकारसे भी शस्त्रोंसे विजय कियेहुये लोकों को नहीं पावेगा यह मेरा मत है ३६ कवचधारी खड्ग और धनुषके उठानेवाले शत्रुविजयी उत्तम रथ रखनेवाले तुम दोनों सवार होकर मेरी प्रत्याशा करो अर्थात् मार्ग देखो ३७ हे राजन् ! वह अश्वत्थामा यह कहकर रथपर सवार होकर शत्रुओं के सम्मुख गये कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा उसके पीछे चले ३८ शत्रुओं के सम्मुख जानेवाले वह तीनों ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि यज्ञमें आवाहन की हुई वृद्धियुक्त अग्नि होती है ३९ हे समर्थ ! फिर वह उनके उन डेरों में गये जिसमें उनके मनुष्य अच्छी रीतिसे सो रहेथे और महारथी अश्वत्थामा द्वारस्थान को पाकर नियत हुये ४० ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वणि पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

छठा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय ! इसके पीछे उन दोनों कृतवर्मा और कृपाचार्यने द्वारस्थानपर अश्वत्थामाको नियत देखकर क्या किया उसको मुझसे वर्णन करो १ सञ्जय बोले कि वह महारथी अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्य को पूछकर

क्रोध से पूर्णशरीर डेरे के द्वारपर गया २ उसने वहां जाकर एक जीवको देखा जो कि बड़े शरीरवाला चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान द्वारपर नियत रोमहर्षण करनेवाला ३ व्याघ्र चर्मधारी बड़े रुधिरको गेरनेवाले कृष्ण मृगचर्म का ओढ़नेवाला नागोंका यज्ञोपवीत रखनेवाला ४ बहुत लम्बी स्थूल और नाना प्रकार के शस्त्रों के धारण करनेवाले भुजाओं से बड़े सर्पका बाजूबन्द बांधनेवाला ज्वालसमूहों से व्याप्तमुख ५ दंष्ट्राओं से भयानक महाभयकारी फैले हुये हज़ारों विचित्रमुखोंसे शोभायमान था ६ उसका शरीर और पोशाक वर्णन के योग्य नहीं जिसको कि देखकर सब दशामें पर्वतभी फट जायँ ७ उसके मुख, नाक, कान और हज़ारों नेत्रों से बड़ी २ ज्वाला निकलती थीं ८ उन ज्वालाओं के प्रकाश से शङ्ख चक्र गदाधारी हज़ारों श्रीकृष्ण प्रकट थे ९ उस बड़े अपूर्व सब सृष्टिके भयकारीको देखकर पीड़ासे रहित अश्वत्थामा ने उसको दिव्य अस्त्रोंकी वर्षासे ढकदिया १० उस बड़े तेजरूपने अश्वत्थामाके छोड़ेहुये बाणोंको निगला जैसे कि बड़वामुखनाम अग्नि समुद्रके जलसमूहों को निगलताहै ११ उसी प्रकार उस तेजरूप ने अश्वत्थामा के चलायेहुये बाणों को निगला फिर अश्वत्थामा ने उन अपने बाणसमूहों को निष्फल देखकर १२ ज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित शक्ति को छोड़ा वह प्रकाशमान रथ शक्ति उसको घायल करके ऐसे फटगई १३ जैसे कि प्रलय के समय आकाश से गिरी हुई बड़ी उल्का सूर्यको घायल करके फटजाती है इसके पीछे सुवर्णकी मूठ आकाशवर्ण दिव्य खड्गको १४ ऐसे शीघ्रतापूर्वक मियान से निकाला जैसे कि बिलसे प्रकाशित सर्पको निकालते हैं इसके पीछे बुद्धिमान् ने उत्तम खड्गको उस तेजरूपके ऊपर चलाया १५ वह उस तेजरूपको पाकर उसके शरीरमें ऐसे चलागया जैसे कि नौला बिवरमें घुसजाताहै इसके पीछे उस क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने इन्द्रध्वजा के समान १६ उस ज्वलितरूप गदाको उसके ऊपर चलाया उस तेजरूप ने उसको भी निगला इसके पीछे सब शस्त्रों के नाशवान् होने पर जहां तहां देखनेवाले अश्वत्थामा ने १७ आकाश को श्रीकृष्णसे पूर्ण देखा शस्त्रोंसे रहित अश्वत्थामा उस बड़े चमत्कार को देखकर १८ अत्यन्त दुःखी और कृपाचार्य के वचन को स्मरण करते बोले कि जो पुरुष अप्रिय और परिणाम में शुभदायक मित्रों के वचनोंको नहीं सुनता है वह आपत्तिको पाकर ऐसे शोचता है १९ जैसे कि मैं दोनोंको उल्लङ्घनकर अर्थात् उनके विरुद्ध कर्म करके जो अज्ञानी

शास्त्रज्ञों को उल्लङ्घन करके मारना चाहता है २० वह धर्मसे च्युत होनेवाला है इस हेतुसे कुमार्गमें माराजाता है गौ, ब्राह्मण, राजा, स्त्री, मित्र, माता, गुरु २१ निर्बल, विक्षिप्त, अन्धे, सोनेवाले, भयभीत, उठेहुये, मदमें उन्मत्त, रोगादिकों से अचेत और भूतादिकके आवेशसे मतवाले मनुष्यपर शस्त्र नहीं चलावे २२ इस प्रकार पूर्वमें बड़े बड़े लोगोंके उपदेश होतेथे सो मैंने शास्त्रके बतायेहुये सनातन मार्गको उल्लङ्घन करके २३ कुमार्ग से कर्मका प्रारम्भ करके घोर आपत्तिको पाया बुद्धिमान् लोग उस आपत्तिको घोर कहते हैं २४ जो बड़े कर्मको प्रारम्भ करके भयसे मुख को फेरताहै यहां वह कर्म सामर्थ्य और बलसे करने के योग्य नहीं २५ मनुष्य का कर्म दैवसे बड़ा नहीं कहा जाताहै कर्म करनेवाले का जो मनुष्य कर्म दैवसे सिद्ध नहीं होताहै २६ वह धर्ममार्ग से च्युत होकर आपत्ति को प्राप्त होता है ज्ञानी पुरुष प्रतिज्ञानको अविज्ञान कहते हैं २७ जो इस लोकमें किसी कार्य को प्रारम्भ करके फिर भयसे छोड़ देताहै सो अन्यायसे यह भय मेरे समक्षमें नियत हुआ २८ द्रोणाचार्यका पुत्र युद्धमें किसी दशामें भी मुख फेरने-वाला नहीं हुआ और यह बड़ा तेजरूप उत्पन्न दैवदण्डके समान सन्नद्ध है२९ मैं सब प्रकार से विचारता हुआ भी इसको नहीं जानता हूं निश्चय करके जो मेरी यह पापबुद्धि अधर्म में प्रवृत्तहै ३० उसका यह महाभयकारी फल मरणके लिये प्रकट है वह मेरा युद्ध में मुखका फेरना दैवका रचाहुआ है ३१ यहां किसी दशामें भी कोई बात उपाय करनेके योग्य नहीं सो मैं अब समर्थ और शरणके योग्य महादेवजी की शरणागत होताहूं ३२ वही मेरे इस घोर दैवदण्डका नाश करेगा जो कि कपर्दी, देवताओंके भी देवता, उमापति, उपाधि से रहित ३३ कपालों की माला रखनेवाले रुद्र, भगनेत्र के मारनेवाले हर, उस देवताने तप और पराक्रमसे देवताओं का उल्लङ्घन किया ३४ इस हेतुसे मैं उस गिरिश और शूलधारीकी शरणागत होता हूं ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वणि षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे राजन्! वह अश्वत्थामा इसप्रकार अच्छे प्रकार विचार करके रथ के बैठनेके स्थानसे उतरकर नम्रतापूर्वक देवेशके सम्मुख नियत हुआ १ अश्वत्थामा बोले कि मैं अत्यन्त शुद्धचित्त से अज्ञानियों के कठिनकर्मों भेंटमे

शिवजीको पूजन करता हूं जोकि उग्र, स्थाणु, शिव, रुद्र, शर्व, ईशान, ईश्वर, गिरीश, वरद, देवभवभावन्, ईश्वर २ शितिकण्ठ, अज, शुक्र, दक्षक्रतुहर, हर, विश्वरूप, विरूपाक्ष, बहुरूप, उमापति ३ श्मशानवासी, दृप्त, महागणपति, विभु, खट्वाङ्गधारी, रुद्र, जटिल, ब्रह्मचारी ४ स्तुत, स्तुत्य, स्तूयमान, अमोघ, कृत्तिवासस, विलोहित, नीलकण्ठ, असह्य, दुर्निवारण ५ इन्द्र, ब्रह्मसृजब्रह्म, ब्रह्मचारी, व्रतवन्त, तपोनिष्ठ, अनन्त, तपतांगति अर्थात् तपस्वियों की गति ६ बहुरूप, गणाध्यक्ष, त्रिनेत्र, परिषदप्रिय, धनाध्यक्ष, क्षितिमुख, गौरीहृदयवल्लभ ७ । ८ कुमारपितर, पिंग, नन्दीवाहन, तनुवासस, अत्युग्र, उमाभूषणतत्पर ९ परसे परे जिससे कि उत्तम श्रेष्ठ नहीं है उत्तमबाण अस्त्रोंके स्वामी दिगन्त देशरक्षिण १० हिरण्यकवच, सृष्टिरक्षक, देव, चन्द्रमौलि, विभूषण ऐसे देवताके उत्तम समाधि से शरणागत होता हूं ११ अब जो इस घोर कठिन आपत्तिसे उत्तीर्ण होजाऊं उस दशामें उन शिवजी का मैं सर्वभूत बलि से पूजन करूंगा १२ उस शुभकर्मी महात्मा के निश्चयको योगसे जानकर आगे से स्वर्णमयी वेदी प्रकट हुई १३ हे राजन् ! तब उस वेदी में अग्नि देवता प्रकट हुये उसने दशों दिशाओं को और आकाशको अपनी ज्वालाओंसे पूर्ण किया उस स्थानपर प्रकाशितमुख और नेत्र रखनेवाले बहुतसे चरण शिर और भुजावाले रत्नजटित बाजूबंदधारी ऊंचा हाथ करनेवाले १४ । १५ द्वीप और पर्वतके स्वरूप बड़े गुण प्रकट हुये जोकि कुत्ता, वाराह और ऊंटकी सूरत, घोड़े, बैल और शृगाल के समान मुख रखनेवाले १६ रीछ, बिलार, व्याघ्र, हाथी, काग, प्लव और तोतेके समान मुख रखनेवाले १७ बड़े अजगर, हंस, दार्वाघाट और चाषके समान मुख रखनेवाले श्वेतप्रभाधारी १८ इसीप्रकार कूर्म, नक्र, शिशुमार, बड़ा मगर तिमिनाम मत्स्यके समान मुख रखनेवाले १९ वानर, क्रौंच, कपोत, हाथी, कबूतर और मद्गुके समान मुख रखनेवाले २० इसीप्रकार हाथमें कान रखनेवाले, हजार नेत्रधारी, दीर्घोदर, मांसरहित शरीर काग और बाज पक्षीके समान मुख रखनेवाले २१ हे भरतवंशिन् ! इसीप्रकार शिररहित रीछमुख प्रकाशितचक्षु जिह्वा और ज्वलितरूप कानवाले २२ ज्वालाकेश प्रकाशित देहरोम, चतुर्भुज, बहुतसे मेष और छागके समान मुख रखनेवाले २३ शङ्खवर्ण, शङ्खमुखी, इसी प्रकार शङ्खके समान कान रखनेवाले, शङ्ख मालाधारी, शङ्खध्वनिके समान शब्द रखनेवाले २४ जटाधारी, पांच शिखा रखनेवाले, मुण्ड, कृशोदर, चार दंष्ट्रा और चार जिह्वा रखनेवाले, शङ्खोंके

समान कान और किरीटधारी २५ हे राजेन्द्र! उसी प्रकार मेखलाधारी, घूंघरवाले बाल, पगड़ीवाले, मुकुटधारी, सुन्दर पोशाक से अलंकृत २६ पद्म, उत्पल के मालाधारी इसीप्रकार कुमुदमालाधारी माहात्म्यसे संयुक्त सैकड़ों गुण २७ शतघ्नी, वज्र, मुसल, भुशुण्डी, पाश और दण्ड हाथमें रखनेवाले २८ पृष्ठपर कवच बांधनेवाले, विचित्र बाणसमूह रखनेवाले, ध्वजा, पताका, घण्टा और फरसा रखनेवाले २९ महापाशों से उद्यत करलकुट स्थूण और खड्गधारी, ऊंचे सर्पोंसे युक्त किरीट रखनेवाले ३० इसीप्रकार नीलवर्ण, पिङ्गलवर्ण, मुण्डमुखी अत्यन्त प्रसन्न सुवर्ण के समान प्रकाशित पार्षदोंने ३१ भेरी, शङ्ख, मृदङ्ग, झर्झर, आनक और गोमुखोंको बजाया इसीप्रकार बहुतसे गाते नाचते ३२ । ३३ फांदते उछलते महारथी शीघ्रगामी मुण्ड और वायुसे चलायमान केशधारी दौड़ते ३४ और मतवाले बड़े हाथियोंके समान बारम्बार गर्जते बड़े भयानक घोररूप शूल और पट्टिश हाथ में रखनेवाले ३५ उसी प्रकार बहुत वर्ण के वस्त्र अपूर्वमाला और चन्दनसे अलंकृत रत्नजटित बाजूबन्द रखनेवाले, ऊंचा हाथ रखनेवाले ३६ ऊंधा करके शत्रुओं के मारनेवाले, असह्य पराक्रमवाले, रुधिर मज्जाओं के पान करनेवाले, मांस अँतड़ियोंके खानेवाले ३७ कर्णिकारपुष्प के समान शिखाधारी अत्यन्त प्रसन्न पिठरोदर अर्थात् थालीके समान मुख रखनेवाले, अतिह्रस्व, अतिदीर्घ, प्रलम्ब, भयानक ३८ विकट काले और लम्बे ओष्ठधारी बड़े शिश्नेन्द्रिय और वृषण रखनेवाले बहुतसे बहुमूल्य मुकुट रखनेवाले, मुण्ड जटिल ३९ उन पार्षदोंने पृथ्वीपर सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह और नक्षत्रों समेत आकाशको वर्तमान किया जो कि चारोंखानके जीवसमूहों के मारने को उत्साह करें ४० और जो तीनों लोकोंके ईश्वरों के ईश्वर निर्भय, सदैव शिवजीकी भ्रुकुटीको सहनेवाले और सदैव स्वेच्छाचारी कर्म करनेवाले ४१ अविनाशी आनन्द में अत्यन्त प्रसन्न, वचन के स्वामी, ईर्षा से रहित अष्टगुणवाले ऐश्वर्य को पाकर आश्चर्ययुक्त नहीं होते हैं ४२ भगवान् शिवजी जिन्हों के कर्मोंसे सदैव आश्चर्य करते हैं और जिन्होंने मन, वचन, कर्मसे प्रवृत्त होकर सदैव आराधन किया ४३ वह शिवजी भक्तोंको उनके मन, वचन और कर्मों के द्वारा उनकी ऐसे रक्षा करते हैं जैसे माता अपने पुत्रों की करती है बहुत से पार्षद सदैव ब्राह्मणों के शत्रुओं के रुधिर मज्जा आदिके पान करनेवाले थे ४४ और जो शास्त्र अथवा ज्ञान, ब्रह्मचर्य, तप और चित्तकी शान्ति के द्वारा सदैव चारप्रकार के अमृतका पान

करते हैं उनका ब्यौरा अन्नरूप, रसरूप, अमृतरूप, चन्द्रमण्डलरूप ४५ और जिन्होंने शिवजीकी आराधना करके उनकी सायुज्यता को पाया अर्थात् शिव रूप को पाया भगवान् महेश्वर भूत, वर्त्तमान और भविष्य के स्वामी शिवजी जिन आत्मारूप महाभूतों के समूहों को और पार्वतीजी समेत यज्ञोंको भोगते हैं वह पार्षद अनेक प्रकार के बाजे हिंस सिंहनाद घोरशब्द और गर्ज से ४६।४७ सब सृष्टिको भयभीत करते बड़े प्रकाश को उत्पन्न करते महादेवजीकी स्तुति करते बड़े तेजस्वी उस अश्वत्थामा के सम्मुख गये ४८ महात्मा अश्वत्थामा की महिमाके बढ़ानेके अभिलाषी और उसके तेजको जानना चाहते रात्रियुद्ध देखनेके उत्कण्ठित ४९ ऐसे भयानक और उग्र प्रभावाले शूल पट्टिश शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले घोररूप भूतगण चारोंओरसे आपहुँचे ५० जोकि अपने दर्शन से तीनों लोकोंके भयको उत्पन्न करें उनको देखकर महाबली अश्वत्थामाजी ने भी पीड़ा नहीं की ५१ इसके पीछे हाथ में धनुष युद्धके हस्तत्राणधारी अश्वत्थामाने आप अपनी आत्मासे आत्माको भेंट किया ५२ हे भरतवंशिन्! वहां उसकर्म में धनुषोंको समिध तेजबाणोंको पवित्रा और आत्मा समेत शरीरके दान को हव्य नियत किया ५३ इसके पीछे बड़े क्रोधयुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामाने सोमदेवता से सम्बन्ध रखनेवाले मन्त्रके द्वारा शरीररूप भेंटको अर्पण किया ५४ हाथ जोड़ेहुये अश्वत्थामा उस रुद्र कर्मवाले अजेय महात्मा रुद्रजी को उनके रुद्रकर्मों से स्तुति करके यह वचन बोले ५५ हे भगवन्! अब मैं अंगिरावंश में उत्पन्न होनेवाले इस शरीरको आत्मारूपी अग्निमें हवन करताहूं मुझ बलिरूप को आप अङ्गीकार करिये ५६ हे विश्वात्मन्, महादेवजी! मैं इस आपत्तिमें आप की भक्ति और परमसमाधि से आपके आगे अर्पण करताहूं ५७ सब जीव आप में हैं और निश्चय करके सब जीवों में आपही हैं और आपमें प्रधानगुणों की ऐक्यता भी नियत है ५८ हे सब जीवोंके रक्षास्थान, समर्थ देवता! मुझ नियत हव्यरूपको स्वीकार करो जो शत्रु मुझसे अजेय हैं ५९ अश्वत्थामाजी यह कहकर औरशरीरकी प्रीतिको त्याग करके उस वेदीपर जिसपर अग्नि प्रकाशित थी चढ़कर अग्नि में प्रवेश करगये ६० साक्षात् भगवान् महादेवजी हँसतेहुये उस ऊंचे हाथ चेष्टारहित हव्यरूपको नियत देखकर बोले ६१ मैं जिसप्रकार सुगमकर्मा श्रीकृष्णजी की सत्यता, पवित्रता, सरलता, त्याग, तप, नियम, क्षान्ति, भक्ति, धैर्य, बुद्धि और वचन से आराधन कियागया और उस श्रीकृष्ण से अधिकतम मेरा

कोई प्रिय नहीं है ६२।६३ हे तात! तुझको जानने के अभिलाषी श्रीकृष्णजी का मान करनेवाले मैंने अकस्मात् पाञ्चालदेशियों की रक्षा करी और बहुतसी माया प्रकट कीं ६४ पाञ्चालदेशियों के रक्षाकरनेवाले मैंने उन श्रीकृष्णजी का मान किया परन्तु अब यह पाञ्चालदेशी काल से पराजय हुये हैं इससे अब इन का जीवन नहीं है ६५ भगवान्ने उस महात्मा से ऐसा कहकर अपने शरीरको उसमें प्रवेश किया और उसको बहुत निर्मल और उत्तम खड्ग दिया ६६ फिर भगवान्के प्रवेशित शरीरसे अश्वत्थामाजी तेजसे ज्वलित अग्निरूप हुये और देवताके दियेहुये तेजसे युद्धमें वेगवान् हुये ६७ साक्षात् ईश्वरके समान शत्रु के डेरे में जानेवाले उन अश्वत्थामाजी के पीछे दृष्टिसे गुप्तजीव और राक्षस चारों ओर से चले ६८ ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वणि सप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले डेरे में महारथी अश्वत्थामा के जानेपर भयसे पीड़ावान् कृपाचार्य और कृतवर्मा तो लौटकर नहीं चले आये १ कहीं नीच रक्षकों से तो नहीं रोकेगये और क्या उन लोगों ने उनको नहीं देखा दोनों महारथी रात्रि के युद्ध को असह्य जानकर तो नहीं लौटे २ डेरे को मथकर और युद्धमें सोमक पाण्डवों को मारकर दुर्योधन की उत्तम पदवी को प्राप्त किया ३ क्या वह दोनों वीर पाञ्चालदेशियों के हाथ से मृतक होकर पृथ्वीपर शयन करनेवाले तो नहीं हुये? अथवा कोई उन दोनों ने कर्म भी किया? हे सञ्जय! वह सब मुझसे कहो ४ सञ्जय बोले कि डेरे में उस महात्मा अश्वत्थामा के जानेपर कृपाचार्य और कृतवर्मा डेरे के द्वारपर नियतरहे ५ हे राजन्! फिर अश्वत्थामाजी उन दोनों महारथियोंको उपाय करनेवाला देखकर बड़े प्रसन्न होकर यह वचन बोले ६ उपाय करनेवाले आप सब क्षत्रियों के नाश करने को समर्थ हैं मुख्यकर शेष बचे और सोतेहुये शूरवीरों के मारनेको फिर क्यों नहीं समर्थ होंगे ७ मैं डेरे में प्रवेश करूंगा और कालके समान घूमूंगा इस द्वारपर आनेवाला कोई मनुष्य भी जैसे प्रकार जीवता न जानेपावे ८ वैसाही आपको करना योग्य है यह मेरा दृढ़ विचार है अश्वत्थामा जी शरीरके भयको त्यागकर अन्य द्वारमें घुसकर पाण्डवोंके बड़े डेरे में पहुँचे ९ उसके स्थानोंके जाननेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त तेजसे ज्वलितरूप उन महाबाहु अश्वत्थामाजी ने प्रवेशकरके रात्रि में निद्रा में अचेत सोनेवाले सब मनुष्यों के

ओर पास भ्रमण किया १० । ११ और सुगमता से धृष्टद्युम्नके डेरेको पाया वह लौट सन्मुख होकर युद्धमें चारों ओर दौड़नेवाले युद्ध में महाकठिन कर्मों को करके बहुत श्रमित होकर सोगये थे हे भरतवंशिन्! इसके पीछे अश्वत्थामाजीने उस धृष्टद्युम्न के उस स्थान में प्रवेश करके १२।१३ शयनपर सोते हुये धृष्टद्युम्न को समीपसे देखा हे राजन्! स्वच्छ अत्यन्त अलसी से तैयार बहुमूल्य बिस्तरोंसे युक्त, बड़ी उत्तम मालाओं से अलंकृत, धूप चन्दन चूरेआदि से सुगन्धित बड़े शयनपर सोनेवाले विश्वासी और निर्भय उस महात्मा धृष्टद्युम्न को १४ । १५ चरणघात से जगाया युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न ने चरणके घातसे जगकर १६ बड़े बुद्धिमान्‌ने महारथी अश्वत्थामा को पहचाना बड़े पराक्रमी अश्वत्थामाने उस शयनसे उछलनेवाले धृष्टद्युम्नको १७ हाथोंसे बालों के द्वारा पकड़कर पृथ्वीपर रगड़ा हे भरतवंशिन्! तब बलसे उस अश्वत्थामाका रगड़ाहुआ वह धृष्टद्युम्न १८ भय और निद्रासे चेष्टा करने को समर्थ नहीं हुआ हे राजन्! पैरोंसे उसको कण्ठ और छातीपर दबाकर १९ पुकारते और चेष्टा करतेको पशुकी भांति मारा फिर नखों से पीड़ावान् करते उस धृष्टद्युम्नने धीरे २ अश्वत्थामासे कहा २० हे आचार्य के पुत्र! मुझको शस्त्रसे मारो विलम्ब मत करो हे द्विपादों में श्रेष्ठ! मैं आपके कारण से पवित्र लोकों को पाऊं २१ शत्रुओं का तपानेवाला बलवान् से कठिन दबाया हुआ राजा पाञ्चालका पुत्र इसप्रकार के वचनको कहकर मौन होगया २२ इसके पीछे अश्वत्थामा उसके उस धीरे से कहे हुये वचन को सुनकर बोले हे कुलकलंकिन्! गुरु के मारनेवाले के लोक नहीं हैं २३ इस हेतु से तुम शस्त्रसे मरने के योग्य नहीं हो हे दुर्बुद्धे! तुझ निर्दयी और गुरुभक्तिसे रहित के हाथसे मेरा पिता मारागया २४ इस कारण से मुझ निर्दय के हाथ से निर्दयी के समान मारने के योग्य हो जैसे कि सिंह मतवाले हाथी की ओरको गर्जता है उसी प्रकार उस वीर से इस प्रकार कहते हुये २५ क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने कठिन एँड़ियोंसे मर्मस्थलोंपर घायल किया उस मरनेवाले वीरके शब्दों से महल में २६ वह स्त्रियां उस बुद्धिसे बाहर पराक्रमवाले और डरानेवाले अश्वत्थामा को देखकर २७ भूतको निश्चय करनेवाली होकर भयसे नहीं बोलीं वह तेजस्वी उस उपायसे उस वीरको यमलोकमें पहुँचाकर २८ और सुन्दरदर्शन रथको पाकर नियत हुआ हे राजन्! वह समर्थ और बलवान् अश्वत्थामा उसके डेरे मे निकलकर दिशाओं को शब्दायमान करते २९

शत्रुओं के मारने के अभिलाषी रथ की सवारी के द्वारा डेरेको गये इसके पीछे उस महारथी अश्वत्थामाके हटजाने पर ३० सब स्त्रियां अपने रक्षकों समेत पुकारीं हे भरतवंशिन्! राजा को मराहुआ देखकर अत्यन्तदुःखी ३१ सब क्षत्रिय जोकि धृष्टद्युम्नके नौकरथे पुकारे फिर उन्होंके शब्दों से सम्मुखही उत्तम २ क्षत्रिय तैयार हुये ३२ और बोले कि यह क्या बात है हे राजन्! वह भयभीत स्त्रियां अश्वत्थामा को देखकर ३३ दुःखीकण्ठ से बोलीं कि शीघ्र जावो यह राक्षस होय अथवा मनुष्य होय हम इसको नहीं जानती हैं ३४ वह राजा पाञ्चाल को मारकर रथपर नियत है उसके पीछे उन उत्तम शूरोंने अकस्मात् चारोंओरसे घेरलिया ३५ उसने उन सब चढ़ाई करनेवालों को रुद्रअस्त्र से मारा फिर उसने सब साथियों समेत धृष्टद्युम्न को मारकर ३६ समीपही शयन पर सोनेवाले उत्तमौजसको देखा उसको भी पराक्रमसे कण्ठ और छाती को दबाकर ३७ उस पुकारनेवाले शत्रुविजयी को उसी प्रकारसे मारा और युधामन्यु उसको राक्षसके हाथसे मृतक मानकर आया ३८ और वेगसे गदा को उठाकर अश्वत्थामा को हृदयपर घायल किया गदाके आघातसे घायल होकर भी अश्वत्थामा युद्धमें कम्पायमान नहीं हुआ ३९ और उसके सम्मुख जाकर उसको भी पकड़कर पृथ्वी पर गिराया उसी प्रकार इस चेष्टा करनेवाले को भी पशु के समान मारा ४० वह वीर उसको उस प्रकार से मारकर जहां तहां सोनेवाले दूसरे महारथियों की ओर गया ४१ क्रोधयुक्तने समीपही पाञ्चालदेशी वीरों को दबाकर फड़कते और कांपतेहुओं को ऐसे मारा जैसे कि यज्ञमें मारनेवाला पशुओंको मारता है ४२ इसके पीछे भागक्रमसे मार्गों को घूमते खड्गयुद्धमें कुशल अश्वत्थामाने खड्गको लेकर पृथक् २ अन्य लोगों को मारा ४३ इस प्रकार गुल्मनाम सेनाके भागमें सोनेवाले अशस्त्र और थकेहुये उन सब गुल्ममें वर्तमान लोगोंको एक क्षणभरमें मारा ४४ रुधिर से लिप्त सब शरीर कालसृष्टि में अन्तकके समान अश्वत्थामा ने शूरवीर घोड़े और हाथियों को मारा ४५ वह अश्वत्थामा तीन प्रकारसे रुधिरमें लिप्तहुये उन चेष्टा करनेवालों से, खड्ग चलाने वालों से और खड्ग के कम्पायमान होने से ४६ उस रुधिर से रक्तवर्ण प्रकाशित खड्गधारी, युद्ध करनेवाले, बड़े भयके उत्पन्न करनेवाले अश्वत्थामाका रूप राक्षसादिक के समान दिखाईपड़ा ४७ हे कौरव! जो जाग उठे वह भी शब्द से अचेत हुये और एक दूसरेको देखकर पीड़ावान् हुये ४८ उस

शत्रुविजयी के उस रूपको देखकर उसको राक्षस मानते उन क्षत्रियों ने अपने २ नेत्रों को बन्द करलिया ४९ इसके पीछे डेरे में कालके समान घूमतेहुये उस घोररूपने शेष बचेहुये द्रौपदी के पुत्र और सोमकोंको देखा ५० हे राजन्! उस शब्दसे भयभीत धनुष हाथ में लिये द्रौपदी के पुत्रों ने धृष्टद्युम्नको मरा हुआ सुनकर ५१ निर्भय के समान बाणोंके समूहोंसे अश्वत्थामाको ढक दिया इसके पीछे उस शब्दसे प्रभद्रकनाम क्षत्रिय जागउठे ५२ शिखण्डीने शिलीमुख बाणों से अश्वत्थामाको पीड़ावान् किया वह अश्वत्थामा बाणों की वर्षा करनेवाले उन वीरों को देखकर उन महारथियों को मारनेका अभिलाषी बड़ा बलवान् शब्दको गर्जा फिर पिताके मरणको स्मरण करता अत्यन्त क्रोधयुक्त ५३ । ५४ रथसे उतरकर शीघ्रही सम्मुख गया और युद्धमें हज़ार चन्द्रमाओं के चित्रोंसे चित्रित निर्मल ढालको लेकर ५५ सुवर्ण से निर्मित दिव्य खड्गको पकड़कर द्रौपदीके पुत्रों के सम्मुख जाकर बलवान्ने सबको खड्ग से घायल किया ५६ हे राजन्! इसके पीछे उस नरोत्तमने बड़े युद्ध में प्रतिविन्ध्य को कुक्षि स्थानपर घायल किया वह मरकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ५७ प्रतापवान् सुतसोम प्राससे अश्वत्थामाको छेदकर खड्गको उठाके अश्वत्थामा के सम्मुख गया ५८ नरोत्तम अश्वत्थामाने सुतसोम की भुजा को खड्ग समेत काटकर कुक्षिपर घायल किया वह भी टूटा हृदय होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ५९ फिर नकुलके पुत्र पराक्रमी शतानीकने रथचक्रको दोनों भुजाओंसे घुमाकर वेग से उसकी छातीपर घायल किया ६० फिर उस ब्राह्मणने चक्र छोड़नेवाले शतानीक को घायल किया वह व्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा इसके पीछे उसके शिर को काटा ६१ फिर श्रुतकर्मा परिघको लेकर और दौड़कर अश्वत्थामाके सम्मुख गया और ढालसे युक्त वामकुक्षिपर कठिन घायल किया ६२ फिर उस अश्वत्थामाने उत्तम खड्गसे उस श्रुतकर्मा को मुखपर घायल किया वह रूपान्तर और अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ६३ फिर उस शब्दसे महारथी श्रुतकीर्तिने अश्वत्थामा को पाकर बाणोंकी वर्षा से ढकदिया ६४ उस अश्वत्थामा ने उसकी बाणवृष्टि को ढालपर रोककर कुण्डलधारी प्रकाशित शिरको शरीर से जुदा किया ६५ उसके पीछे उस पराक्रमीने सब ओरसे नानाप्रकारके शस्त्रोंके द्वारा वीर शिखण्डीको सब प्रभद्रकों समेत घायल किया ६६ उस शिखण्डीने दूसरे शिलीमुखसे दोनों भृकुटियों के मध्यमें घायल किया फिर क्रोधसे पूर्ण उस बड़े बलवान्

अश्वत्थामाने ६७ शिखण्डी को पाकर खड्ग से दो खण्ड करदिया फिर क्रोधसे पूर्ण शत्रुओंका तपानेवाला उस बड़े वेगवान् शिखण्डी को मारकर प्रभद्रकोंके सब समूहों के सम्मुख गया और राजा विराटकी जो सेना शेष थी उसपर भी चढ़ाई करनेवाला हुआ ६८ । ६९ बड़े बलवान् ने देख देखकर द्रुपदके पुत्र पौत्र और मित्रों का भी घोर नाश किया ७० खड्ग मार्ग में कुशल अश्वत्थामा ने अन्य लोगों के भी सम्मुख जाजाकर उनको खड्ग से काटा ७१ उन लोगों ने रक्तनेत्र रक्तमाला चन्दनसे अलंकृत लाल पोशाकधारी पाश हाथमें लड़के आदिक रखनेवाली अकेली काली ७२ गातीहुई नियत कालरात्रिको देखा हे राजन्! मनुष्य घोड़े और हाथियोंको पाशोंसे बांधकर जानेके अभिलाषी घोररूप ७३ बालों से पृथक् पाशों में बँधेहुये बहुत प्रकारके मृतकों के लेजानेवाले और इसी प्रकार अन्य रात्रियों में ७४ स्वप्नावस्था में सदैव बेसलाह सोतेहुये महारथियोंको लेजानेवाली उस कालीको और उस मारनेवाले अश्वत्थामाको उत्तम शूरवीरों ने सदैव देखा ७५ जबसे कि कौरवीय और पाण्डवीय सेनाका युद्ध जारीहुआ तब से लेकर उस कन्याको और अश्वत्थामा को स्वप्नमें देखा ७६ युद्ध में सब जीवधारियों को डराते और भयानक शब्दोंको गर्जते अश्वत्थामाने प्रथम दैवसे हतेहुये उन लोगोंको पीछेसे गिराया ७७ दैवसे पीड़ित उन वीरोंने उस पूर्व समयके देखेहुये स्वप्नको स्मरण करके माना कि यह वही बातहै ७८ इसके पीछे पाण्डवोंके डेरे में वह सैकड़ों और हजारों धनुषधारी उस शब्दसे जागउठे ७९ कालसे प्रवृत्त मृत्युके समान उस अश्वत्थामाने किसीके पैरोंको काटा किसीके जंघन को और कितने ही को कुक्षिपर छेदा ८० हे प्रभो ! कठिन मर्दन कियेहुये शब्द करनेवाले मतवाले हाथी और हाथी घोड़ोंसे मथेहुये अन्य मनुष्योंसे वह पृथ्वी आच्छादित होगई ८१ जो लोग कि इसप्रकारसे पुकारते थे कि यह क्या है कौन है कैसा शब्द होरहा है उन सब लोगोंको प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाने पाण्डवोंके नातेदार और सृञ्जीलोग जो कि शस्त्र और कवचोंसे रहित थे उनको भी यमलोकमें भेजा ८२ । ८३ इसके पीछे उस शस्त्रसे भयभीत उछलते और भयसे पीड़ावान् निद्रासे अंधे अचेत होकर वह लोग जहां तहां गुप्त होगये ८४ और ऊरुस्तम्भ नाम रोगमें फँसे मूर्च्छा से निर्बल भयभीत कठोर शब्द करते हम पीड़ावान् हुये ८५ इसके पीछे धनुष हाथमें लिये अश्वत्थामाने भयकारी रथपर सवार होकर बाणों से अन्य मनुष्योंकोभी यमलोकमें

पहुँचाया ८६ फिर दूर से उछलते नरोत्तम आतेहुये दूसरे शूरों को भी कालरात्रि के आधीन किया ८७ उसी प्रकार रथकी नोकसे मथताहुआ वह दौड़ताथा इस के पीछे बहुत प्रकारकी बाणवृष्टियों से शत्रुओं के मनुष्योंपर वर्षा करनेलगा ८८ फिर बड़ी विचित्र सूर्य चन्द्रमा रखनेवाली ढाल और उस आकाशवर्ण खड्गके द्वारा भ्रमण करनेलगा ८९ हे राजेन्द्र! उस युद्ध में दुर्मद अश्वत्थामाने उन्होंके डेरेकोभी ऐसे छिन्नभिन्न किया जैसे कि हाथी बड़े ह्रदको करदेता है ९० हे राजन्! उस शब्द से अचेत शूरवीर उठे और निद्रा और भयसे पीड़ावान् होकर इधर उधर को दौड़े ९१ इसी प्रकार असभ्य वचन कहतेहुये अन्य लोग बड़े शब्दसे पुकारे और शस्त्र और वस्त्रोंको नहीं पाया ९२ बहुत से खुलेहुये बालवाले मनुष्योंने परस्पर नहीं पहिंचाना तब वहां उछलतेहुये कितनेही मनुष्य थककर गिरपड़े और कितनेही भ्रमण करनेलगे ९३ कितनेही लोगोंने विष्ठाको छोड़ा कितनों ही ने मूत्रको करदिया हे राजेन्द्र! हाथी घोड़े और रथोंको तोड़कर ९४ चारों ओर को दौड़े और कोई महाव्याकुलता उत्पन्न करनेवाले हुये वहां कितनेही भयभीत आदमी पृथ्वीपर सोगये ९५ उसीप्रकार उन पड़ेहुओं को हाथी और घोड़ों ने मर्दन किया हे भरतर्षभ, पुरुषोत्तम! इस प्रकार उस नाशके वर्तमान होनेपर राक्षस ९६ लोग प्रसन्न होकर बड़े शब्दसे गर्जे हे राजन्! प्रसन्नचित्त जीवों के समूहों से किया वह शब्द सर्वत्र व्याप्त होगया ९७ उस बड़े शब्दने सब दिशा और आकाशको पूर्ण किया उन्होंके पीड़ित शब्दोंको सुनकर भयभीत और बन्धनों से जुदे हाथी घोड़े ९८ डेरे में मनुष्यों को खूदते मर्दन करते चारों ओर को दौड़े वहां उन चारों ओर दौड़नेवालों के चरणों से उठीहुई धूल ने ९९ रात्रिके समय उन्होंके डेरों में दूने अन्धकारको उत्पन्न किया उस अन्धकारके उत्पन्न होनेपर मनुष्य सब ओरसे अज्ञान हुये १०० पिताओंने पुत्रोंको नहीं जाना भाइयोंने भाइयोंको नहीं जाना हाथियोंने हाथियोंको सवारोंसे रहित घोड़ोंने घोड़ोंको दबाकर १०१ घायल और टूटे अंग किया उसी प्रकार मर्दन करते परस्पर मारते हुये वह सब घायल गिरपड़े १०२ इसी प्रकार अन्योंको भी गिराकर मर्दन किया अचेत निद्रासे युक्त अन्धकार से घिरे १०३ और कालसे प्रेरित लोगोंने वहां उनको मारा इसी प्रकार द्वारपाल द्वारोंको और गुल्मलेनेवाले लोग गुल्मोंको त्याग करके १०४ भयभीत और अचेत होकर सामर्थ्य के अनुसार भागे और परस्पर नाश होगये इसीप्रकार एक ने दूसरेको नहीं पहिंचाना १०५

अपने बान्धवों को छोड़कर दिशाओं को भागते उन लोगों के मध्यमें से दैवसे व्यथित चित्त मनुष्य पुकारे हे पिता ! हे पुत्र ! १०६ इसके पीछे लोगोंने गोत्र और नामों से परस्पर पुकारा और कितनेही हाहाकार करके पृथ्वीपर गिर पड़े १०७ इस अश्वत्थामा ने युद्ध में उनको जानकर रोका और बहुतसे क्षत्रिय वारंवार घायल और अचेत १०८ और भयसे पीड़ावान् होकर डेरे से बाहर गये उन भयभीत जीवन के इच्छावान् डेरेसे निकलनेवालों को १०९ कृतवर्मा और कृपाचार्य ने द्वारस्थान पर मारा जिनके यन्त्र और कवच गिरपड़े वह खुलेहुये बाल हाथ जोड़े ११० पृथ्वीपर कम्पायमान और भयभीत थे उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ा डेरे से बाहर निकलनेवाला कोई भी मनुष्य उन दोनों के हाथसे बचकर नहीं गया १११ हे महाराज ! अश्वत्थामा प्रिय करने के अभिलाषी उन कृपाचार्य और दुर्बुद्धि कृतवर्मा ने ११२ डेरों के तीनों ओर अग्नि लगादी फिर डेरों के प्रज्वलित और प्रकाशित होने पर पिता को प्रसन्न करनेवाला अश्वत्थामा हस्तलाघवी के समान खड्ग को लेकर घूमनेलगा कितनेही आने वाले और दौड़नेवाले वीरों को ११३ । ११४ खड्ग के द्वारा प्राणों से रहित किया और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ पराक्रमी अश्वत्थामा ने कितने ही शूरवीरोंको खड्ग के द्वारा मध्य से काटकर ११५ क्रोधयुक्त ने तिलकाण्ड के समान गिराया हे भरतर्षभ! अत्यन्त घायल गर्जते गिरते मनुष्य घोड़े और हाथियों से ११६ पृथ्वी आच्छादित हुई हज़ारों मनुष्यों के मरने और गिरने पर ११७ बहुत रुण्ड उठे और उठकर गिरपड़े शस्त्र और बाज़ूबन्द रखनेवाली भुजाओं समेत शिरको काटा ११८ और हाथी की सूंड़के समान जंघाओं को और हाथ पैरों को काटा हे भरतवंशिन् ! टूटी पीठ कुक्षि और शिरवाले अन्य लोगों को गिराया ११९ उस महात्मा अश्वत्थामाने कितनेही मनुष्यों को मुखफेरनेवाला किया किसीको कानके स्थानपर और किसीको कटि स्थानपर काटा १२० किसीको कन्धे के स्थान पर घायल करके शिरको शरीर में प्रवेश किया इस प्रकार उसके घूमते और बहुत आदमियों को मारते हुये १२१ अन्धकार से वह रात्रि घोररूप महाभयानक दर्शन देखने में आई कुछ कण्ठगत प्राणवाले कुछ मृतक हज़ारों १२२ मनुष्य हाथी और घोड़ों से पृथ्वी भयानकरूप देखने में आई यक्ष राक्षसों से संयुक्त रथ घोड़े और हाथियों से भयानक रूप पृथ्वी के होनेपर १२३ क्रोधयुक्त अश्वत्थामाके हाथ से घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े कोई भाइयोंको कोई पिताओं को और पुत्रोंको पुकारता

था १२४ और कितनेही बोले कि युद्ध में क्रोधयुक्त धृतराष्ट्र के पुत्रोंनेभी वह कर्म कियाथा जो कि निर्दयी राक्षसों ने हम सोनेवालों के साथ किया है १२५ पाण्डवों के वर्तमान न होने से यह हमारा नाश किया वह अर्जुन असुर गन्धर्व यक्ष और राक्षसों से १२६ भी विजय करने के योग्य नहीं है जिसके कि रक्षक श्रीकृष्णजी हैं वह अर्जुन वेद ब्राह्मणोंका रक्षक जितेन्द्रिय और सब जीवधारियों पर कृपा करनेवालाहै १२७ वह पाण्डव अर्जुन सोनेवाले मतवाले अशस्त्र हाथ जोड़नेवाले खुले केश और भागनेवाले मनुष्योंको नहीं मारताहै १२८ निर्दयी राक्षसों ने हमारा यह नाश किया इस प्रकार विलाप करतेहुये बहुतसे मनुष्य पृथ्वीपर सोगये १२९ इसके पीछे एक मुहूर्त में ही पुकारते और गर्जतेहुये अन्य मनुष्योंका वह बहुत बड़ा शब्द बन्द होगया १३० हे राजन्! रुधिर से पृथ्वीके अच्छे प्रकार तर होनेपर वह घोर और कठिन धूलि एक क्षणमेंही दूर होगई १३१ उस क्रोधयुक्तने चेष्टा करनेवाले व्याकुल और उत्साहसे रहित हजारों मनुष्यों को ऐसे गिराया जैसे कि पशुओंको रुद्रजी गिरातेहैं १३२ उस अश्वत्थामाने पृथ्वी पर गिरेहुये मनुष्योंको परस्पर मिलकर भागनेवालोंको और कितनेही गुप्त युद्ध करनेवालों को अत्यन्त मारडाला १३३ तब अग्नि से जलनेवाले और उस अश्वत्थामाके हाथसे घायल उन शूरवीरोंने परस्पर यमलोक में पहुँचाया १३४ हे राजन! अश्वत्थामाने उस रात्रिके अर्धभाग में पाण्डवों की बड़ी सेनाको यमलोक में पहुँचाया १३५ वह रात्रि राक्षसोंकी प्रसन्नता बढ़ानेवाली मनुष्य घोड़े और हाथियों का भय उत्पन्न करनेवाली होकर महाकठिन नाशकारी हुई १३६ वहांपर पृथक्२ प्रकारके पिशाच राक्षस मनुष्यों के मांसको खाते और रुधिरको पीतेहुये दिखाई पड़े १३७ जो कि कराल पिङ्गलवर्ण पर्वताकार दांत रखनेवाले धूलिसे लिप्त जटाधारी लम्बे शङ्ख पांच पैर और बड़ा उदर रखनेवाले पीछेकी ओर उँगलियां रखनेवाले रूखे कुरूप भयानक शब्दवाले घण्टाजालसे युक्त नीलकण्ठ भय उत्पन्न करनेवाले १३८ । १३९ पुत्र स्त्रियों को साथ रखनेवाले निर्दयी दुर्दर्शन और दया से रहित थे वह राक्षसों के रूप भी अनेक प्रकार के देखने में आये १४० कोई रुधिरसमूहको पानकरके प्रसन्नचित्त होकर नृत्य करनेलगे और कहतेथे कि यह उत्तमहै यह पवित्रहै यह स्वादिष्ठहै १४१ मेजा मज्जा अस्थि और रुधिरको अच्छी रीति से भक्षण करनेवाले रुधिर से अच्छे प्रकार तृप्त हुये मांस से जीवनेवाले वह राक्षस अन्य लोगोंके मांस खानेसे तृप्त हुये १४२ इसीप्रकार नाना

प्रकारके मुख रखनेवाले कोई रुद्ररूप मांसभक्षी बड़ा उदर रखनेवाले राक्षस मज्जा को पान करके चारों ओर को दौड़े १४३ वहांपर निर्दयकर्मी भयानकरूप बड़े राक्षसों की संख्या हजारों किरोड़ों और अर्बुदोंथीं १४४ हे राजन् ! उस बड़े नाश प्रसन्नचित्त अत्यन्त तृप्त राक्षसों की यह संख्याथी और बहुतसे भूतगण भी इकट्ठे हुये उसने प्रातःकाल के समय उस डेरेसे निकलनाचाहा मनुष्यों के रुधिरों से लिप्त अश्वत्थामा का खड्ग १४५ । १४६ हाथसे चिपटाहुआ एकरूप होगया हे प्रभो ! वह अश्वत्थामा दुःखसे मिलनेवाले मार्ग में जाकर मनुष्यों के नाश में ऐसा शोभायमान हुआ १४७ जैसे कि प्रलयकाल में सब जीवों को भस्म करके अग्नि शोभायमान होताहै हे प्रभो ! वह अश्वत्थामा प्रतिज्ञा के अनुसार उस कर्म को करके १४८ पिताके दुष्प्राप्य मार्गको प्राप्त करता तापसे रहित हुआ वह नरोत्तम जैसे कि रात्रि में सोनेवाले लोगों के समान डेरे में पहुँचा १४९ उसी प्रकार मारकर डेरेके निश्शब्द होने पर डेरेसे बाहर निकला उस डेरे से निकल उन दोनों से मिलकर १५० प्रसन्न और प्रसन्न करते उस पराक्रमीने उस सब कर्मको वर्णन किया हे समर्थ ! तब उन विजय करनेवालों ने उस प्रिय वचन को उससे वर्णन किया १५१ कि हमने डेरेसे निकलनेवाले हज़ारों पाञ्चाल और सृञ्जियोंको मारा वह प्रसन्नता समेत बड़े उच्चस्वरसे पुकारे और हाथकी तालियों को बजाया १५२ सोते और अचेत सोमकों के नाश में वह रात्रि इस प्रकारकी कठिन और भयकारी हुई १५३ निस्सन्देह समयकी लौट पौट दुःख से उल्लंघन करने के योग्यहै जहां कि उस प्रकारके वीर हमारे मनुष्यों का नाश करके मारे गये १५४ धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रकी विजयमें प्रवृत्तचित्त महारथी अश्वत्थामा ने प्रथमही इस प्रकारके कठिन कर्मको कैसे नहीं किया १५५ उस नीच दुर्योधनके मरनेपर उस महात्मा अश्वत्थामाने किस हेतुसे उस कर्मको किया वह सब मुझसे कहनेको योग्यहो १५६ संजय बोले हे कुरुनन्दन ! निस्सन्देह उस अश्वत्थामा ने उन पाण्डवोंके भयसे इस कर्मको नहीं किया पाण्डव केशवजी और सात्यकी के वर्तमान न होने पर १५७ अश्वत्थामाने इस कर्म का साधन किया उनके समक्ष में कोई मनुष्य तो क्या इन्द्रभी नहीं मारसक्काथा १५८ हे राजन् ! रात्रिके समय मनुष्योंके सोने पर ऐसा वृत्तान्तहुआ फिर पाण्डवों के लोगों का कठिन नाश करके १५९ वह महारथी परस्पर मिलकर बोले कि दिष्ट्या दिष्ट्या अर्थात् मुबारक मुबारक होय इसके पीछे प्रसन्न कियाहुआ अश्वत्थामा उन दोनों से

स्नेहपूर्वक मिला १६० और प्रसन्नतासे इस उत्तम और बड़े वचनको बोला कि सब पाञ्चाल और द्रौपदीके पांचो पुत्र मारेगये १६१ शेष बचेहुये सब सोमक और मत्स्यदेशी भी मेरे हाथ से मारे गये अब हम कृत्यकृत्य हैं वहांहीं चलें विलम्ब मतकरो १६२ जो हमारा राजा जीवताहै हम उससे चलकर वर्णनकरें १६३ ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वह तीनों सब पाञ्चाल और पांचो द्रौपदी के पुत्रों को मारकर एकसाथ ही वहां गये जहांपर कि घायल दुर्योधन था १ और जाकर कुछ शेष प्राणवाले राजाको देखा इसके पीछे रथोंसे उतरकर आपके पुत्रको मध्यवर्ती किया २ हे राजेन्द्र ! उन्होंने उस टूटी जङ्घा और प्राणों से पीड़ावान् अचेत और मुखसे रुधिर डालनेवाले राजाको पृथ्वीपर देखा ३ भयानक दर्शनवाले बहुतसे हिंस्रजीवोंसे युक्त और समीपसे भक्षण करने के अभिलाषी शृगालादिक के समूहों से घिरेहुये ४ खाने के अभिलाषी भेड़िया आदिकको दुःख से रोकनेवाले पृथ्वीपर चेष्टा करनेवाले कठिन पीड़ावान् ५ रुधिर से लिप्त उस प्रकार पृथ्वीपर सोनेवाले राजा दुर्योधनको देखकर मरनेसे शेष बचे शोक से पीड़ावान् तीनों वीरों ने चारोंसे उसको व्याप्त किया ६ अर्थात् अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा, रुधिरसे लिप्त श्वासलेनेवाले तीनों महारथियों से ७ संयुक्त वह राजा ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि तीनों अग्नियोंसे वेदी शोभायमान होती है इसके पीछे वह तीनों उस दशाके अयोग्य पृथ्वीपर पड़ेहुये राजाको देखकर ८ असह्य दुःखसमेत रोदन करनेलगे फिर युद्धभूमि में सोनेवाले उस राजाके मुखसे रुधिर को अपने हाथोंसे सफा करके करुणापूर्वक विलाप किया ९ कृपाचार्य बोले कि दैव का बड़ाभार नहीं है जो यह ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी राजा दुर्योधन रुधिर से लिप्त घायल हुआ पृथ्वीपर सोताहै १० इस सुवर्ण के समान प्रकाशमान सुवर्णजटित राजाकी गदाको पृथ्वीपर सम्मुख पड़ीहुई देखो ११ यह गदा प्रत्येक युद्ध में इस शूरको त्याग नहीं करती अर्थात् स्वर्ग जानेवाले यशस्वी को नहीं त्याग करती १२ सुवर्ण से अलंकृत वीरके साथ सोनेवाली इस गदाको ऐसे देखो जैसे कि महल में सोनेवाली प्रीतिमान् भार्याको देखते हैं १३ जो यह शत्रुका तपानेवाला मूर्द्धाभिषिक्तों के आगे प्रधानहुआ वह घायल होकर पृथ्वीकी धूलिको स्पर्श करताहै समय की विपरीतता को देखो १४ जिसके

हाथसे युद्धभूमि में मारेहुये शत्रु पृथ्वीपर सोनेवाले हुये वह मृतकशत्रुवाला यह कौरवराज शत्रुओं के हाथसे माराहुआ सोताहै १५ हजारों राजाओं के समूह जिसके भय से झुकते थे वह मांसभक्षी जीवों से घिराहुआ वीर पृथ्वीपर सोता है १६ प्रथम ब्राह्मणोंने धनके निमित्त जिस ईश्वररूपकी वर्तमान होकर प्रशंसा करी अब उसको मांसभक्षी मांसखानेके लिये वर्तमानता करके प्रशंसा करते हैं १७ संजय बोले कि हे भरतर्षभ! उसके पीछे अश्वत्थामाने उस कौरवों में श्रेष्ठ सोते हुये दुर्योधन को देखकर दयासे करुणा विलाप किया १८ हे राजाओं में श्रेष्ठ! तुमको सब धनुर्धारियों में प्रथम बलदेवजी का शिष्य और युद्ध में कुबेर के समान वर्णन कियाहै १६ हे पापों से रहित! भीमसेनने कैसे तेरे छिद्रको देखा हे राजन्! उस पापात्माने तुझ बलवान् और सदैव कर्म करनेवालेको मारा २० हे महाराज! निश्चय करके इस लोक में काल बड़ा पराक्रमी है कि हम तुझको युद्धमें भीमसेनके हाथसे मराहुआ देखते हैं २१ क्रोधयुक्त अज्ञानी पापी भीमसेन ने किस प्रकार से तुझ सब धर्मों के ज्ञाताको छलसे मारा निश्चय काल दुःखसे उल्लङ्घनके योग्यहै २२ धर्मयुद्ध में बुलाकर फिर युद्धमें अधर्मके साथ भीमसेन की गदा और पराक्रमसे तेरी दोनों जङ्घा टूटीं २३ जिसने युद्धभूमि में अधर्मसे घायल शिर पांवसे मर्दनयुक्तको देखकर ध्यान नहीं किया उस क्रोधयुक्त श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर को धिक्कारहै २४ निश्चयकरके शूरवीरलोग युद्धों में जबतक पृथ्वी वर्तमानहै तबतक भीमसेन की निन्दा करेंगे क्योंकि तुम छलसे मारेगयेहो २५ हे राजन्! निश्चय करके यदुनन्दन पराक्रमी बलदेवजीने सदैव तुमसे कहा कि गदायुद्धकी विद्यामें दुर्योधन के समान कोई नहीं है २६ हे प्रभु, भरतवंशी, राजादुर्योधन! वह बलदेवजी सभाओं में तुम्हारी प्रशंसा करते हैं कि वह कौरव गदायुद्धमें मेरा शिष्यहै २७ महर्षियोंने युद्धभूमि में सम्मुख मरनेवाले क्षत्रियकी जिस गतिको उत्तम कहा तुम उसी गतिको प्राप्तहो २८ हे पुरुषोत्तम, दुर्योधन! मैं तुझको नहीं सोचताहूं तेरे पिताको और गान्धारी को सोचताहूं जिनके कि सब पुत्र मारे गये २६ हे वीर! जो कि तुझ मरनेवाले नाथसे वह अनाथ किये गये इस पृथ्वीको सोचते वह भिक्षुकरूप होकर इस पृथ्वीपर विचरेंगे ३० यादव श्रीकृष्णजीको और दुर्बुद्धि अर्जुनको भी धिक्कारहोय आपको धर्मज्ञ जानके जिन दोनोंने तुझ घायल होनेको ध्यान नहीं किया ३१ हे राजन्! वह लज्जारहित और सब पाण्डवभी कहेंगे कि हमारे हाथसे दुर्योधन किस प्रकारसे मारागया ३२

हे पुरुषोत्तम, दुर्योधन! तुम धन्यवादके योग्यहो जो तुम बहुधा धर्मसे शत्रुओंके सम्मुखहोकर युद्धभूमि में मारेगये ३३ जिसके जाति बान्धव और पुत्र मारेगये वह गान्धारी और ज्ञानचक्षु रखनेवाला अजेय धृतराष्ट्र दोनों किस गतिको पावेंगे ३४ कृतवर्मा को मुझको और महारथी कृपाचार्य को धिक्कार होय जो हम तुझ राजा को आगे करके स्वर्गको नहीं गये ३५ जो हम तुझ सब अभीष्टके देनेवाले रक्षक और संसारके प्रियकर्ता के पीछे नहीं जाते हैं हम नीच मनुष्यों को धिक्कार है ३६ हे नरोत्तम! नौकरों समेत कृपाचार्य के मेरे और मेरे पिता के रत्नजटित स्थान आपही के पराक्रमसे हुये हैं ३७ मित्र और बान्धवों समेत हम लोगोंने आपकी कृपासे बहुत दक्षिणावाले अतिउत्तम बहुत यज्ञ प्राप्तकिये ३८ हम पापी कहांसे ऐसे मार्गपर कर्मकर्ता होंगे जिस मार्ग से कि तुम सब जीवों को आगे करके गये ३९ हे राजन्! जो हम तीनों तुझ परमगति पानेवालेके पीछे नहीं जाते हैं उस हेतुसे हम भस्म होते हैं ४० स्वर्ग और अभीष्टोंसे रहित हमलोग उन राजाओंको और तेरे शुभकर्म को स्मरण करते जिस हेतु से आप के पीछे नहीं जाते हैं वह हमारा कौन कर्म होगा ४१ हे कौरवों में श्रेष्ठ, राजा दुर्योधन! निश्चय करके हम सब महादुःखी होकर इस पृथ्वीपर विचरेंगे तुझसे पृथक् होकर हमलोगों को कहां से शान्ति और सुख प्राप्त होसक्ताहै ४२ हे महाराज! तुम जाकर और महारथियों से मिलकर मेरे वचनसे वृद्धता और उत्तमता के विचार से पूजन करना ४३ हे राजन्! सब धनुषधारियों के ध्वजारूप आचार्यजी को पूजकर अब मेरे हाथ से मरेहुये धृष्टद्युम्न को वर्णन करना ४४ और बड़े महारथी राजा बाह्लीक, जयद्रथ, सोमदत्त और भूरिश्रवा से मिलना ४५ उसी प्रकार स्वर्ग में प्रथम जानेवाले अन्य २ उत्तम राजाओं को मेरे वचनसे मिलकर कुशल मङ्गल पूछना ४६ संजय बोले कि अश्वत्थामाजी उस अचेत और टूटी जंघावाले राजाको इस प्रकार कहकर और सम्मुख देखकर फिर वचन बोले ४७ हे दुर्योधन! तुम जीते हो कानों के सुखदायी वचनोंको सुनो कि पाण्डवों के सात और दुर्योधनके हम तीन शेष बचे हैं ४८ वह पांचो भाई केशवजी और सात्यकी हैं उसी प्रकार मैं कृतवर्मा और तीसरे शारद्वत कृपाचार्यजी शेष हैं ४९ हे भरतवंशिन्! द्रौपदी के सब पुत्र धृष्टद्युम्नके पुत्र सब पाञ्चाल और शेष बचेहुये सब मत्स्यदेशी मारेगये ५० बदलेके कर्मको देखो और पाण्डव असन्तान हैं रात्रि के युद्ध में मैंने उनका डेरा सब मनुष्यों समेत नाश

[illegible] ५१ हे राजन्! मैंने रात्रि में डेरे में प्रवेश करके यह पापकर्ता धृष्टद्युम्न पशु के समान मारा ५२ दुर्योधन उस चित्तके प्रियवचनको सुनकर और सचेत होकर यह वचन बोला ५३ कि मेरा वह कर्म न भीष्मजी ने न कर्णने और न आपके पिताने किया जो अब कृपाचार्य और कृतवर्मा समेत तुमने किया ५४ वह नीच सेनापति शिखण्डी समेत मारागया इस हेतु अब मैं आपको इन्द्रके समान मानताहूं ५५ कल्याणको पाओ तुम्हारा भला होय अब स्वर्ग में हमारा तुम्हारा फिर मिलाप होगा वह बड़ा साहसी कौरवराज इस प्रकार कहकर मौन हुआ ५६ और मित्रोंके दुःखको उत्पन्न करते उस वीरने अपने प्राणोंका त्याग कर पवित्र स्वर्गको गया और शरीर पृथ्वीपर रहा ५७ हे राजन्! इसप्रकार आप के पुत्र दुर्योधन ने मरणको पाया वह शूर युद्धमें प्रथम जाकर फिर शत्रुओं के हाथसे मारागया ५८ इसी प्रकार उससे मिलेहुये वहलोग फिर मिलकर राजा को वारंवार देखते अपने अपने रथोंपर सवारहुये ५९ इसप्रकार अश्वत्थामाके करुणा-रूप वचनों को सुनकर शोकसे पीड़ित वह तीनों प्रातःकाल के समय नगरकी ओर शीघ्रतासे चले ६० हे राजन्! आपके कुमन्त्र होनेपर इस प्रकार कौरव और पाण्डवों का यह घोर और भयकारी मारनेवाला नाश वर्तमान हुआ ६१ हे निष्पाप! शोक से पीड़ित आपके पुत्र के स्वर्ग जानेपर अब व्यासऋषिका दिया हुआ वह दिव्यदर्शन और दिव्यनेत्र विनाशमान हुये ६२ वैशम्पायन बोले कि तब वह राजा धृतराष्ट्र पुत्र के मरण को सुनकर लम्बी और उष्ण श्वासों को लेकर महाचिन्तायुक्त हुआ ६३॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिदुर्योधनप्राणत्यागेनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि उस रात्रिके व्यतीत होनेपर धृष्टद्युम्नके सारथी ने युद्धमें होनेवाले नाशको धर्मराज के सम्मुख वर्णन किया १ सारथी बोला हे राजन्! रात्रि के समय अपने डेरे में सोनेवाले विश्वासयुक्त अचेत सोतेहुये द्रौपदी के पुत्र द्रुपद के पुत्रों समेत मारे गये २ निर्दयी कृतवर्मा गौतम कृपाचार्य और पापी अश्वत्थामाके हाथसे रात्रिके समय आपका डेरा नाश हुआ ३ प्रास शक्ति और फरसों से हज़ारों मनुष्य घोड़े और हाथियोंको मारनेवाले इन तीनों से आपकी सेना मारीगई ४ हे भरतवंशिन्! फरसों से कटतेहुये बड़े वनकी समान आपकी सेनाके बड़े शब्द सुनेगये ५ हे बड़ेज्ञानिन्! केवल मैंही अकेला उस सेनामेंसे बचा

हूं हे धर्मात्मन्! मैं उस दुष्ट कृतवर्मा से किसी प्रकार करके बचगया ६ कुन्ती का पुत्र अजेय युधिष्ठिर उस दुःख शोक के वचनको सुनकर पुत्रशोक से युक्त होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सात्यकी भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव ने उस गिरते हुये राजाको पकड़लिया ७ । ८ फिर सचेत होकर शत्रुओंका विजय करनेवाला युधिष्ठिर शोकसे व्याकुल दुःखसे पीड़ावान् के समान विलाप करने लगा ६ अर्थों की गति दुःख से जानने के योग्यहै जो दिव्यचक्षु रखनेवाले हैं उनको भी अन्य लोग पराजित होकर विजय करते हैं विजय करनेवाले हम लोग विजय किये गये १० भाई समान अवस्थावाले पिता पुत्र मित्रवर्ग बान्धव मन्त्री और पोतों समेत सबको मारकर भी हम दूसरों से विजय कियेगये ११ निश्चय करके अनर्थ अर्थरूप है उसी प्रकार अनर्थ अर्थको दिखलानेवाला है यह विजय पराजयरूपहै इस हेतुसे विजयही पराजय है १२ जो दुर्बुद्धि विजयकरके पीछे आपत्तिमें बँधेहुये के समान दुःखी होताहै वह किस प्रकार विजयको माने इस हेतु से शत्रुके हाथसे अत्यन्त पराजित है १३ मित्रों के नाशसे विजय का पाप जिनके निमित्त होय पराजितहुये चतुर सावधान मनुष्यों करके विजय से शोभायमान आदमी विजय कियेगये १४ युद्ध में कर्णिनालीक नाम बाण के समान डाढ़रखनेवाले खड्गकी समान जिह्वा धनुष के समान चौड़ामुख रुद्ररूप प्रत्यञ्चा और तलके समान शब्दवाले १५ क्रोधयुक्त युद्धों में मुख न फेरनेवाले नरोत्तम कर्ण के हाथ से जो बचे वह सब शूरवीर अचेततासे मारेगये १६ रथरूप ह्रद बाणवृष्टिरूप तरङ्गवाले वृक्षोंसे पूर्ण घोड़े और सवारियोंसे युक्त शक्ति वा दुधारे खड्गरूप मछली ध्वजारूप सर्प और नक्र धनुषरूप भँवर बड़े बाणरूपी फण रखनेवाले १७युद्धरूप चन्द्रोदय तीव्रतारूप किनारेवाले ज्यातल और नेमियोंके शब्दवाले द्रोणाचार्यरूपी समुद्रको जिन राजकुमारोंने नानाप्रकार के शस्त्ररूपी नौकाओंके द्वारा तरा वह प्रमादसे मारेगये १८ इस जीवलोकमें मनुष्यों के मरणका कारण प्रमत्ततासे अधिक कोई नहींहै प्रमत्त अर्थात् अचेत मनुष्यको धनादिक अर्थ चारों ओर से त्याग करते हैं और निर्धनतारूप अनर्थ प्रवेश होते हैं १६ उत्तम ध्वजा की नोक सूरत उँचाई रखनेवाली बाणरूप ज्वालावाली क्रोधरूप वायुकी तीव्रता रखनेवाली बड़े धनुषकी ज्यातल और नेमी के शब्दसे युक्त कवच और नानाप्रकार के शस्त्ररूप हवन रखनेवाली बड़ी सेनारूप दावानलसे संयुक्त खड़ेहुये शस्त्ररूप कठिन तीव्रतावाली भीष्मरूप अग्नि की भस्म ताको जिन

राजकुमारोंने बड़े युद्धमें सहा वह सब अचेततासे मारेगये २०।२१ प्रमत्त मनुष्य को विद्या तप धन और उत्तम कीर्ति नहीं प्राप्त होसक्ती है सावधानी से सब शत्रुओं को मारकर सुखसे वृद्धि पानेवाले महाइन्द्रको देखो २२ इन्द्रके समान राजाओं के पुत्र पौत्रादिकों को अत्यन्त अचेततासे ऐसे मराहुआ देखो जैसे कि धनकी वृद्धिवाला व्यापारी समुद्रको तरकर छोटी नदी में डूबजाय २३ क्रोधयुक्त पुरुषों ने जो सोते वीरोंको मारा वह निस्सन्देह स्वर्ग को गये मैं द्रौपदी को सोचता हूं अब वह पतिव्रता निर्भय होकर किस प्रकारसे शोचरूपी समुद्रमें डूबगई २४ भाई बेटे और वृद्ध पिता राजा पाञ्चाल को मृतक सुनकर निश्चय करके विमोहित होकर पृथ्वीपर गिरेगी शोकसे कृशांग यष्टीशरीर वह द्रौपदी शुष्क होरही है २५ सुखोंके योग्य वह द्रौपदी पुत्र और भाइयों के मरने से व्याकुल अग्निसे जलती हुई के समान उस शोकजन्य दुःखसमुद्र से पार न होकर कैसी दशावाली होगी २६ इस प्रकार विलाप करता वह कौरवराज युधिष्ठिर नकुल से बोला जाओ उस मन्दभागिनी राजपुत्री को उसके मातृपक्षियों समेत यहां लाओ २७ नकुल धर्मरूप राजाके वचनको धर्म से अङ्गीकार करके रथकी सवारी से देवी द्रौपदी के उस स्थान को गया जहांपर राजा पाञ्चाल की भी स्त्रियां थीं २८ नकुलको भेजकर शोकसे पीड़ावान् रोदन करते युधिष्ठिर उन सुहृदों समेत पुत्रोंकी युद्धभूमिको गया जो कि भूतगणों से युक्त था २९ उसने उस कल्याणरूप और उग्ररूप युद्धभूमि में प्रवेश करके पुत्र सुहृद् और मित्रों को पृथ्वीपर सोते रुधिर से लिप्त अंग टूटे शरीर और टूटे शिर देखा ३० वह धर्मधारियों में और कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर उनको देखकर अत्यन्त पीड़ावान् सूरत उच्चस्वर से पुकारा और साथियों समेत अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे राजन्, जनमेजय! वह युधिष्ठिर युद्धमें मरेहुये उन पुत्र पौत्र और मित्रों को देखकर बड़े दुःखसे पूर्णचित्त हुआ १ इसके पीछे बेटे पोते भाई और अपने मनुष्योंका स्मरण करतेहुये उस महात्माको बड़ाशोक उत्पन्न हुआ २ तब अत्यन्त व्याकुल सुहृदोंने उस अश्रुओंसे पूर्ण कम्पायमान और अचेत राजाको विश्वास कराया ३ उसके पीछे समर्थ नकुल बड़ी पीड़ित द्रौपदीसमेत

सूर्यके समान प्रकाशमान रथकी सवारीसे एक क्षणमें सम्मुख आया ४ तब उपप्लवी स्थानपर वर्तमान वह द्रौपदी सब पुत्रों के अप्रिय नाशको सुनकर बड़ी पीड़ित हुई ५ हवासे चलायमान केलेके समान कंपायमान वह द्रौपदी राजा को पाकर शोकसे शोकमें पीड़ित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ६ उस प्रफुल्लित पद्म-पलाश के समान नेत्रवाली द्रौपदीका मुख अकस्मात् शोक से ऐसे पीड़ित हुआ जैसे कि अँधेरे से ढकाहुआ सूर्य होताहै ७ इसके पीछे क्रोधयुक्त सत्यपरा-क्रमी भीमसेनने दौड़कर उस गिरीहुई द्रौपदीको पकड़लिया ८ भीमसेन से विश्वासित उस तेजस्विनी रानी द्रौपदीने भाइयोंसमेत युधिष्ठिरसे यह वचन कहा९ कि हे राजन्! तुम निश्चय करके क्षत्रियधर्मसे अपने पुत्रोंको यमराजके लिये देकर प्रारब्धसे इस सम्पूर्ण पृथ्वीको भोगोगे १० हे राजन्! तुम प्रारब्धसे कुशलहो और सब पृथ्वी को पाकर मतवाले हाथीके समान चलनेवाले अभिमन्यु को स्मरण नहीं करोगे ११ तुम क्षत्रियधर्मसे गिरायेहुये शूरपुत्रों को सुनकर प्रारब्ध से मुझ समेत उनको उपप्लवी स्थान पर स्मरण नहीं करो गे १२ हे राजन्! पापकर्मी अश्वत्थामाके हाथसे सोनेवालों के मारने से शोक मुझको ऐसे त-पाताहै जैसे कि स्थानको अग्नि संतप्त करताहै १३ अब जो युद्धमें तेरे हाथ से उस पापकर्मी अश्वत्थामाका उसके साथियों समेत जीवनहरण नहीं किया जाताहै तो इसी स्थानपर शरीर त्यागने के निमित्त आसन बिछाकर बैठूंगी हे पाण्डव! जो अश्वत्थामा इस दुष्टकर्म के फलको नहीं पाताहै तो निश्चय इसी मेरी बातको जानो १४ । १५ इसके पीछे वह द्रुपदकी पुत्री यशवन्ती कृष्णा धर्मराज युधिष्ठिर से ऐसा कहकर आसनपर बैठगई १६ उस धर्मात्मा राजर्षि पाण्डव ने उस सुन्दर दर्शन प्यारी पटरानी द्रौपदी को शरीर त्यागने के नि-मित्त आसनपर बैठीहुई देखकर यह उत्तर दिया १७ कि धर्मोंकी जाननेवाली शुभ द्रौपदी वह तेरे पुत्र और भाई धर्मरूप मरणको प्राप्तहुये उनका शोच करना तुमको योग्य नहीं है १८ हे कल्याणि! वह अश्वत्थामा यहां से दुर्गम्य दूर वनको गया है शोभने! तुम युद्ध में उसके मरने को कैसे जानोगी १९ द्रौपदी बोली कि मैंने शरीर के साथ उत्पन्न होनेवाला मणि अश्वत्थामाके शिरपर सुना है युद्ध में उस पापीको मारकर लायेहुये उस मणिको देखूंगी २० हे राजन्! उसको आपके शिरपर धारण करके जीऊंगी यह मेरा मत है वह सुन्दर दर्शन द्रौपदी राजासे इस प्रकार कहकर २१ फिर भीमसेनके पास आकर उत्तम वचन

बोली हे समर्थ ! तुम क्षत्रियधर्म को स्मरण करतेहुये मेरी रक्षा करनेके योग्य हो २२ उस पापकर्मी को ऐसे मारो जैसे कि इन्द्र ने शम्बर को मारा था यहां कोई दूसरा पुरुष आपके पराक्रम के समान नहीं है २३ सब लोकों में सुना गया है कि जिस प्रकार बारणावत नगरके मध्यमें महाआपत्ति में तुम पाण्डवों के रक्षकहुये २४ उसी प्रकार हिडम्ब राक्षसके देखने में तुम गतिहुये इसी प्रकार विराटनगरमें कीचक के भयसे पीड़ित मुझ को भी तुमने दुःखसे ऐसे छुड़ाया २५ जैसे कि पुलोमकी पुत्री इन्द्राणी को दुःख से छुटाया था हे पाण्डव ! जैसे कि पूर्व समयमें तुमने इन कर्मोंको किया है २६ उसी प्रकार उस मारनेवाले अपने शत्रु अश्वत्थामाको मारकर सुखी हो उसके विलाप कियेहुये बहुत प्रकारके दुःख को सुनकर २७ बड़े बलवान् पाण्डव भीमसेन ने नहीं सहा और स्वर्णमयी बड़े उत्तम रथपर सवार हुआ २८ बाण प्रत्यञ्चासमेत सुन्दर जड़ाऊ धनुषको लेकर नकुलको सारथी करके अश्वत्थामाके मारने में प्रवृत्त होनेवालेने २९ बाणसमेत धनुषको टंकारकर शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया हे पुरुषोत्तम ! वह सधेहुये वायुके समान वेगवान् ३० शीघ्रगामी हरिजात के घोड़े तीव्रता से जल्द चलदिये वह अजेय महापराक्रमी भीमसेन अपने डेरे से रथके चिह्न को लेकर तीव्रता से अश्वत्थामाके रथकी ओर शीघ्र चला ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि उस अजेय भीमसेन के प्रस्थान करनेपर यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर से बोले १ हे पाण्डव ! पुत्रके शोकसे पूर्ण यह तेरा भाई युद्धमें अश्वत्थामा के मारने का अभिलाषी अकेलाही दौड़ता है २ हे भरतर्षभ ! यह भीमसेन सब भाइयों से अधिक तुमको प्यारा है अब तुम उस आपत्ति में फँसे हुयेकी क्यों नहीं रक्षा करते हो ३ मेरी बड़ी गुप्त बातको सुनो और सुनकर फिर कर्म को करो जब शत्रुओं के पुरके विजय करनेवाले द्रोणाचार्य ने जो उस ब्रह्मशरनाम अस्त्रका पुत्रको उपदेश किया जो पृथ्वी को भी भस्म करसक्ता है ४ । ५ सब धनुषधारियों के ध्वजारूप महात्मा महाभाग प्रसन्नचित्त आचार्यजी ने वह अस्त्र अर्जुनको बतलाया क्रोधयुक्त अकेले पुत्रने भी इस अस्त्र को चाहा ६ जो कि उससे अत्यन्त प्रसन्नचित्त नहीं थे इस हेतु से उन्होंने उस दुर्बुद्धि पुत्रकी चपलता जानकर सिखला तो दिया ७ परन्तु

सर्वधर्मज्ञ आचार्यजी ने उस पुत्रको शिक्षापूर्वक आज्ञा दी कि हे पुत्र ! युद्ध में बड़ी आपत्ति में फँसनेपर भी तुझको भी ८ यह अस्त्र छोड़ने के योग्य नहीं है और विशेषकर मनुष्योंके ऊपर तो कभी न छोड़ना यह कहकर फिर पुत्रसे यह वचन कहा ९ कि तुम कभी सत्पुरुषों के मार्ग में नियत नहीं होगे हे पुरुषोत्तम, युधिष्ठिर ! तब दुष्ट अन्तःकरणवाला पिताके अप्रिय वचन को जानकर सब कल्याणों से निराश होकर शोक से पृथ्वीपर घूमा द्वारका में आकर यादवोंसे परमपूजित होकर बसा वह एक समय द्वारकाके सम्मुख समुद्र के पास निवास करता हुआ अकेला ही हँसकर मुझ से बोला १० । ११ कि हे श्रीकृष्णजी ! बड़े तपको करते भरतवंशियोंके आचार्य सत्यपराक्रमी मेरे पिताने जो उस ब्रह्मशरनाम अस्त्रको जो कि देवता और गन्धर्वोंसे पूजितहै अगस्त्यजी से पाया १३ । १४ हे श्रीकृष्णजी ! अब वह वैसेही मेरे भी पास है जैसे कि पिताके पास है हे यादवों में श्रेष्ठ ! तुम उस दिव्य अस्त्रको मुझसे लेकर १५ मुझको भी वह चक्र अस्त्र दो जो कि युद्धमें शत्रुओंका मारनेवाला है हे भरतर्षभ, राजा युधिष्ठिर ! वह हाथ जोड़कर बड़े उपायपूर्वक मुझसे अस्त्र मांगनेवाला हुआ तब मुझ प्रसन्नचित्त ने उससे कहा कि देवता, दानव, गन्धर्व, मनुष्य, पक्षी, सर्प १६ । १७ यह सब मिलकर भी मेरे पराक्रमके सोलहवें भाग के समान नहीं हैं यह धनुष है, यह शक्ति है, यह चक्र है, यह गदा है १८ इनमें से जिस अस्त्र को तुम मुझ से चाहते हो उसको मैं तुमको देता हूं जिसको तुम उठासके हो और युद्ध में चला भी सके हो १९ आप जिस अस्त्रको मुझे देना चाहते हो उसके दिये ही इनमें से जो चाहो सो लो तब मुझ से ईर्षा करनेवाले उस महाभाग ने सुन्दर नाभि और हजार आरा रखनेवाले वज्रनाम लोहमयी चक्र को मुझसे मांगा तब मैंने भी उसी समय कहदिया कि चक्रको लो २०।२१ तब उसने उठकर अकस्मात् बायें हाथ से चक्रको पकड़लिया परन्तु उसको स्थानपर से हटाने को समर्थ नहीं हुआ २२ फिर दक्षिण हाथ से भी उसको पकड़ना प्रारम्भ किया इसके पीछे अनेक उपायोंसे भी उसको उठा न सका २३ फिर बड़ा दुःखीचित्त अश्वत्थामा जब कि सब पराक्रम करने से भी उसके उठाने और हटाने को भी समर्थ नहीं हुआ २४ और वह उपायों को करके थककर अलग होगया तब मैंने उस अभिलाष से चित्त उठानेवाले विमन २५ और व्याकुल अश्वत्थामा से यह वचन कहा कि जिस गांडीव धनुष, श्वेत घोड़े

और हनुमान्जीकी ध्वजा रखनेवाले अर्जुनने देवता और मनुष्योंके मध्यमें बड़े प्रमाणको पाया और जिसने पूर्व समय में साक्षात् प्रधान देवताओं के ईश्वर शितिकण्ठ उमापति २६ । २७ शंकरजी को द्वन्द्वनाम युद्ध में प्रसन्न किया उससे अधिक इस पृथ्वीपर मेरा दूसरा कोई प्रिय नहीं है २८ स्त्री और पुत्रादिक भी उसको देनेके अयोग्य नहीं हैं हे ब्राह्मण ! उस सुगमकर्मी मेरे मित्र अर्जुन ने भी २९ प्रथम मुझसे यह वचन नहीं कहा जो तुमने मुझसे कहा है मैंने हिमालय की कुक्षिमें नियत होकर बारह वर्ष बड़े घोर ब्रह्मचर्य को करके तपके द्वारा जिसको प्राप्तकिया और जो सदैव व्रत करनेवाली रुक्मिणी में उत्पन्न हुआ ३०।३१ तेजस्वी सनत्कुमार प्रद्युम्न नाम मेरा पुत्र है उसने भी इस बड़े दिव्य और युद्ध में अनुपम चक्र की इच्छा नहीं की ३२ हे अज्ञ ! जिसको तैंने मांगा है उसको कभी हमारे बड़े बलदेवजी ने भी नहीं मांगा था जो तैंने मांगा है वह गद और साम्बने भी नहीं मांगा और अन्य वृष्णी अन्धकवंशी द्वारकावासी महारथियोंने भी ३३ पूर्व में इसको कभी नहीं मांगा तुम भरतवंशियों के आचार्य के पुत्रहो और सब यादवों से प्रशंसनीय हो ३४ हे रथियों में श्रेष्ठ, तात ! तुम चक्रसे किसके साथ युद्ध करोगे मेरे इस वचनको सुनकर अश्वत्थामा ने मुझको यह उत्तर दिया ३५ कि हे श्रीकृष्ण ! मैं आप का पूजन करके आपही के साथ लड़ूंगा मैंने देवता और दानवों से पूजित आपके चक्रकी याचना करी है ३६ और हे समर्थ ! मैं आपसे सत्य २ कहता हूं कि मैं अजेय हूं हे केशवजी ! आपसे दुष्प्राप्य मनोरथको न पाकर चला जाऊंगा ३७ । ३८ हे गोविन्दजी ! आप मुझको कल्याण के साथ नमस्कार करो तुझ उत्तम और अनुपम चक्रवाले ने यह भयानकरूपों का भी भयानक चक्र धारण किया है ३९ पृथ्वीपर दूसरा इसको नहीं पासक्ता है अश्वत्थामा इस प्रकार मुझ से कहकर और समयपर मुझ से घोड़े, धन ४० और अनेक प्रकार के रत्नों को लेकर हस्तिनापुर को चलागया वह क्रोधयुक्त दुर्बुद्धि चालाक और निर्दयी है और ब्रह्मशर अस्त्र को जानता है भीमसेन उससे रक्षा के योग्य है ४१ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणियुधिष्ठिरकृष्णसंवादेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि युद्धकर्ताओं में श्रेष्ठ और सब यादवों के प्रसन्न करने

वाले श्रीकृष्णजी इस प्रकार कहकर उस उत्तम रथपर सवार हुये जो कि उत्तम अस्त्र शस्त्रों से युक्त स्वर्णमयी मालाधारी काम्बोजदेशी घोड़ों से जुड़ाहुआ था और जिसके उत्तम धुर उदयहुये सूर्यके स्वरूप थे १। २ शैब्यनाम घोड़ेने दक्षिण चक्र को उठाया और सुग्रीवनाम घोड़ा बाईं ओर हुआ और उस रथके पार्श्ववाहक मेघपुष्प वलाहकनाम घोड़े हुये ३ विश्वकर्माकी बनाई हुई रत्न और धातु से अलंकृत दिव्य और उन्नत यष्टी रथकी ध्वजापर माया के समान दिखाई पड़ी ४ प्रकाश मण्डलरूप किरण रखनेवाले गरुड़जी उस ध्वजामें नियत हुये उस सत्यवक्ता की ध्वजा गरुड़रूप दिखाई पड़ी ५ उसके पीछे सब धनुषधारियों की ध्वजा केशवजी सत्यकर्मी अर्जुन और कौरवराज युधिष्ठिर रथपर सवार हुये ६ समीप वर्तमान दोनों महात्माओं ने रथपर सवार शार्ङ्गधनुषधारी श्रीकृष्णजी को ऐसे शोभायमान किया जैसे कि दोनों अश्विनीकुमारोंने इन्द्र को शोभित किया था ७ श्रीकृष्णजी ने उन दोनों को उस पूजित रथपर बैठा कर शीघ्रगामीपने से संयुक्त उत्तम घोड़ों को चाबुक से ताड़ित किया ८ पाण्डव और यादवोत्तम श्रीकृष्णजी से सवारी युक्त उत्तम रथको वह घोड़े लेकर अकस्मात् उड़े ९ श्रीकृष्णजी को लेचलनेवाले शीघ्रगामी घोड़ों के ऐसे बड़े शब्द हुये जैसे कि उड़तेहुये पक्षियों के शब्द होते हैं १० हे भरतर्षभ ! उन वेगवान् नरोत्तमोंने बड़े धनुषधारी भीमसेन की ओर चलकर क्षणभर में ही उसको पाया ११ वह महारथी मिलकर भी उस क्रोधसे प्रकाशित और शत्रुसे युद्ध करने को सन्नद्ध भीमसेन के रोकने को समर्थ नहीं हुये १२ वह भीमसेन उन दृढ़ धनुषधारी श्रीमान् भाइयों और श्रीकृष्णजी के देखतेहुये अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा श्रीगंगाजी के तटपर गये १३ जहांपर कि महात्माओं के पुत्रों के मारनेवाले अश्वत्थामा सुनेगये थे उस भीमसेनने जलके समीप महात्मा यशवान् १४ व्यासजीको ऋषियों समेत बैठाहुआ देखा और उस निर्दयकर्मी घृत से मर्दित शरीर बड़े चीरधारी १५ धूलसे लिप्त शरीर अश्वत्थामाको भी समीप बैठाहुआ देखा वह कुन्तीका पुत्र महाबाहु भीमसेन धनुषबाणको लेकर उसके सम्मुख दौड़ा १६ और तिष्ठ २ वचन कहा वह अश्वत्थामा धनुषधारी भीमसेन को देखकर १७ और पीछे श्रीकृष्णजी को रथपर नियत दोनों भाइयों को देखकर चित से पीड़ितहुये और मृत्युको वर्तमान जाना १८ उस महासाहसीने उस दिव्य महाउत्तम अस्त्रको स्मरण किया और बायें हाथसे एक सींक

को पकड़ा १९ और उस आपत्ति को प्राप्त होकर दिव्य अस्त्रको पढ़ा और दिव्य शस्त्र धारण करनेवाले उन शूरों को न सहकर उन अश्वत्थामाजी ने २० क्रोध से भयकारी वचन को कहा कि यह अस्त्र मैं पाण्डवोंके नाशके निमित्त छोड़ता हूं हे राजेन्द्र ! प्रतापवान् अश्वत्थामा ने यह कहकर २१ सब लोक के बड़े मोह के निमित्त उस अस्त्रको छोड़ा इसके पीछे उस सींकमें काल और यमराजके समान तीनों लोकों की भस्म करनेवाली अग्नि उत्पन्न हुई २२ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिऐषिकेब्रह्मशिरोस्त्रत्यागेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि महाबाहु श्रीकृष्णजीने प्रथमहीसे उस अश्वत्थामाके उस मनके विचारको जानकर अर्जुन से कहा १ कि हे पाण्डव ! अर्जुन जो द्रोणाचार्य का उपदेश किया हुआ वह दिव्य अस्त्र वर्तमान है उसका यह समय वर्तमान हुआ है २ हे भरतवंशिन् ! तुम भी इस युद्धभूमि में अपनी और अपने भाइयों की रक्षाके लिये अस्त्रके रोकनेवाले उस अस्त्रको छोड़ो ३ इसके पीछे शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला और केशवजी से इसप्रकार कहाहुआ पाण्डव अर्जुन धनुषबाण को लेकर शीघ्रही रथसे उतरा ४ वह शत्रुओंका तपानेवाला प्रथम गुरुपुत्र के लिये फिर अपने और सब भाइयों के अर्थ भलाहोय यह कह कर ५ देवता और सब गुरुओंके अर्थ नमस्कार करके शिवजीको ध्यान करतेहुये अर्जुनने उस अस्त्रको छोड़ा और कहा कि अस्त्र से अस्त्र शान्त होय ६ इसके पीछे अकस्मात् गाण्डीव धनुषधारी से छोड़ा हुआ और प्रलयकालकी अग्नि के समान वह प्रकाशित अस्त्र ज्वलितरूप हुआ ७ और उसी प्रकार बड़े तेजस्वी अश्वत्थामाका भी वह अस्त्र ज्वलितरूप हुआ जो कि तेजमण्डलसे युक्त बड़ी ज्वाला रखनेवाला था ८ परस्पर वायुके संघट्टनों के बड़े शब्दहुये हजारों उल्कापात हुये और सब जीवोंको बड़ाभय उत्पन्न हुआ ९ शब्दायमान आकाश ज्वालामालाओं से बहुत व्याप्त हुआ पर्वत, वन और वृक्षों समेत पृथ्वी कम्पायमान हुई १० इस प्रकार वह दोनों प्रकाश लोकों को तपातेहुये नियतहुये तब वहां उन दोनों महर्षियों ने एकसाथ दर्शन दिया ११ सब जीवों के आत्मारूप नारदजी और भरतवंशियों के पितामह व्यासजी यह दोनों महात्मा वीर अश्वत्थामा और अर्जुन के शान्त करनेको उपस्थितहुये १२ सब धर्मों के ज्ञाता और सब जीवों के हितकारी बड़े तेजस्वी वह दोनों मुनि बड़े प्रकाशित उन

दोनों अस्त्रोंके मध्यमें नियतहुये १३ उस समय वह अजेय यशवान् और अग्नि के समान प्रकाशित दोनों उत्तम ऋषि वहां जाकर नियतहुये १४ वह जीवमात्रोंसे अजेय देवता और दानवों के अंगीकृत दोनों ऋषिलोकों की वृद्धिकी इच्छा से अस्त्रोंका तेज शान्त करतेहुये मध्य में नियतहुये १५ और बोले कि नानाप्रकार अस्त्रोंके ज्ञाता सब महारथी जो पूर्व समय में भी उत्पन्नहुये उन्होंने भी इस अस्त्र को कभी किसी मनुष्य पर नहीं छोड़ा हे वीरलोगो ! तुमने इस बड़े विनाशकारी साहसको क्यों किया १६ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिऐषिकेऽर्जुनास्त्रत्यागेचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे नरोत्तम ! शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने अग्निके समान प्रकाशित उन ऋषियों को देखकर दिव्य बाण को संहार करलिया अर्थात् लौटा लिया १ हे भरतर्षभ ! तब वह अर्जुन हाथ जोड़कर उन ऋषियों से बोला कि मैंने यह समझकर अस्त्रको प्रकट किया है कि यह अस्त्र इस अस्त्र से शांतहोय २ इस उत्तम अस्त्रके लौट आने पर निश्चय करके पापकर्मी अश्वत्थामा इस तेज अस्त्रसे हम सबको भस्म करेगा ३ यहांपर सदैव हमारा और लोकों का जो हित है उसको देवतारूप आपलोग उसी प्रकारसे अङ्गीकार करनेके योग्य हो ४ अर्जुनने इस प्रकार से फिर अस्त्रको लौटाया युद्ध में देवताओं से भी उसका फिर लौटाना कठिन है ५ पाण्डव अर्जुन के सिवाय युद्धमें साक्षात् इन्द्र भी उस छोड़ेहुये परम अस्त्र के लौटाने को समर्थ नहीं है ६ ब्रह्मचारीका व्रत रखनेवाले पुरुषके सिवाय ब्रह्मतेजसे उत्पन्न छोड़ाहुआ अस्त्र अजितेन्द्रिय से कभी लौटानेके योग्य नहीं है ७ ब्रह्मचर्य न करनेवाला जो पुरुष अस्त्र को छोड़कर फिर लौटाता है वह अस्त्र साथियों समेत उस छोड़नेवाले के मस्तकको काटताहै ८ ब्रह्मचारी व्रत करनेवाले और बड़े दुःखसे पीड़ावान् अर्जुन ने भी उस दुष्ट आचार को पाकर उस अस्त्रको नहीं छोड़ा ९ पाण्डव अर्जुन सच्चा व्रत करनेवाला, शूर, ब्रह्मचारी और गुरुभक्त था इस हेतुसे उसने उस अस्त्रको फिर लौटालिया १० इसके पीछे अश्वत्थामा भी अपने आगे नियतहुये दोनों ऋषियोंको देखकर अपने बलसे उस घोर अस्त्रके फिर लौटाने को समर्थ नहीं हुआ ११ युद्ध में उस परम अस्त्रके लौटाने में असमर्थ बड़े दुःखितचित्त अश्वत्थामाने व्यासजी से कहा १२ कि हे मुने ! बड़ी आपत्तिसे पीड़ावान् और प्राणोंकी रक्षाका

अभिलाषी होकर मैंने भीमसेनके भयसे उस अस्त्र को छोड़ा १३ हे भगवन्! दुर्योधन के मारनेके अभिलाषी और दुराचारी इस भीमसेनने युद्धमें अधर्म किया १४ हे ब्राह्मण! इस हेतुसे मुझ अज्ञानी ने इस अस्त्रको छोड़ा है अब फिर उसके लौटानेको उत्साह नहीं करता हूं १५ हे मुने! मैंने पाण्डवों के नाशके अर्थ ब्रह्मतेजको धारण करके इस कठिनता से सहनेके योग्य अस्त्रको छोड़ा १६ यह अस्त्र पाण्डवों के नाशके लिये बहुत है अब यह अस्त्र सब पाण्डवों को जीवनसे रहित करेगा १७ हे ब्राह्मण! क्रोधसे पूर्णचित्त और युद्धमें पाण्डवों के मारने के अभिलाषी मुझ अस्त्र छोड़नेवाले ने यह पाप किया १८ व्यासजी बोले हे तात! बुद्धिमान् पाण्डव अर्जुनने युद्धमें जो ब्रह्मशरनाम अस्त्र छोड़ा वह क्रोधसे छोड़ा तेरे नाशकेलिये नहीं छोड़ा १९ युद्धमें तेरे अस्त्रको अपने अस्त्र से शान्त करनेके अभिलाषी अर्जुनने यह अस्त्र छोड़कर भी फिर लौटालिया २० यह महाबाहु अर्जुन तेरे पिता के उपदेश से ब्रह्मअस्त्र को भी पाकर क्षत्रियधर्म से कम्पायमान नहीं हुआ २१ इस प्रकार धैर्यवान् साधु सब अस्त्रों के ज्ञाता सत्पुरुष इस अर्जुन का वध भाई बंधुओं समेत किस लिये तुम करना चाहते हो २२ जिस देश में ब्रह्मशर अस्त्र परम अस्त्रके द्वारा दूर किया जाताहै उस देशमें बारह वर्षतक इन्द्र जलको नहीं बरसाताहै अर्थात् बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़ता है २३ महाबाहु समर्थ पाण्डव संसारके जीवमात्रों की वृद्धि की अभिलाषासे इसी निमित्त उस अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूर नहीं करता २४ पाण्डव देश और तुम भी सदैव रक्षाके योग्यहो हे महाबाहो! इस हेतुसे तुम इस दिव्य अस्त्रको लौटाओ २५ तेरा क्रोध दूर होय और पाण्डवोंकी कुशल होय यह राजऋषि पाण्डव अधर्मसे विजय करना नहीं चाहता है २६ अब तुम उस मणिको देदो जो तेरे शिरपर नियत है पाण्डव उसको लेकर तुझको प्राणदान देंगे २७ अश्वत्थामा बोले कि पाण्डवों ने जो रत्न और कौरवोंने जो अन्य धन इस लोक में प्राप्त किया उन्हों से यह मेरा मणि पृथक् है २८ जिसको बांधकर किसी दशा में भी शस्त्र रोग और क्षुधासम्बन्धी कोई भय नहीं होता है इसके बांधनेवाले को देवता, दानव और सर्पोंसे भी भय नहीं है २९ न राक्षसों के समूहों का और न चोरों का भय है इस प्रकार से यह उत्तम मणि है और किसी दशामें भी मुझसे त्याग करने के योग्य नहीं है ३० और जो भगवान् ने मुझ को आज्ञा करी है वह शीघ्रही मुझको कर्तव्य है यह मणि है यह मैं हूं परन्तु

यह सींक ३१ पाण्डवों के गर्भोंपर गिरेगी क्योंकि यह उत्तम अस्त्र सफल है हे भगवन् ! इस प्रकट होनेवाले अस्त्रको मैं फिर नहीं लौटा सक्ता हूं ३२ मैं इस हेतु से इस अस्त्र को पाण्डवों के गर्भों पर छोड़ता हूं हे महामुने ! आपके वचनोंको अवश्य करूंगा ३३ व्यासजी बोले हे निष्पाप ! इसी प्रकार करो तुम को दूसरी बुद्धि न करना चाहिये इस अस्त्रको पाण्डवों के गर्भोंपर छोड़कर युद्धसे निवृत्त हो ३४ वैशम्पायन बोले इसके पीछे अश्वत्थामाजी ने व्यासजी के वचन सुनकर युद्धमें सन्नद्ध परम अस्त्रको गर्भोंपर छोड़ा ३५ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिऐषिकेब्रह्मशिरोस्त्रस्यपाण्डवेयगर्भमवेशनेपञ्चदशोऽध्यायः१५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले तब श्रीकृष्णजी पापकर्म करनेवाले अश्वत्थामाके छोड़ेहुये उस अस्त्रको जानकर प्रसन्न होकर अश्वत्थामासे यह वचन बोले १ कि पूर्व समयमें नियमवान् ब्राह्मणने विराटकी पुत्री अर्जुनकी पुत्रबधू उत्तरा को जो कि उपप्लवी स्थानपर वर्तमानथी उससे यह कहा २ कि कौरवों के नाशवान् होनेपर तेरा पुत्र होगा इस गर्भस्थ बालकका इसी हेतुसे परीक्षितनाम होगा ३ उस साधु का यह वचन सत्य होगा परीक्षितपुत्र फिर उन्हों के वंशका चलाने वाला होगा ४ तब अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने यादवों में अत्यन्त श्रेष्ठ इस प्रकार कहनेवाले गोविन्दजीको यह उत्तर दिया ५ हे कमललोचन, केशवजी ! यह इस प्रकार नहीं है जैसे कि तुमने पक्षपाती होकर यह वचन कहा है मेरा वचन मिथ्या नहीं है ६ हे श्रीकृष्णजी ! मेरा चलाया हुआ वह अस्त्र उस उत्तरा के गर्भपर गिरेगा जिसको कि तुम रक्षा किया चाहते हो ७ श्रीभगवान् बोले कि उस परम अस्त्र का गिरना सफल होगा और मराहुआ गर्भ जीकर बड़ी अवस्थाको पावेगा सब ऋषिलोग तुझको नीचपुरुष पापी और वारंवार पापकर्मवाला और बालकके जीवन का नाश करनेवाला जानेंगे ८ । ९ उस कारणसे तुम इस पापकर्म के फलको पाकर तीन हजार दिव्य वर्षतक इस पृथ्वी पर घूमोगे १० तुम एकाकी कहीं कुछ न पाते और कभी किसीके साथ परस्पर वार्तालाप न करते निर्जन देशों में घूमोगे ११ हे नीच ! तेरा निवास मनुष्यों में नहीं होगा पीब और रुधिरकी गन्धि से युक्त दुर्गम्य महावनों में निवास करेगा १२ पापात्मा और सब बीमारियों से संयुक्त होकर घूमेगा शूर परीक्षित

अवस्था और वेदव्रतको पाकर १३ कृपाचार्य से सब अस्त्रों को पावेगा फिर परम अस्त्रोंको पाकर क्षत्रियव्रतमें नियत १४ धर्मात्मा साठ वर्षतक सृष्टिकी रक्षा करेगा इसके पीछे वह महाबाहु कौरवराज होगा १५ हे दुर्बुद्धे ! तेरे देखते परीक्षितनाम राजा होगा मैं उस शस्त्रकी अग्नि से भस्म हुये को अपने तेजसे जिलाऊंगा हे नीच! मेरे सत्य और तपके बलको देखो १६ व्यासजी बोले जो तुमने हमको अनादर करके यह भयकारी कर्म किया और तुझ सत्पुरुष ब्राह्मण का ऐसा चलन हुआ इन दोनों कारणों से श्रीकृष्णजीने जो श्रेष्ठ वचन कहाहै निस्सन्देह वही दशा तेरी होनेवाली है तुम क्षत्रियधर्म में नियतहो १७ । १८ अश्वत्थामा बोले हे ब्राह्मण ! मैं इस लोकके मनुष्यों में आपके साथ नियत हूंगा यह भगवान् पुरुषोत्तम सत्यवक्ता हैं १९ वैशम्पायन बोले कि फिर उदास मन होकर अश्वत्थामा महात्मा पाण्डवों को मणि देकर उन सबके देखतेहुये वनको गये २० और जिनके शत्रु मारेगये वह पाण्डव गोविन्दजी और व्यास जी महामुनि नारदजी को आगे करके २१ और अश्वत्थामा के शरीर के साथ उत्पन्न होनेवाली मणिको लेकर शीघ्रही उस मनस्विनी और शरीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाली द्रौपदी की ओर दौड़े २२ वैशम्पायन बोले कि इसके अनन्तर वह पुरुषोत्तम पाण्डव श्रीकृष्णजी समेत वायुके समान शीघ्रगामी उत्तम घोड़ों के द्वारा फिर डेरे को गये २३ आप पीड़ावान् और शीघ्रता करने वाले महारथियों ने रथों से उतरकर प्रसन्नमनवाली द्रौपदी को पीड़ित देखा २४ वह पाण्डव केशवजी समेत उस अप्रसन्न और दुःखशोक से युक्त द्रौपदी के पास जाकर उसको घेरकर बैठगये २५ इसके पीछे राजा की आज्ञानुसार महाबली भीमसेन ने उस दिव्य मणिको दिया और मणि देकर यह वचन कहा २६ हे कल्याणिनि ! यह तेरी मणि है और वह तेरे पुत्रों का मारनेवाला विजय किया गया शोकको छोड़कर उठो और क्षत्रियधर्म को स्मरणकर २७ हे श्यामलोचने ! सन्धिके अर्थ वासुदेवजीके यात्रा करनेपर तुमने जो यह वचन उन श्रीकृष्णजी से कहे थे कि हे गोविन्दजी ! राजाको सन्धिका अभिलाषी होनेपर मेरे पति पुत्र भाई और तुम चारोंमें से कोई नहीं हो २८ । २९ तुमने क्षत्रियधर्म के योग्य वीरताके वचन पुरुषोत्तमसे कहेथे उनके स्मरण करनेको योग्य हो ३० राज्यका शत्रु पापी दुर्योधन मारागया मैंने उस कटेहुये दुश्शासनका रुधिर पिया ३१ शत्रुताकी अऋणता को पाया हम वार्त्तालाप

करनेके अभिलाषी पुरुषोंकी निन्दाके योग्य नहीं हैं अश्वत्थामा पराजित होकर ब्राह्मणवर्ण की वृद्धतासे छोड़ागया ३२ हे देवि ! उसका जो पतितता प्राप्त हुआ शरीर शेष है उसको मणिसे जुदा किया और उसके सब शस्त्र भी पृथ्वीपर गिरपड़े ३३ द्रौपदी बोली हे निर्दोष ! मैंने अऋणता को पाया गुरुका पुत्र मेरा गुरु है हे भरतवंशिन्, राजा युधिष्ठिर ! इस मणि को शिरपर बांधो तब राजा युधिष्ठिरने यह समझकर कि गुरुपुत्रकी धारण कीहुई यह वस्तु है और द्रौपदी का वचनहै ऐसा जानकर उस मणिको लेकर शिरपर धारण किया ३४ । ३५ इसके पीछे दिव्यमणिको धारण करताहुआ प्रभु राजा युधिष्ठिर चन्द्रमा से युक्त पर्वतके समान शोभायमान हुआ ३६ फिर पुत्रोंके शोकसे पीड़ित मनस्विनी द्रौपदी उठ खड़ी हुई और महाराज धर्मराजने भी श्रीकृष्णजीसे पूछा ३७ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि जो रात्रि के युद्धमें उन तीनों रथियों के हाथसे सब सेना के लोगों के मरने पर शोच करतेहुये राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा १ कि हे श्रीकृष्णजी ! इस पापी नीच और निष्फल कर्मवाले अश्वत्थामा के हाथ से मेरे सब महारथी पुत्र कैसे मारेगये २ उसी प्रकार अस्त्रज्ञ महापराक्रमी लाखों से युद्ध करनेवाले द्रुपदके पुत्र अश्वत्थामाके हाथ से गिराये गये ३ बड़े धनुर्धारी द्रोणाचार्य ने जिसके युद्ध में मुख नहीं किया उस रथियों में श्रेष्ठ धृष्टद्युम्नको उसने कैसे मारा ४ हे नरोत्तम ! उसने इस प्रकारका कौनसा योग्य कर्म किया जो अकेले गुरुपुत्रने हमारे सब पुत्रादिकों को युद्ध में मारा ५ श्रीभगवान् बोले कि निश्चय करके अश्वत्थामा उस अविनाशी शिवजी के शरण में गया जो कि बड़े देवताओं के ईश्वरों का भी ईश्वर है इस हेतुसे अकेलेने बहुतोंको मारा ६ महादेवजी प्रसन्न होकर देवभाग को भी देसक्ते हैं और उस पराक्रमको भी वह गिरीश देसक्ताहै जिसके द्वारा इन्द्रको भी नाश करे ७ हे भरतर्षभ ! मैं महादेवजी को मूलसमेत जानताहूं और उनके जो नानाप्रकार के प्राचीन कर्म हैं उनको भी श्रेष्ठ रीतिसे जानताहूं ८ वेदमें लिखाहै कि योगी शोकसे रहित होताहै इस निमित्त युधिष्ठिर आदि के शोक के निवृत्त करनेको कहते हैं हे भरतवंशिन् ! यह शिव सब जीवमात्रोंका आदि मध्य और अन्त है

और सब संसार इसीके प्रताप से चेष्टा करता है ९ इस प्रकार सृष्टिकी उत्पत्ति करने के अभिलाषी समर्थ त्रिगुणात्मक ईश्वर ने सबके आदि तमोगुणरूप रुद्रजी को देखकर कहा कि जीवों की उत्पत्ति में विलम्ब न करो १० तब बड़े तपस्वी जीवों के दोष जाननेवाले शिवजीने अङ्गीकार करके जल में डूबकर बहुतकाल तक तप किया इसके पीछे ईश्वरने बहुतकाल पर्यन्त उनकी प्रतीक्षा करके सब जीवोंके स्वामी रजोगुणीरूप प्रजापतिको मनसे उत्पन्न किया ११।१२ वह जलमें डूबेहुये शिवजी को देखकर अपने पिता से बोला कि जो मुझसे प्रथम उत्पन्न होनेवाला दूसरा नहीं है इस हेतुसे मैं सृष्टिको उत्पन्न करताहूं १३ ब्रह्माजीने कहा तेरे सिवाय दूसरा पुरुष प्रथमसृष्टि नहीं है यह शिवजी जल में डूबेहुये हैं विश्वास करनेवाली सृष्टि को उत्पन्न करो १४ उसने दक्षादि सात प्रजापतियों को उत्पन्न किया और सब जीवोंको भी उत्पन्न किया जिनके द्वारा इस चार प्रकारकी खानिवाले जीवसमूहों को उत्पन्न किया १५ हे राजन्! तब वह सब सृष्टि उत्पन्न होतेही क्षुधासे महाआर्त होकर प्रजापतिके भक्षण करनेकी इच्छासे दौड़े १६ वह प्रजापति अपनी रक्षाके निमित्त पितामह के पास गया और कहा कि हे भगवन्! उन लोगों से मेरी रक्षा के लिये उनकी जीविका विचार करो १७ इसके पीछे पितामहने उनकी जीविका के लिये अन्न औषधी और स्थावर जीव दिये और बलवान् लोगोंके अर्थ चेष्टा करनेवाले और नि-र्बल जीव दिये १८ वह उत्पन्न होनेवाली सृष्टि जिनके अर्थ अन्न विचार किया गया था अपने स्थानों को गई हे राजन्! इसके पीछे अपने उत्पत्तिस्थान माता और पिता आदिक में प्रीति करनेवाले वह प्रजापति लोग वृद्धियुक्त हुये फिर जीवसमूहों के वृद्धिपाने और लोकगुरुके भी प्रसन्न होने पर वह महापुरुष जलसे उठे और उन सृष्टियोंको देखा १९।२० बहुतरूपवाली सृष्टि के लोग उत्पन्न होकर अपने तेजसे वृद्धियुक्त थे तब भगवान् रुद्रजी क्रोधयुक्त हुये और अपने लिङ्गको भी काटकर पृथ्वीपर इस निमित्त गिराया कि यह लिङ्ग आ-स्तिक्य बुद्धिवाले पुरुषोंको सब सिद्धियों का देनेवाला होगा २१ वह जैसे टूटा उसी प्रकार पृथ्वीपर नियत हुआ वचनोंसे शान्त करते अविनाशी ब्रह्माजी त्रिगुणात्मक ईश्वर करके उनसे बोले २२ हे रुद्रजी! बहुतकाल पर्यन्त आपने जल में निवास करके क्या किया और किस निमित्त इस लिङ्गको उखाड़कर पृथ्वी में नियत किया है २३ वह लोकगुरु महाक्रोधित होकर गुरु से बोले

कि यह सब सृष्टि उत्पन्न होगई है अब मैं इस लिङ्गसे क्या करूंगा २४ हे पितामह ! मेरे तप से प्रजाके निमित्त अन्न प्राप्त हुआ और औषधी सदैव अपने रूपान्तरको करतीरहैंगी जिससे कि सृष्टि सदैव होती रहै २५ वह विमन और क्रोधयुक्त बड़े तपस्वी रुद्रजी इस प्रकारसे कहकर मुंजवत् पहाड़के समीप तप करने को गये २६ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले कि सतयुगके अन्त होनेपरविधिके पूजन करने के अभिलाषी देवताओंने वेदके प्रमाणसे यज्ञको विचार किया १ फिर उन्होंने सब साधनोंको धनेशों को भागके योग्य देवताओं को और यज्ञकी द्रव्योंको कल्पना किया २ हे राजन् ! मूलसमेत रुद्रजी को न जाननेवाले उन देवताओं ने देवता रुद्रजी के भागको विचार नहीं किया ३ अब इस बातको कहते हैं कि विना ईश्वर के आराधन किये यज्ञ विनाशवान् है यज्ञमें देवताओं से भाग का विचार न करनेपर साधन अर्थात् यज्ञके नाशकर्ता को चाहनेवाले उन रुद्र जीने प्रथम धनुषको उत्पन्न किया ४ लोकयज्ञ, (अर्थात् सब लोक मुझको साधु जानो इस फलवाला) क्रियायज्ञ, (अर्थात् गर्भाधान संस्कार आदिक रूप) गृहयज्ञ, (अर्थात् स्त्रीके साथ होमनेवाली अग्निहोत्रादिक) पञ्चभूत नरयज्ञ, (अर्थात् विषयों से उत्पन्न होनेवाला सुख) इन चार प्रकार के यज्ञों में यह सत् जगत् नियत है ५ रुद्रजी ने लोकयज्ञ और नरयज्ञों से धनुषको तैयार किया उनका उत्पन्न किया हुआ धनुष मार्ग में पांच हाथ हुआ और वही पांच हाथ पांच विषय हैं तात्पर्य यह है कि जो ज्ञानी लोक और शरीरके अभिमान का त्याग करनेवाला है उसको उस धनुष से भय नहीं है ६ हे भरतवंशिन् ! उस धनुष की प्रत्यञ्चा वषट्कार प्रत्येक वासनारूप हुआ यज्ञों के चारों अंग उसकी दृढ़तारूप हुये ७ उसके पीछे क्रोधयुक्त महादेवजी उस धनुष को लेकर वहां गये जहांपर कि देवतालोग यज्ञ कररहे थे ८ उस धनुष उठानेवाले अविनाशी ब्रह्मचारी को देखकर पृथ्वी देवी पीड़ित हुई और पर्वत कम्पायमान हुये ९ वायु नहीं चली और वृद्धियुक्त अग्नि ज्वलित नहीं हुई और स्वर्ग में व्याकुल नक्षत्रमण्डल भ्रमण करनेलगे १० सूर्य और शोभायमान चन्द्र-

मण्डल भी प्रकाशमान नहीं हुये सब आकाश अन्धकार से व्याप्त हुआ ११ इस के पीछे व्याकुल देवताओं ने विषयों को नहीं जाना तब वह यज्ञ गुप्त हुआ और देवता भयभीत हुये १२ इसके पीछे उन्होंने यज्ञको रुद्रबाणसे हृदय पर घायल किया इसके पीछे वह यज्ञ मृगरूप होकर अग्निसमेत भाग गया १३ (तात्पर्य) (रुद्रनाम अहङ्कार का है जिस यज्ञमें यजमानको यह विचार होय कि मैं यज्ञ करनेवाला और ज्ञाताहूं वह यज्ञ ब्रह्मज्ञानरूप फलसे रहित है) हे युधिष्ठिर ! फिर वह उसी रूप से स्वर्ग को पाकर आकाश में शोभायमान हुआ फिर कालात्मा रुद्रजी से पीछा कियाहुआ वह यज्ञ फलके भोग के पीछे स्वर्ग से पतित हुआ १४ इसके पीछे यज्ञके भागने पर देवताओं का ज्ञान प्रकट नहीं हुआ और देवताओं के अचेत होनेपर कुछ नहीं जानागया १५ त्र्यम्बक अर्थात् श्रवण मनन निदिध्यासनसे प्राप्त होनेवाले क्रोधरूप परमेश्वर ने सविता अर्थात् यज्ञ करनेवाले के शरीर की भुजाओं को और भगके नेत्रों को पूषाके दांतों को पूर्वोक्त धनुषकी कोटिसे गिराया १६ इसके पीछे देवता और यज्ञों के सब अङ्ग भागे और कितनेही वहां घूमतेहुये निर्जीव के समान हुये १७ उन रुद्रजीने उस सब यज्ञको अङ्गोंसमेत भगाकरके हँसकर धनुषकी कोटिको निष्कर्म करके देवताओं को रोका अर्थात् लोक और शरीर की प्रीति से पृथक् किया १८ इसके पीछे देवताओं की कहीहुई वाणी ने उनके धनुषकी प्रत्यञ्चा को जुदा किया हे राजन् ! फिर प्रत्यञ्चा से जुदा वह धनुष अकस्मात् कुछ चलायमान हुआ १९ इसके पीछे यज्ञसमेत सब देवता उस देवताओंमें श्रेष्ठ और धनुष से रहित ईश्वरकी शरण में गये अर्थात् चित्तशुद्धि के निमित्त आत्माके आधीन हुये और प्रभुने कृपा करी २० इसके पीछे भगवान् क्रोध त्रिगुणरूपको समुद्र अज्ञान चित्त में नियत करके प्रसन्न हुये हे समर्थ ! वह क्रोध अकस्मात् अग्नि होकर जलको पान करता है २१ हे पाण्डव ! फिर भगदेवताके मन्त्रों को और सविताकी भुजाओंको पूषा के दांतों को और यज्ञोंको दिया अर्थात् सात्त्विक यज्ञ जारी हुआ २२ उसके पीछे यह सब जगत् फिर स्थिरचित्त हुआ और देवताओं ने सब हव्यों को उसका भाग नियत किया अर्थात् सब कर्म ईश्वरार्पण कियेगये २३ हे प्रभो, युधिष्ठिर ! उसके क्रोधयुक्त होनेपर सब संसार व्याकुल हुआ और प्रसन्न होनेपर फिर स्थिर हुआ वह पराक्रमी शिवजी उसके ऊपर प्रसन्न हुये २४ इस कारण से आपके वह सब महारथी पुत्र और धृष्टद्युम्न

के पीछे चलनेवाले बहुतसे अन्य २ शूरवीर मारेगये २५ वह चित्त में नहीं धारण करना चाहिये उसको अश्वत्थामाने नहीं किया अर्थात् सब ईश्वरके आधीन है शोक न करना चाहिये महादेवजीकी प्रसन्नतासे निस्सन्देह शीघ्रता-पूर्वक करने के योग्य कर्मों को करो २६ ॥

इति श्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांसौप्तिकपर्वणिऐषीकेयुधिष्ठिरार्जुन-संवादेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

शुभम्भूयात् ॥

इति सौप्तिकपर्व समाप्तम् ॥

महाभारतभाषा स्त्रीपर्व ॥

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतं प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकं स्वाराण्मस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ या भाति वीणामिव वादयन्ती महाकवीनां वदनारविन्दे ॥ सा शारदा शारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभा नः प्रतिभां व्यनक्तु २ पाण्डवानां यशोवर्ष्म सकृष्णमपि निर्मलम् ॥ व्यधायि भारतं येन तं वन्दे बादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यते भूतलमद्य येन ॥ तं शारदालब्धवरप्रसादं वन्दे गुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगं सुन्दरनारिपर्वभाषानुवादं विदधाति सम्यक् ५ ॥

अथ स्त्रीपर्वप्रारम्भः ॥

श्रीनारायण, नरोत्तम नर को और सरस्वती देवी को नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहास को वर्णन करताहूं १ जनमेजय बोले कि हे मुने ! दुर्योधन के मरने और सब सेना के नाश होजाने पर महाराज धृतराष्ट्र ने सुनकर क्या किया २ उसी प्रकार धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने और उन कृपाचार्यादिक तीनों ने क्या किया ३ आपके कहने से अश्वत्थामाका कर्म सुना परस्पर शाप देनेसे पीछेका जो वृत्तान्त संजय ने कहा है उसको आप मुझसे वर्णन कीजिये ४ वैशम्पायन बोले कि सौ पुत्रों के मरने पर टूटी शाखाओं के वृक्षसमान दुःखी और पुत्रशोक से पीड़ावान् ५ ध्यान मौनतायुक्त चिन्तामें डूबे हुये पृथ्वी के स्वामी महाराज धृतराष्ट्र के पास जाकर संजय ने यह वचन कहा ६ हे महाराज ! क्या सोचते हो शोकमें सहायता नहीं होसक्ती है हे राजन् ! अठारह अक्षौहिणी सेना मारी गई ७ अब यह पृथ्वी सेना के लोगों से और राजाओं से रहित होकर मित्रों से विहीन है क्योंकि नानादेशोंके राजाओं ने बहुत दिशाओं से आकर ८ सबने आपके पुत्र के साथ नाशको पाया अब आप अपने पुत्र,

पौत्र, ज्ञाति, सुहृद् और सब कौरवों के क्रिया कर्मको कराइये ६ वैशम्पायन बोले कि पुत्र पौत्रादिकों के मरनेसे पीड़ावान् बड़ा अजेय धृतराष्ट्र उस शोककारी वचनको सुनकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वायुसे ताड़ित वृक्ष गिर पड़ता है १० धृतराष्ट्र बोले कि जिसके पुत्र, मंत्री और सब सुहृज्जन मारे गये ऐसा मैं होकर सम्पूर्ण पृथ्वी पर बिचरूंगा ११ अब कटे पक्षवाले पक्षी के समान मुझ वृद्ध दशासे दुर्बल बान्धवों से रहित के जीवनसे क्या प्रयोजन है १२ हे महाभाग! राज्य, सुहृज्जन और नेत्रों से रहित मैं ऐसा शोभित नहीं हूंगा जैसे कि विना किरणवाला सूर्य अशोभित होता है १३ परशुरामजी, देवऋषि, नारदजी और व्यासजी इन शुभचिन्तकों के कहे हुये वचनों को नहीं किया १४ सभाके मध्यमें जो कृष्णजी ने मेरे कल्याणका करनेवाला यह वचन कहा था कि हे राजन्! शत्रुता को त्यागो और अपने पुत्रको बन्धनमें करो १५ उनके वचनों को भी न करके मैं दुर्बुद्धि अब कठिन दुःख को पाता हूं और धर्म से संयुक्त भीष्मजी के भी वचन को मुझ अभागे ने नहीं सुना राजाओं में दुर्योधन का नाश, दुश्शासनका मरण, कर्णका विपरीत मरण और द्रोणाचार्य रूप सूर्य के ग्रहण को सुनकर मेरा हृदय फटता है हे संजय! पूर्व समय के कियेहुये अपने कुछ पापों को नहीं जानता हूं १६। १८ जिसके कि फलको अब मैं दुर्भागी भोग रहाहूं निश्चय करके मैंने पूर्व जन्मों में बड़े २ पाप किये हैं १६ जिसके कारण से ईश्वर ने मुझको दुःख उत्पन्न करनेवाले कर्मों में प्रवृत्त किया मेरी अवस्था का अन्तिम भाग पुत्र पौत्रादिकों का नाश २० और सुहृद् बंधुओं का मरना दैवयोगसे है दूसरी रीतिसे नहीं है इस लोकमें मुझसे अधिक दुःखी दूसरा कौन पुरुष है २१ हे तेजव्रत! वह सब पाण्डवलोग मुझको उस ब्रह्मलोकके मिलने और बड़े मार्गमें नियत हुये को देखेंगे २२ वैशम्पायन बोले सञ्जयने उस विलाप करनेवाले और अनेक प्रकारसे शोकके विस्तार करनेवाले राजा धृतराष्ट्रके शोक का दूर करनेवाला वचन कहा कि २३ हे राजन्! शोकको दूर करो तुमने बहुत से धर्मके निश्चय सुने हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ! तुमने वृद्धों से भी अनेक प्रकार के शास्त्र सुने हैं २४ कि पूर्व समयमें पुत्रके शोकसे राजा सञ्जय के पीड़ावान् होनेपर मुनियोंने जो कहा और जिस प्रकार तरुणताके अहंकारमें आपके पुत्र दुर्योधन के नियत होने पर ऋषियोंने जो कहा उसको भी सुना २५ जो तुमने वार्तालाप करनेवाले अपने शुभचिन्तकों

के वचनों को नहीं अंगीकार किया रोगी और हतबुद्धि होकर तुमने कोई अपना प्रयोजन नहीं किया २६ आपने केवल एक धार रखनेवाली तलवार के समान अपनीही बुद्धिसे सब कर्म किये और बहुधा दुराचारी लोगों को सलाहकार करने के निमित्त समीप बैठाया २७ दुश्शासन, दुर्बुद्धि कर्ण, बड़ा दुष्टात्मा शकुनी, दुर्मति चित्रसेन और शल्य जिसके मन्त्री हैं २८ जिस शल्यने सब जगत्को भालरूप किया हे महाबाहो, महाराज, भरतवंशिन्, धृतराष्ट्र! आपके उस पुत्र ने कौरवों के वृद्ध भीष्मपितामह, गान्धारी, विदुर २९ द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, श्रीकृष्णजी, बुद्धिमान् नारदजी ३० और बड़े तेजस्वी व्यासजी आदि अन्य २ ऋषियोंका भी वचन नहीं किया ३१ जो कि निर्बुद्धि अहंकारी सदैव युद्धको कहता निर्दयी अजेय पराक्रमी और सदैव अशान्तता से असंतुष्ट था ३२ तुम सदैव शास्त्रज्ञ और शास्त्र के स्मरण रखनेवाले बुद्धि के स्वामी और सत्यवक्ता हो ऐसे आप सरीखे बुद्धिमान् सन्तलोग मोहको नहीं पाते हैं ३३ सदैव युद्ध को कहनेवाले ने कोई उत्तम और शुभ कर्म नहीं किया सब क्षत्रियों का नाश किया और शत्रुओंका यश बढ़ाया ३४ तुम भी सबके मध्यस्थ हुये परन्तु कोई उचित बात नहीं कही हे अजेय! तुमने स्नेह और प्रीतिकी तुला को समान नहीं रक्खा प्रारम्भमें ही मनुष्य को उचित कर्म करना इस निमित्त योग्य है जिससे कि भूतकाल का प्रयोजन पश्चात्तापसे युक्त न होय ३५। ३६ हे राजन्! तुमने पुत्रकी प्रीतिसे उसका हित और प्रिय करना चाहा था फिर पीछे से इस दुःखको पाया तुम सोचने के योग्य नहीं हो ३७ जो पुरुष केवल शहद को देखकर अपने गिरने को नहीं देखताहै वह शहदके लोभसे गिरा हुआ ऐसे सोचता है जैसे कि आप सोचते हैं ३८ सोचता हुआ पुरुष न मनोरथको पाता है न फल को पाता है न कल्याण को पाता है और न ब्रह्म को पाताहै ३९ जो पुरुष अपने आप अग्नि को उत्पन्न करके वस्त्रसे ढकता और जलता हुआ चित्त के दुःखको धारण करता है वह पण्डित नहीं है ४० पुत्रके साथ तुम्हारे वचनरूप वायु से प्रेरित लोभरूपी घृतसे सींचा हुआ यह पाण्डवरूप अग्नि प्रज्वलित हुआ है ४१ उस अत्यन्त वृद्धियुक्त अग्निमें आप के पुत्र शलभ नाम पक्षियों के समान गिरे तुम बाणों की अग्निसे भस्म होकर उन पुत्रों के शोच करनेको योग्य नहीं हो ४२ हे प्रभो! जो तुम अश्रुपातों से लिप्त मुखको धारण करते हो यह शास्त्र के विपरीत है पण्डितलोग इसकी प्रशंसा

नहीं करते हैं ४३ निश्चय करके यह आंसू अग्नि के स्फुलिङ्गों के समान मनुष्योंको भस्म करते हैं यहां तुम बुद्धिसे शोक को त्याग करके अपने चित्त को स्वाधीन करो ४४ वैशम्पायन बोले कि उस महात्मा संजय से इस प्रकार विश्वास दिया गया इसके पीछे बुद्धिसे युक्त विदुरजी यह वचन बोले ४५ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि प्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले अमृतरूपी वचनों से पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र को प्रसन्न करते विदुरजी ने जो कहा उसको सुनो १ विदुरजी बोले हे राजन्! उठो क्यों सोते हो बुद्धिसे मनको आधीन करो सब जड़ चैतन्य जीवों का यही निश्चय है २ कि सब सृष्टिसमूह अन्त में नाश होनेवाले हैं सब उदय होनेवाले ऐश्वर्य अन्तमें पतन होनेवाले हैं मिलनेवाले अन्त में जुदे होनेवाले हैं और जीवन भी अन्त में मरण रखनेवाला है ३ हे भरतवंशिन्! जब यमराज शूरवीर और भयभीतों को आकर्षण करता है तो हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ! फिर वह क्षत्रिय क्या नहीं युद्ध करते हैं ४ युद्ध को न करता मरता है और लड़ता हुआ जीता रहता है हे महाराज! कालको पाकर कोई उसको उल्लंघन नहीं करता ५ हे भरतवंशिन्! सब जीव प्रारम्भमें ही अभावरूप हैं मध्य में भावरूप हैं और मरने पर अभावरूप हैं ऐसे स्थानपर कौन विलाप है ६ सोचता हुआ मृतक के पीछे नहीं जाता है सोचता हुआ मनुष्य नहीं मरता है इस प्रकार लोक में किस निमित्त शोच करते हो ७ हे कौरवों में श्रेष्ठ! यह काल नाना प्रकार के सब जीवोंको आकर्षण करता है कालका कोई प्यारा है न शत्रु है ८ हे भरतर्षभ! जैसे कि वायु सब तृणकी नोकों को उलट पलट करता है उसी प्रकार सब जीव काल के आधीन होते हैं ९ एक साथ आनेवाले और वहां जानेवाले सब जीवों के मध्य में जिसके आगे काल जाता है उसमें कौन विलाप करता है १० हे राजन्! युद्ध में मृतकहुये इन वीरों के शोच करनेको भी योग्य नहीं हो इसमें शास्त्रका प्रमाण है कि उन्होंने परम गति को पाया ११ सब वेद पढ़नेवाले और सब अच्छे प्रकार से व्रत करनेवाले यह सब सम्मुख होकर विनाशवान् हुये इसमें किस बातका विलाप करना है १२ दृष्टिमें न आनेवाले ब्रह्मसे उत्पन्न हुये और फिर उसी दृष्टि में न आनेवालेको पाया यह न आपके हैं न आप उनके हैं उसमें कैसा विलाप

है १३ मृतक भी स्वर्गको पाता है और मरकर भी जिसको पाता है हमलोगों को वह दोनों बहुत गुणवाले हैं युद्ध में निष्फलता नहीं है १४ इन्द्र देवता उनके मनोरथों के प्राप्त करनेवाले लोकोंको विचार करेंगे हे पुरुषोत्तम! यह सब शूरवीर लोग इन्द्र के अतिथि होते हैं १५ मनुष्य दक्षिणावाले यज्ञ, तप और विद्यासे उस प्रकार स्वर्गको नहीं पाते हैं जैसे कि युद्ध में मृतक उन शूरवीर तेजस्वियोंने पाया है जिन्होंने शरीररूपी अग्नियों में बाणरूप आहुतियों को होमा और परस्पर होमेहुये बाणों को सहा १६। १७ हे राजन्! इस प्रकार से स्वर्ग के उत्तम मार्गको तुमसे कहता हूं इस लोकमें क्षत्रियका कुछ कर्म युद्ध से अधिक नहीं वर्तमान है १८ युद्धमें शोभायमान उन महात्मा शूर क्षत्रियोंने बड़े अभीष्ट फलको पाया सबही शोच के अयोग्य हैं १९ हे पुरुषोत्तम! तुम ज्ञान से अपने को विश्वास देकर शोच मत करो शोकसे विजय किये हुये तुम करनेके योग्य कर्म के छोड़नेको योग्य नहीं हो २० हज़ारों माता पिता और सैकड़ों पुत्र स्त्री संसार में प्राप्त किये वह किसके और हम किसके २१ प्रतिदिन शोकके हज़ारों स्थान और आनन्द के सैकड़ों स्थान अज्ञान में प्रवेश करते हैं २२ हे कौरवोत्तम! कालका कोई प्यारा है न शत्रु है वह काल किसी स्थान पर भी मध्यस्थ नहीं है काल सबको खैंचता है २३ काल जीवमात्रों को पकाता है कालही सृष्टिको मारता है कालही सोनेवालों के मध्य में जागता है और कालही दुःखसे उल्लंघन के योग्य है २४ तरुणाई, रूप, वृद्धता, धनसमूह और नीरोगतापूर्वक निवास यह सब विनाशवान् हैं पण्डित इनमें प्रवृत्त नहीं होता है २५ अकेले तुम सब दुनिया भरे के दुःख के सोचने योग्य नहीं हो जो अभाव से मिलता है उसका वह फिर लौटकर नहीं आता है २६ जो पराक्रम से नाशको पावे उसको सोचताहुआ मनुष्य उसकी चिकित्सा को नहीं करता है दुःख का यह इलाज है जो उसको न विचार करे २७ चिन्ता किया हुआ दूर नहीं होता है और फिर २ अधिक बढ़ता है अप्रिय के मिलने और प्रियके वियोग से २८ वह आदमी बड़े २ चित्तके दुःख से संयुक्त होते हैं जोकि निर्बुद्धि हैं यह न अर्थ है न धर्म है न सुख है जो तुम शोच करते हो २९ वह करने के योग्य प्रयोजन से जुदा होता है और धर्म, अर्थ, काम इन तीनों वर्गों से च्युत होताहै मनुष्य अन्य २ मुख्य धनादिक दशाको पाकर३० इनमें असन्तुष्ट लोग मोहको पाते हैं पण्डित सन्तोष को पाते हैं चित्तके दुःख

को ज्ञानसे और शरीरके दुःखको औषधोंसे दूर करना चाहिये ३१ यहीं ज्ञान की सामर्थ्य है और किसी प्रकार की कोई सामर्थ्य नहीं है पूर्वजन्म में किया हुआ कर्म सोते हुये मनुष्य के साथ सोता है और बैठनेवालेके पास नियत बैठा होता है ३२ और दौड़ते हुये के पीछे दौड़ताहै जिस जिस दशामें जिस जिस शुभाशुभ कर्मको करता है ३३ उसी उसी दशामें उस उस फलको पाता है जो जीव जिस जिस शरीर से जो जो कर्म करता है ३४ उसी उसी शरीर से उस उस कर्मके फलको भोगताहै आत्मा में आत्माही उसका बन्धु है और आत्माही आत्माका शत्रु है ३५ आत्माही आत्माके शुभाशुभ कर्मोंका साक्षी है शुभ कर्म से सुखको और अशुभ कर्म से दुःखको ३६ सर्वत्र पाताहै किसी स्थानमें भी विनाकिये हुयेको नहीं भोगता है आपके समान बुद्धिमान् मनुष्य उन कर्मों में प्रवृत्त नहीं होते हैं जोकि ज्ञान के विपरीत बहुत पाप रखनेवाले और मोक्षके नाश करनेवाले हैं ३७ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिके धृतराष्ट्रविशोके द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे बड़े ज्ञानिन् ! तुम्हारे इन उत्तम वचनों से मेरा शोक निवृत्त हुआ परन्तु हे निष्पाप ! मैं मूलसमेत इन वचनों को फिर सुना चाहता हूं १ पण्डितलोग अप्रियके योग और प्यारोंके वियोग से उत्पन्न होनेवाले चित्त के दुःखों से कैसे छूटते हैं २ विदुरजी बोले कि जिस जिस उपाय से दुःख अथवा सुखसे भी निवृत्त होता है बुद्धिमान् मनुष्य उसी उपायसे इस चित्तको स्वाधीन करके शान्ति को पावे ३ हे नरोत्तम ! यह सब जो ध्यानमें आता है विनाशवान् है यह संसार केलेके समान है इसका सार पदार्थ वर्तमान नहीं है ४ जब ज्ञानी और मूर्ख, धनी और निर्धनी कालसे मरणको पाकर ताप से रहित सोते हैं ५ उस स्थानपर दूसरे मनुष्य निर्मांस अथवा बहुत अस्थि रखनेवाले अंग, नाड़ी और बन्धनों से अधिक किस वस्तुको देखते हैं ६ जो उस समय कुल और रूप विशेषणको नहीं पावें वह छल करनेवाले मनुष्य किस हेतुसे परस्पर इच्छा करते हैं ७ पण्डितों ने शरीरधारियों के देहोंको गृहों के समान कहा है वह कालसे मिलते हैं अर्थात् नाशको पाते हैं केवल एक जीवात्मा ही अविनाशी है ८ जिस प्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्याग करके नवीन कपड़ेको

अङ्गीकार करता है इसी प्रकार शरीरधारियोंके शरीर हैं ९ हे धृतराष्ट्र! सब मनुष्य अपने किये हुये कर्म से मिलने के योग्य दुःख अथवा सुखको पाते हैं १० हे भरतवंशिन्! सब सुख और दुःख अपने कर्मसे प्राप्त होते हैं इस हेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्र भी उस भारको उठाता है ११ और जैसे मट्टी का पात्र रूपको पाकर टूटता है कोई बनता कोई बनाहुआ १२ अवेपर रक्खा हुआ वा अवेसे गिरकर टूटनेवाला आर्द्र व शुष्क वा पकताहुआ १३ आंवेंसे उतारा हुआ उठाया हुआ वा काम में लायाहुआ भी टूट जाता है इसी प्रकार शरीरधारियों के शरीर हैं १४ गर्भ में नियत जन्म लेनेवाला वा थोड़ी अवस्था वाला अर्धमास एकमास १५ एक वर्ष वा दो वर्षकी अवस्था रखनेवाला तरुण, मध्यस्थ और वृद्ध भी नाशको पाता है १६ सब जीव अपने पिछले जन्मों के कर्मोंसे उत्पन्न होते हैं और नाशको पाते हैं इस रीतिके स्वाभाविक धर्म रखने-वाले लोकमें किस हेतुसे दुःखी होते हो १७ हे राजन्! जैसे कि कोई जीव क्रीड़ाके निमित्त जलमें घूमता हुआ डूबता और उछलता है १८ उसी प्रकार महर्षिलोग अपने बड़े ज्ञानके द्वारा उस प्रकार के दुर्गम संसारसे पारहुये जो कि डूबना उछलना इन दो गुणोंका रखनेवाला है १९ जो जीवोंकी उत्पत्ति के जाननेवाले संसार के अन्तके खोजनेवाले सब ज्ञानी नियत हैं वह परम गतिको पाते हैं २० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे वक्ताओं में श्रेष्ठ! किस रीतिसे यह संसाररूपी वन जानने के योग्य है मैं इसको सुना चाहता हूं आप मुझसे वर्णन कीजिये १ विदुरजी बोले कि जन्मसे लेकर जीवधारियोंकी सब क्रिया दिखाई देती हैं इस लोकमें प्रथम कलल अर्थात् एक रात्रि निवास करनेवाले गर्भ में जीवात्मा निवास करता है परन्तु कुछ अन्तर है अर्थात् प्रतिदिन गर्भ की वृद्धि से उसकी सामर्थ्य अधिक बढ़ती है २ इसके पीछे पांचवां मास व्यतीत होनेपर उस चैतन्यका प्रादुर्भाव वि-चार किया अर्थात् एकरात्रि निवासमें चैतन्यकी सत्तामात्र होती है परन्तु पांचवें महीने में उसका पूर्ण प्रादुर्भाव होजाता है ३ मांस, रुधिरसे लिप्त अपवित्र स्थानमें निवास करताहै फिर वह अपानरूप वायुकी तीव्रतासे ऊंचे पैर नीचे शिरवाला ४ योनिके द्वारको पाकर बड़े कष्टों को पाता है योनिकी पीड़ा और पिछले कर्मों

से युक्त ५ उस द्वारसे छूटकर संसारके दूसरे उपद्रवों को देखता है और ग्रह उसके पास ऐसे आते हैं जैसे कि मांस के पास कुत्ते आते हैं ६ हे शत्रुसंतापिन् ! इसके पीछे उसी समय रोग भी उसके पास आते हैं इसीसे जीता हुआ अपने कर्मों से पीड़ावान् होता है ७ हे राजन् ! इन्द्रियों के पाशबंधनों में बँधेहुये सङ्ग और स्वादु से संयुक्त उस जीवधारी के पास नाना प्रकार के व्यसन अर्थात् आपत्तियां वर्तमान होती हैं ८ फिर उन सबसे पीड़ित होकर वह जीव तृप्ति को नहीं पाता है इसीसे शुभाशुभ कर्मों को करता है और उनका त्यागनेवाला नहीं होता है इसी प्रकार जो पुरुष ईश्वर के ध्यानमें प्रवृत्त हैं वह अपने को तब तक चारों ओर से रक्षा करते हैं जबतक यह जीव मिलनेवाले यमलोक को नहीं जानता है ६ । १० यमदूतों से आकर्षित कालसे मृत्युको पाता है उस मौन का जो पाप पुण्य है वह दूसरे के द्वारा मुखमें किया हुआ होता है ११ फिर भी विषयों में आसक्त होकर अपने को पतन हुआ नहीं ध्यान करता है अर्थात् अपनी परिणामकुशलताको नहीं पाता है आश्चर्य है कि यह संसार नीच लोभकी आधीनता में वर्तमान १२ क्रोध, मोह और धनके मदसे अचेत होकर आत्माको नहीं जानता है दुष्ट कुलवालों की निन्दा करता अपने कुल की प्रशंसा करता हुआ रमता है दरिद्रियों की निन्दा करता धनके गर्वसे अहं-कारी है दूसरों को मूर्ख कहता है और अपने को अच्छी रीति से नहीं देखता है १३।१४ दूसरों को शिक्षा करता है परन्तु अपनेको शिक्षा करना नहीं चाहता है जब ज्ञानी और मूर्ख, धनी और निर्धनी १५ कुलीन अकुलीन, अहंकारी और निरहंकारी भी सब पितृवन अर्थात् यमलोक में वर्तमान विगतज्वर होकर सोते हैं १६ और वहांपर दूसरे मनुष्य उन्होंके निर्मांस बहुतसे अस्थिवाले अंग और नाड़ी बन्धनों से अधिक कुछ नहीं देखते हैं और जो कुल और रूपकी मुख्यताको नहीं पाते हैं १७ जब वह सब भी शरीर त्याग किये हुये पृथ्वी पर सोते हैं तब दुर्बुद्धि मनुष्य इस लोक में किस हेतु से परस्पर छल किया चाहते हैं १८ यह बात देखी और सुनी है जो इस श्रुतिको सुनकर इस विनाशवान् जीवलोकमें धर्मका पालन करता हुआ १६ जन्मसे लेकर मरणतक कर्म करता है वह परम गति को पाता है जो कि इस प्रकार सबको जानकर ब्रह्म की उपासना करता है २० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जो यह दुष्प्राप्य धर्म बुद्धिके द्वारा अच्छे प्रकार से प्राप्त होता है इस हेतुसे अब बुद्धिमार्ग को ब्यौरेसमेत मुझसे कहो १ विदुरजी बोले कि इस स्थानपर ब्रह्माजी के अर्थ नमस्कार करके वह विषय मैं तुमसे कहताहूं जैसे कि महर्षिलोग इस संसाररूपी घन वनको तरते हैं २ निश्चय करके इस बड़े संसार में कोई द्विज मांसभक्षी जीवों से पूर्ण उस दुर्गम्य वन में पहुँचा जो कि बड़े शब्दवाले भयानकरूप मांसभक्षी महाभयकारी सिंह व्याघ्र हाथी और रीछोंके समूहों से ३ । ४ चारों ओर को व्याप्त मृत्युका भी भयकारी था उसको देखकर इसका हृदय महाव्याकुल हुआ ५ कम्प और रोमांचों से शरीर व्याप्त हुआ वह उस वनमें अच्छे प्रकार घूमता हुआ इधर उधर को दौड़ा ६ और सब दिशाओं को देखता था कि मेरा रक्षास्थान कहां होगा इस प्रकार वह भय से पीड़ावान् सिंहादिक के छिद्रों को देखता भागा ७ वह न तो दूर जाता था न उनसे बचता था इसके पीछे उसने चारों ओरको पाश अर्थात् विषयादिक की वासना से युक्त घोर वनको देखा ८ वह पाश बड़ी घोररूप स्त्री की भुजाओं से पकड़ा हुआ था और वह वन पांच शिर रखनेवाले पर्वतोंके समान ऊंचे सर्पों से ९ और आकाश को स्पर्श करनेवाले बड़े वृक्षोंसे चारों ओरको संयुक्त था उस वनके मध्यमें एक कूप अन्धकार से पूर्ण १० तृणसे ढकी हुई दृढ़ वल्लियों से संयुक्त था वह द्विजनाम जीव उस गुप्त कूपमें गिरपड़ा ११ और लताओंके फैलावसे पूर्ण उस कूपमें छिपगया अर्थात् अभिमानी हुआ कि यह मेरा स्थान है जैसे कि वृक्षवंश में उत्पन्न होनेवाला बड़ा फल शाखा में लगाहुआ होता है १२ उसी प्रकार वह द्विज ऊंचे पैर नीचे शिरवाला होकर उसमें लटका फिर उसी प्रकार से उसका दूसरा उपद्रव भी उत्पन्न हुआ १३ कि कूपके मध्य में बड़े बलवान् सर्पको देखा और मुखबन्धन कूपके किनारे पर ऐसे बड़े हाथी को देखा १४ जो कि छः मुखवाला और बारह चरण से चलनेवाला श्वेत श्याम वर्ण क्रमपूर्वक चलनेवाला सैकड़ों वृक्ष और वल्लियों से ढका हुआ था (यहांपर गजको वर्षकी समाप्ति छः मुखको छःऋतु और श्वेत कृष्णवर्णों को दोनों पक्ष बारह चरण को बारह महीने वल्लीको जीवन और वृक्षको आयुर्दाय जानो १५) इसके पीछे बड़ी शाखाओंपर लटकनेवाले अर्थात् बाल्य तरुण

और वृद्धावस्था में लटकतेहुये द्विज को जानो नाना प्रकार का रूप रखनेवाले श्वेतवर्ण घोर और बड़े भयके उत्पन्न करनेवाले १६ और प्रथमही घर बनाकर सन्तान के द्वारा वृद्धि पानेवाले भौंरे शहद को इकट्ठा करके निवास करते हैं हे भरतर्षभ! वह भौंरे १७ बारम्बार जीवधारियों के स्वादिष्ठरसों की इच्छा करते हैं जिन्होंसे बालक आकर्षण किये जाते हैं उन रसों की बड़ी धारा सदैव गिरती हैं १८ तब लटकता हुआ वह जीव सदैव धाराओं को पान करता है संकटमें भी इस पान करनेवाले की इच्छा पूर्ण नहीं हुई १९ वह अतृप्त होकर सदैव बारम्बार उसको चाहताहै हे राजन्! जीवनमें उसकी अप्रीति नहीं उत्पन्न हुई २० उसीमें मनुष्यके जीवन की आशा नियत है श्वेत कृष्ण रंगवाले चूहे अथवा रात्रि दिन उस वृक्षरूपी आयुर्दाय को काटते हैं २१ दुर्गम्य वनके पास बहुतसे सर्प अर्थात् रोग और बड़ी उग्र स्त्री अर्थात् वृद्धावस्था और कूपके नीचे सर्प अर्थात् मृत्यु और कूपके मुखपर हाथी अर्थात् पूर्णवर्ष २२ और वृक्षके गिरनेसे भय है और चूहोंसे पांचवां भय है और शहदके लोभ से छठे भय को कहा है २३ इस प्रकार संसारसागरमें पड़ाहुआ यह जीव वर्तमान होता है और जीवनकी आशा में वैराग्य को नहीं पाता है २४॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि पंचमोऽध्यायः ५॥

छठा अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि बड़ा आश्चर्य है कि निश्चय बड़ा दुःख है और उसकी स्थिति भी दुःखरूप है हे वक्ताओं में श्रेष्ठ! उसमें उसकी प्रीति और तृप्ति किस प्रकारसे है १ वह देश कहां है जिसमें यह जीव धर्मसंकटमें निवास करता है और वह मनुष्य उस बड़े भयसे कैसे छूटैगा २ यह सब मुझसे कहो यह बहुत अच्छा है तब हम काममें लावेंगे निश्चय उसके छुड़ानेके लिये मेरे ऊपर बड़ी कृपा उत्पन्न हुई है ३ विदुरजी बोले हे राजन्! मोक्ष चाहनेवाले पुरुषोंने यह दृष्टान्त वर्णन किया है जिससे कि मनुष्य परलोकमें सुन्दर गतिको पाता है ४ जो वह महावन कहा जाता है वही महासंसार है और जो यह दुर्गम्य वन है वही संसारघन है ५ जो सर्प तुमसे कहे वही रोग हैं वहां बड़े शरीरवाली जो स्त्री निवास करती है ६ उसको ज्ञानियों ने वर्णरूपकी नाश करनेवाली वृद्धावस्था कहा है हे राजन्! वहां जो कूप है वह शरीरधारियों का शरीर है ७ और जो

बड़ा सर्प उस कूपके भीतर निवास करता है वही काल है यह सब भूतों का नाश करनेवाला और जीवात्माओं का हरनेवाला है ८ और कूपके मध्यमें जो वल्ली उत्पन्न हुई वह मनुष्य उसके विस्तार में लटकता है वही शरीरधारियों के जीवनकी आशा है ९ और कूपके मुखपर जो छः मुखवाला हाथी वृक्षकी शाखाओंके चारोंओर चेष्टा करताहै वही पूर्ण वर्ष है १० उसके छः मुख ऋतु और बारह चरण महीने कहे हैं इसी प्रकार जो चूहे और सर्प वृक्षको काटते हैं ११ उनको विचारवान् पुरुषों ने दिन रात्रि कहाहै उसमें जो वह भौंरे हैं वह नाना इच्छा कही हैं १२ और जो वह शहद की बहुतसी धारा गिरती हैं उनको कामरस जानो जिसमें मनुष्य डूबते हैं १३ जिन्होंने इस प्रकार संसार-चक्र की गतिको जाना है निश्चय करके वह मनुष्य संसारचक्र के पाश को काटते हैं १४ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे महात्मन्, तत्त्वदर्शिन् ! आश्चर्य है कि आपने मोक्ष देने-वाली कथा कही उसको आप फिर मुख्यता समेत कहो मैं सुनना चाहता हूं १ विदुरजी बोले सुनो मैं फिर उस मार्ग के क्रमको कहताहूं जिसको सुनकर ज्ञानीलोग संसारसे छूटते हैं २ हे राजन् ! जैसे कि बड़े मार्ग में नियत मनुष्य जहां तहां थक कर निवास करता है ३ हे भरतवंशिन् ! इसी प्रकार अज्ञानी मनुष्य संसार में सृष्टिरूप गर्भ में बारम्बार निवास को करता है और ज्ञानी लोग शीघ्र जाते हैं ४ इस हेतु से शास्त्रज्ञ लोगोंने इसको मार्ग कहा है और जिन ज्ञानियों ने जिस संसार को घन वन कहा है ५ हे पुरुषोत्तम ! वह इन स्थावर और जङ्गम जीवों का चलायमान चक्र है पण्डित उसकी इच्छा नहीं करता है ६ शरीरधारियों के शरीर और चित्तसे सम्बन्ध रखनेवाले जो रोग हैं उनको ज्ञानी लोग गुप्त और प्रकटरूप सर्प कहते हैं ७ हे भरतवंशिन् ! निर्बुद्धि मनुष्य उन्हींसे दुःख पानेवाले और घायल होकर भी अपने कर्म-रूपी सर्पों से व्याकुलता को नहीं पाते हैं हे राजन् ! जब मनुष्य उन रोगों से भी छूटता है तब उस पुरुष को रूप की विनाश करनेवाली जरावस्था दबा लेती है ८ । ९ जो कि शब्द, रूप, रस, स्पर्श और नाना प्रकार की

गन्धियों से भी निराधार बड़ी कीच में चारों ओरसे डूबा हुआ है पूर्ण वर्ष छःऋतु बारह महीने दोनों पक्ष दिनरात और उनकी सन्धियां यह सब क्रमपूर्वक उसके रूप और अवस्थाको क्षीण करते हैं १०।११ यह कालकी निधि है दुर्बुद्धि लोग उनको नहीं जानते हैं सब जीवोंको उनके कर्म से ईश्वरका लिखा हुआ कहा है १२ शरीरधारियों का देह रथ है चिन्ता सारथी है इन्द्रिय घोड़े हैं और कर्म बुद्धि उस रथकी बागडोर है १३ जो पुरुष उन दौड़नेवाले घोड़ोंके पीछे दौड़ता है वह इस संसारचक्रमें चक्रके समान घूमता है १४ जो जितेन्द्रिय उनको बुद्धि से आधीन करता है वह चक्रके समान घूमनेवाले इस संसारचक्र में लौटकर नहीं आता है १५ वह संसार में भी घूमते हैं परन्तु घूमतेहुये मोहको नहीं पाते हैं और पूर्व प्रकारसे घूमता हुआ पुरुष मोहसे राज्यपुत्र और सुहृज्जनों के विनाशको पाता है १६ हे राजन्! जिस दुःखको तुमने पाया है वही दुःख संसार के घूमनेवालों के लिये भी उत्पन्न होता है १७ इस हेतुसे ज्ञानीको उचित है कि इस संसार से छूटने का उपाय करे इसमें कभी भूल और देर न करनी चाहिये नहीं तो सैकड़ों शाखावाला वृक्ष वृद्धिको पाता है १८ हे राजन्! जो पुरुष जितेन्द्रिय क्रोध लोभसे रहित सन्तोषी और सत्यवक्ता है वह शान्ति को पाता है १९ हे भरतवंशिन्! यह भी कहा है कि पश्चात्ताप करनेसे दुःख होता है ज्ञानी बड़े दुःखों की औषधि ज्ञानकोही समझे २० इस लोक में जितेन्द्रिय मनुष्य बड़ी दुष्प्राप्य ज्ञानरूपी महाऔषधि को पाकर दुःखरूपी बड़े रोगको उससे काटे २१ घोर दुःखसे वैसे न तो पराक्रम छुड़ाता है न धन मित्र और सुहृद्गण छुड़ाते हैं जैसे कि जितेन्द्रियात्मा छुड़ाता है २२ हे भरतवंशिन्! इस कारण से सब जीवों की प्रीति में नियत होकर सुन्दर प्रकृतिको पाकर जितेन्द्रियपन त्याग और सावधानी को प्राप्त करे यह तीनों ब्रह्मके घोड़े हैं २३ हे राजन्! जो पुरुष मृत्युके भयको त्याग करके शीतल किरणों से युक्त चित्तरूपी रथपर नियत है वह ब्रह्मलोकको पाता है २४ और जो पुरुष सब जीवों को निर्भयता देता है वह सर्वव्यापी परमेश्वर के उस उत्तम स्थान को जाता है जो कि मायाकी उपाधियों से रहित है २५ मनुष्य जो निर्भयता देने से फल पाता है वह हजारों यज्ञ और सदैव व्रतोंके भी करनेसे नहीं पासक्ता है २६ जीवों में आत्मा से अधिक कोई प्यारा नहीं है हे भरतवंशिन्! सब जीवों का अप्रिय मरण नाम है इस हेतुसे ज्ञानीको सब जीवोंपर दया करना चाहिये नाना प्रकार

के मोहसे युक्त अज्ञानके जालसे ढकेहुये २७ । २८ अल्पदृष्टि निर्बुद्धि मनुष्य जहां तहां घूमते हैं हे राजन्! सूक्ष्मदृष्टिवाले ज्ञानी सनातन ब्रह्मको पाते हैं २९ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि राजा धृतराष्ट्र विदुरजीके इस वचन को सुनकर पुत्र-शोक से दुःखी और मूर्च्छावान् होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा १ सब बान्धव, व्यास जी, विदुरजी, सञ्जय अन्य सुहृद् द्वारपाल और जो २ उसके अङ्गीकृत थे उन सबने उस प्रकार पृथ्वीपर पड़े हुये अचेत उस धृतराष्ट्र को देखकर सुखदायी शीतल जलसे छिड़का और पंखोंसे हवा करी २ । ३ और उपायों से चैतन्य करतेहुये उन लोगोंने हाथोंसे शरीरको स्पर्श किया इसके पीछे उस दशावाले धृतराष्ट्रको बहुत देरतक विश्वास कराया ४ फिर बहुत देरके पीछे सचेतताको पानेवाला वह पुत्रशोकसे युक्त राजा धृतराष्ट्र बहुत देरतक विलाप करनेवाला हुआ निश्चय करके मनुष्योंमें जन्मको और नरलोकों में परिग्रहको धिकार है जिससे कि दुःखका मूल बारम्बार उत्पन्न होता है ५ । ६ हे समर्थ ! पुत्र धन ज्ञानवाले और नातेदारों का भी नाश होताहै और विषाग्नि के समान बहुत बड़ा दुःख प्राप्त होता है ७ जिससे सब अंग भस्म होकर बुद्धिका भी नाश होता है और जिससे भयभीत मनुष्य मरणको बहुत मानता है ८ सो यह दुःख प्रारब्ध के विपरीततासे मैंने पाया है प्राणत्याग के सिवाय उसके अन्तको अन्य किसी प्रकारसे नहीं पाता हूं ९ मैं उसी प्रकार करूंगा हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, व्यासजी ! देखो उस धृतराष्ट्रने बड़े ब्रह्मज्ञानी महात्मा पिता से यह कहकर अचेतताको पाके बड़े शोकको पाया अर्थात् वह राजा धृतराष्ट्र ध्यान करता हुआ मौन हो-गया १० । ११ प्रभु व्यासजी उसके उस वचनको सुनकर पुत्रशोकसे दुःखी अपने पुत्रसे यह वचन बोले १२ हे महाबाहो, धृतराष्ट्र ! जो मैं कहूं उसको सुनो तुम शास्त्रज्ञ और शास्त्रोंके स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी और धर्म अर्थ में भी कुशलहो १३ हे शत्रुओं के तपानेवाले ! तुझसे कोई बात अज्ञात नहीं है हे बड़े ज्ञानी ! तुम जीवधारियों की अनित्यताको जानते हो हे भरतवंशिन् ! इस विनाशवान् जीवलोकमें विनाशवान् निवासस्थानके होनेपर जीवन और मृत्यु में किस निमित्त सोचते हो १४।१५ हे राजेन्द्र ! इस शत्रुता की प्रत्यक्षता आपके

दृष्टिगोचर है कालयोग से आपके पुत्रको कारण बनाकर सब मारे गये १६ हे राजन् ! कौरवोंको अवश्य भावी नाश होनेपर उन परम गति पानेवाले वीरों को किस हेतुसे सोचते हो १७ हे महाबाहो, राजा धृतराष्ट्र ! मैंने और बुद्धिमान् विदुरने भी सब प्रकार से सन्धि में उपाय किया १८ बहुत काल तक उद्योग करनेवाले किसी जीवसे भी दैवका रचा हुआ मार्ग मेरे मत से बन्द करने के योग्य नहीं है १६ मैंने अपने नेत्रों के समक्ष में देवताओं का जो कार्य सुना मैं उसको उसी प्रकार से कहता हूं जिससे कि तेरी बुद्धि स्थिर होय २० थकावट से रहित मैं एक समय बड़ी शीघ्रता से इन्द्रकी सभा में गया और सब इकट्ठे हुये देवताओं को देखा २१ हे राजन् ! वहांपर मैंने नारदादिक सब देवऋषियों को और पृथ्वीको भी देखा २२ यह सब मिलकर अपने कार्य के निमित्त इन्द्रादिक देवताओं के सम्मुख वर्तमान हुये तब पृथ्वी ने समीप जाकर उन इकट्ठे देवताओं से कहा २३ कि हे महाभाग, देवतालोगो ! आप लोगोंने ब्रह्मलोक में जिस मेरे कार्य करने की प्रतिज्ञा की है उसको शीघ्र करो २४ लोकपूजित विष्णुजी देवसभामें उसके उस वचन को सुनकर हँसते हुये उस पृथ्वी से यह वचन बोले २५ धृतराष्ट्रके सौ बेटों में बड़ा बेटा दुर्योधन नाम से प्रसिद्ध है वह तेरा कार्य करेगा २६ उस राजाको पाकर तू अभीष्ट प्राप्त करेगी उसके पीछे कुरुक्षेत्र में इकट्ठे होनेवाले और दृढ़ शस्त्रों से प्रहार करनेवाले राजालोग परस्पर मारेंगे हे देवि ! इसके पीछे युद्धमें तेरे भारका नाश होगा २७ । २८ हे शोभने ! शीघ्र अपने स्थान को जावो और सृष्टि को धारण करो हे राजाओं में श्रेष्ठ, राजा धृतराष्ट्र ! संसारके नाशके कारण से वह तेरा पुत्र २६ कलियुग अंश गान्धारी में उत्पन्न हुआ था जोकि अशान्त चपल क्रोध का अभ्यासी और दुःख से पराजय होनेवाला था ३० दैवयोग से उसके भाई भी उसी प्रकार के उत्पन्न हुये और मामा शकुनी और बड़ा मित्र कर्ण ३१ और बहुत से राजालोग संसार के नाश के निमित्त उत्पन्न हुये जैसा राजा उत्पन्न होता है उसी प्रकार के उसके आदमी भी उत्पन्न होते हैं ३२ जो स्वामी धर्म का अभ्यासी होता है उस दशामें अधर्म भी धर्मता को पाता है स्वामियों के गुण दोषों से निस्सन्देह उसी प्रकार के नौकर चाकर होंगे ३३ हे राजन् ! तेरे पुत्र दुष्ट राजाको पाकर इस संसारसे गये महाबाहु नारदजी इस प्रयोजनको मुख्यता समेत जानते हैं ३४ । ३५ हे भरतवंशिन् ! तेरे पुत्र महात्मा पाण्डव हैं वह

थोड़ा भी अपराध नहीं करते जिन्होंके हाथ से यह सब संसार मारागया ३६ तेरा भला होय प्रथम ही राजसूय यज्ञ में नारदजी ने युधिष्ठिरकी सभा में वर्णन किया था ३७ कि हे कुन्ती के पुत्र, युधिष्ठिर ! कुछ काल पीछे कौरव और पाण्डव परस्पर सम्मुख होकर नाशको पावेंगे जो तेरे करने के योग्य है उसको कर ३८ तब पाण्डवोंने नारदजीके वचन को सुनकर सोच किया यह देवताओं की गुप्त और सनातन बातें मैंने तुझसे कहीं ३९ अब तू अपने प्राणोंपर दया और पाण्डवों पर प्रीति कर जिससे कि दैवके कर्मको जानकर तेरा शोक दूर होय ४० हे महाबाहो ! यह बात मैंने प्रथमही सुनी थी जो कि धर्मराजके उत्तम राजसूययज्ञ में कही गई थी ४१ मुझसे गुप्तबात के कहनेपर धर्मराज के पुत्रने कौरवोंके युद्ध न होनेमें उपाय किये परन्तु दैव बड़ा प्रबल है ४२ हे राजन् ! काल की रची हुई जो सनातन विधि है वह इस लोक में किसी जीवधारी से उल्लंघन करनेके योग्य नहीं है ४३ हे भरतवंशिन्, धर्मात्मन् ! आप प्राणियों की गति और अगतियों को भी जानकर इनमें अचेत होते हो धर्मात्मा और बुद्धिमान् ४४ राजा युधिष्ठिर तुमको शोक से दुःखी और बारबार अचेत होने-वाला जानकर अपने प्राणोंको भी त्याग करसक्ता है ४५ वह धैर्यवान् सदैव पशु पक्षियोंपर भी दयाका करनेवाला है हे राजेन्द्र ! वह तुझपर कैसे कृपा नहीं करेगा ४६ हे भरतवंशिन् ! मेरी आज्ञा से दैवके उल्लंघन न होनेसे और पाण्डवों की दया से प्राणों को धारण करो अर्थात् जीते रहो ४७ इस प्रकार लोकमें तुझ वर्तमान रहनेवाले की कीर्ति होगी और हे तात ! बड़ा धर्म और बहुत कालतक तपा हुआ तप प्राप्त होगा ४८ हे महाराज ! ज्वलित रूप अग्नि के समान उत्पन्न होनेवाले पुत्र शोक को ज्ञानरूपी जल से शान्त करने के योग्य हो ४९ वैशम्पायन बोले कि धृतराष्ट्र उन बड़े तेजस्वी व्यासजी के इस वचन को सुनकर एक मुहूर्त अच्छे प्रकार ध्यान करके ५० यह बोला कि हे पितः ! मैं बड़े शोकजाल से कठिन ढका हुआ बारम्बार अचेत होता सचेतता में नहीं आता हूं ५१ दैवकी आज्ञासे उत्पन्न होनेवाले आपके इस वचन को सुन कर मैं प्राणों को धारण करूंगा अर्थात् जीता रहूंगा और शोच करने में प्रवृत्त नहीं हूंगा ५२ हे राजेन्द्र ! सत्यवती के पुत्र व्यासजी धृतराष्ट्र के इस वचन को सुनकर उसी स्थान में अन्तर्धान होगये ५३ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय॥

जनमेजय बोले हे ब्रह्मर्षे! भगवान् व्यासजी के जानेपर राजा धृतराष्ट्रने क्या किया वह मुझसे कहने को योग्य हो १ उसी प्रकार धर्मपुत्र बड़े साहसी राजा युधिष्ठिर और कृपाचार्यादिक तीनोंने क्या किया २ अश्वत्थामाका कर्म सुना और परस्पर दिया हुआ शाप सुना अब आप उस पूर्व वृत्तान्तको कहिये जिसको सञ्जयने कहा है ३ वैशम्पायन बोले कि दुर्योधनके और सब सेनाके मरनेपर अचेत सञ्जय धृतराष्ट्र के पास आये ४ हे राजन्! सब राजा नाना देशोंसे आकर आपके पुत्रों समेत पितृलोकोंको गये ५ हे भरतवंशिन्! सदैव प्रवृत्त अन्तमें शत्रुता करनेके अभिलाषी आपके पुत्रके कारणसे सब संसार मारा गया ६ हे राजन्! पुत्र पौत्र और पिता आदिक जो रणभूमिमें मरे हैं उन सबके कर्मोंको क्रमपूर्वक करावो ७ वैशम्पायन बोले कि राजा धृतराष्ट्र सञ्जय के उस घोर वचनको सुनकर निर्जीव के समान निश्चेष्ट होकर पृथ्वीपर गिर पड़ा ८ सब धर्मोंके ज्ञाता विदुरजी उस पृथ्वीपर सोनेवाले राजाके पास आकर इस वचनको बोले ९ हे भरतर्षभ, लोकेश्वर राजा धृतराष्ट्र! उठो शोच मत करो सब जीवधारियों की यही परम गति है १० हे भरतवंशिन्! जीव प्रारम्भ में अभावरूप है मध्य में भावरूप है उसमें क्या विलाप करना चाहिये ११ सोचता हुआ मृत्युको नहीं पाता है न सोचता हुआ मनुष्य मरता है ऐसे स्वभाववाले लोक में किसलिये शोच करते हो १२ युद्ध न करता मरता है और युद्ध करता नहीं मरता है हे महाराज! कोई जीव काल को पाकर उल्लङ्घनकर वर्तमान नहीं रहता १३ यह काल नानाप्रकारके सब जीवों को खैंचता है हे कौरवश्रेष्ठ! कालका कोई मित्र है न शत्रु है १४ जिस प्रकार वायु सब ओर तृणोंकी नोकोंको तिर्रे बिर्रे करता है उसी प्रकार जीव भी काल के आधीन होते हैं १५ एक साथ चलनेवाले और वहां जानेवाले सब जीवों के मध्य में जिसको काल प्राप्त होता है वहां कौन विलाप है १६ हे राजन्! तुम जिन मृतकों को सोचते हो वह महात्मा शोचके योग्य नहीं हैं वह सब स्वर्ग को गये १७ दक्षिणावाले यज्ञ तप और ब्रह्मज्ञानके द्वारा उस प्रकार स्वर्गको नहीं पाते हैं जैसे कि शरीर की प्रीति त्यागनेवाले शूरवीर पाते हैं १८ सब वेद के जाननेवाले अच्छे प्रकार व्रत करनेवाले और सब सम्मुख लड़नेवाले शूर मारे गये इसमें कौन विलाप है

उन उत्तम पुरुषों ने शूरों की शरीररूपी अग्नियों में बाणों को होमा और होमेहुये बाणोंको सहा १९।२० हे राजन्! इस प्रकारके स्वर्ग के उत्तम मार्ग को तुमसे कहताहूं इस लोकमें युद्धसे विशेष क्षत्रियका कुछ कर्म वर्तमान नहीं है २१ उन महात्मा शूर और युद्धको शोभा देनेवाले क्षत्रियों ने परमगति को पाया वह सब शोचके योग्य नहीं हैं २२ हे पुरुषोत्तम! बुद्धि से चित्त को विश्वास देकर शोच मत करो अब शोक में डूबेहुये तुम करने के योग्य जलदानादिक क्रियाके त्यागने के योग्य नहीं हो २३॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि धृतराष्ट्रविदुरवाक्यंनाम नवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र विदुरजी के उस वचन को सुनकर सवारी तैयार करो यह कहकर फिर वचनको बोला १ वधू कुन्तीआदि अन्य सब स्त्रियों को लेकर गान्धारी समेत सब भरतवंशियों की स्त्रियों को शीघ्र लावो २ वह धर्मात्मा शोक से हतचित्त बुद्धिमान् धृतराष्ट्र बड़े धर्मवान् विदुरजी से इस प्रकार कहकर सवारीपर सवारहुये ३ पतिके वचन से चलायमान शोकसे पीड़ित गान्धारी कुन्ती और अन्य सब स्त्रियों समेत वहां गये जहांपर राजा धृतराष्ट्र थे ४ अत्यन्त शोकयुक्त वह स्त्रियां राजाको पाकर परस्पर वार्तालाप करके चलीं और बड़े उच्चस्वर से पुकारीं ५ उन स्त्रियोंसे अधिक पीड़ावान् उन विदुरजी ने आंसुओं से पूर्ण उन स्त्रियों को अच्छी रीति से विश्वास कराया और पालकियों में बैठाकर बाहर चले ६ इसके पीछे कौरवों के सब स्थानों में बड़ा शब्द उत्पन्न हुआ और सब नगर लड़कों से वृद्धोंतक शोक से पीड़ावान् हुआ पूर्व समयमें जो स्त्रियां देवसमूहों से भी नहीं देखीगईं थीं वह सब विधवा स्त्री अन्य अन्य मनुष्यों से भी देखीगईं ७।८ शिरके बालों को फैलाकर और सुन्दर भूषणों को उतारकर एक वस्त्र रखनेवाली स्त्रियां अनाथके समान बाहर निकलीं वह स्त्रियां श्वेत पर्वतों के समान गृहों से ऐसे निकलीं जैसे कि पहाड़ोंकी गुफाओंसे ऐसी हिरणी निकलें जिनके कि यूथप हिरण मारेगये हों ९।१० हे राजन्! तब उन स्त्रियों के बड़े २ समूह शोकसे पीड़ावान् ऐसे चले जैसे कि घोड़ियोंके बच्चे मैदान में निकलते हैं ११ भुजाओं को पकड़कर पिता भाई और पुत्रों को भी पुकारती हुईं प्रलयकालीन संसार के नाश की

दिखलानेवाली हुई १२ विलाप करते रोते जहां तहां दौड़ते शोकसे हतज्ञान उन स्त्रियोंने करने के योग्य कर्मको नहीं जाना १३ पूर्व समय में स्त्रियों ने सखियोंकी भी लज्जाको पाया वह एक वस्त्र रखनेवाली विना परदेवाली स्त्रियां सासों के आगे २ चलीं १४ हे राजन् ! जिन्होंने बहुत थोड़े शोकोंमें परस्पर विश्वास कराया तब उन शोक से व्याकुल स्त्रियों ने परस्पर देखा १५ उन रोनेवाली हजारों स्त्रियों से घिराहुआ महादुःखी धृतराष्ट्र नगर से चलकर शीघ्र ही मैदानमें गया १६ शिल्पी व्यापारी वैश्य और सब कर्मों से निर्वाह करनेवाले वह सब राजाको आगे करके नगरसे बाहर निकले १७ कौरवों के नाश में उन पीड़ावान् और पुकारनेवालों के बड़े शब्द सब भवनों को पीड़ावान् करते प्रकट हुये १८ जैसे कि प्रलयकाल वर्तमान होनेपर भस्म होनेवाले जीवों का नाश होता है उसी प्रकार इस नाशका भी होना जीवों ने माना १९ अर्थात् हे महाराज ! इस कौरवों के नाश होनेपर अत्यन्त व्याकुल चित्त बड़े प्रीतिमान् वह पुरवासी कठिनता से पुकारे २० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि धृतराष्ट्रनिर्गमने दशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि फिर एककोस जाकर उन कृपाचार्य अश्वत्थामा और कृतवर्मा महारथियोंको देखा १ वह शोकके अश्रुओंसे पूर्ण कण्ठसे रोदन करते ज्ञानरूप नेत्र रखनेवाले अपने स्वामी राजाको देखतेही बहुत श्वास लेकर यह वचन बोले २ हे महाराज, राजा धृतराष्ट्र ! आपका पुत्र बड़े कठिन कर्म को करके साथियों समेत इन्द्रलोक को गया ३ हे भरतर्षभ ! दुर्योधन की सेनामें से हम तीन रथी बचे हैं शेष सब आपकी सेना नाश होगई ४ इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य राजासे यह कहकर पुत्रशोकसे पीड़ावान् गान्धारी से यह वचन बोले कि निर्भय युद्ध करनेवाले शत्रुओं के बहुत समूहों को मारनेवाले वीरलोगों के कर्मों को करके उन तेरे पुत्रों ने मरणको पाया ५ । ६ निश्चय करके वह शस्त्रों से विजय कियेहुये निर्मल लोकोंको पाकर और प्रकाशमान शरीर में नियत होकर देवताओं के समान विहार करते हैं ७ उन शूरोंमें से कोई शूरवीर मुख फेरनेवाला नहीं हुआ किन्तु शस्त्रोंसे मरणको पाया और हाथ जोड़कर किसीने भी नाश को नहीं पाया ८ प्राचीन वृद्धों ने इस प्रकार युद्ध

में शस्त्रोंसे क्षत्रियके मरणको परमगति कहा है इस हेतुसे वह शोचकरनेके योग्य नहीं हैं ६ हे राजन्! उन्होंके शत्रु पाण्डव भी वृद्धियुक्त नहीं हैं अश्वत्थामा आदिक हमलोगों ने जो किया उसको सुनो १० अधर्म के साथ भीमसेन के हाथ से तेरे पुत्रको मराहुआ सुनकर हमलोगोंने सोतेहुये लोगोंसे युक्त डेरेको पाकर पाण्डवीय शूरवीरों का नाश किया ११ सब पाञ्चाल जिनका अग्रवर्ती धृष्टद्युम्नथा उन सबको मारा राजा द्रुपद के और द्रौपदी के सब पुत्रोंको भी मारा १२ इस रीतिसे हम युद्ध में तेरे पुत्रके शत्रुसमूहों का नाश करके भागे हैं इस हेतु से हम तीनों यहां नियत होने को समर्थ नहीं हैं १३ वह शूरवीर पाण्डव महाधनुषधारी क्रोधके आधीन शत्रुता का बदला लेने के अभिलाषी हमारी खोजमें शीघ्रता से आते हैं १४ हे यशस्विनि! वह पुरुषोत्तम शूर अपने पुत्रोंको मराहुआ सुनकर मतवाले और खोज करने के अभिलाषी शीघ्र आते हैं १५ हे राजन्! तुम आज्ञा दो और बड़े धैर्य में नियत हो प्रारब्धके अन्तपर होनेवाली मृत्युको और शुद्ध क्षत्रियधर्मको भी विचारो १६ हे भरतवंशिन्! कृपाचार्य कृतवर्मा और अश्वत्थामा इन तीनों ने इस प्रकार राजा से कहकर और प्रदक्षिणा करके १७ बुद्धिमान् राजा धृतराष्ट्र को देखते अपने घोड़ों को गंगाजी की ओर चलायमान किया १८ हे राजन्! तब वह महारथी दूर जाकर परस्पर बिदा होकर व्याकुलचित्त तीनों तीनों ओरको चलदिये १९ उनमें से शारद्वत कृपाचार्य हस्तिनापुर को, कृतवर्मा अपने देशको और अश्वत्थामा व्यासजीके आश्रमको गये २० इस रीतिसे वह वीर उन महात्मा पाण्डवों का अपराध करके भयसे पीड़ावान् परस्पर देखतेहुये चलदिये २१ अर्थात् वह शत्रुविजयी महात्मा वीर सूर्योदयसे पूर्वही इच्छानुसार चलदिये २२ हे राजन्! कृतवर्मा और कृपाचार्य से अश्वत्थामाके जुदे होनेपर उन महारथी पाण्डवोंने द्रोणाचार्य के पुत्रको पाकर और पराक्रम करके युद्धमें विजय किया २३ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वण्येकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि सब सेनाओं के मरनेपर धर्मराज युधिष्ठिरने हस्तिनापुर से निकलेहुये अपने वृद्धपिताको सुना १ हे महाराज! तब पुत्रशोकसे पीड़ावान् वह युधिष्ठिर भाइयों समेत उस पुत्रशोक से पूर्ण बड़ी चिन्तावाले

धृतराष्ट्र की ओर चला २ महात्मा वीर श्रीकृष्णजी सात्यकी और युयुत्सु इन तीनों समेत चला ३ और बड़े दुःखसे पीड़ित शोकमें डूबीहुई द्रौपदी पाञ्चालों की उन स्त्रियों समेत जो वहां आतीथीं उसके पीछे चलीं ४ हे भरतर्षभ! उसने गंगाजी के समीप कुररी पक्षी के समान पीड़ित होकर पुकारती हुई स्त्रियों के समूहों को देखा ५ उन पुकारनेवाली ऊपरको हाथ महापीड़ित इन प्रिय अप्रिय वचनों समेत रोनेवाली हज़ारों स्त्रियों से वह राजा धृतराष्ट्र घिरा हुआ था कि अब राजा युधिष्ठिरकी वह दया और धर्मज्ञता कहां है जो पिता भाई मित्र और गुरुओंके पुत्रोंको भी मारा ६ । ७ हे महाबाहो ! द्रोणाचार्य भीष्मपितामह और जयद्रथको भी मरवाकर तेरा चित्त कैसा हुआ ८ हे भरतवंशिन्! पिता भाई और द्रौपदीके पुत्र और अजेय अभिमन्यु को न देखनेवाले तुझको राज्यसे कौन प्रयोजन है ९ हे महाबाहो ! धर्मराज युधिष्ठिरने कुररी पक्षी के समान पुकारनेवाली उन स्त्रियोंको उल्लंघन करके ताऊजी को दण्डवत् करी १० इसके पीछे शत्रुओं के विजय करनेवालेने ताऊजीको नमस्कार करके अपने नामको कहा और उन सब पाण्डवोंने भी अपना २ नाम वर्णन किया ११ पिता और पुत्रों के मरनेसे पीड़ावान् और अप्रसन्न शोकदुःखी धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंके नाश करनेवाले उस युधिष्ठिरसे स्नेहपूर्वक मिला १२ हे भरतवंशिन् ! धर्मराजसे मिलकर और विश्वास देकर फिर जलानेवाले अग्नि के समान दुष्टात्मा ने भीमसेनको चाहा १३ शोकरूप वायुसे चलायमान उसके क्रोधकी वह अग्नि भीमसेनरूपी वनको जलाने की अभिलाषिणी दिखाई पड़ी १४ हे राजन् ! हरिने भीमसेन के विषय में उसके अशुभ संकल्पको जानकर प्रथमही सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी ने वह मूर्ति मँगाली थी १५ जो लोहेकी मूर्ति पूर्व समय में राजा दुर्योधनने बनवाई थी और चित्तसे भीमसेनको चिन्तन करके योगभूमिमें जिसका आवाहन किया था बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णजीने प्रथमही उसकी चेष्टासे प्रकट होनेवाले वृत्तान्त को जानकर और भीमसेन को हाथोंसे रोककर लोहेका भीमसेन धृतराष्ट्र के हाथमें देदिया १६ । १७ वहां बड़े ज्ञानी श्रीकृष्णजीने यह कर्म किया उस लोहेके भीमसेनको हाथोंसे पकड़कर १८ उसको भीमसेन मानकर बलवान् राजा ने तोड़डाला साठ हज़ार हाथीके बलसमान उस बलवान् राजा ने लोहेके भीमसेनको तोड़कर १९ घायल छातीवाले ने मुख से रुधिरको गिराया इसके पीछे इसी प्रकार रुधिर से भराहुआ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा २०

जैसे कि प्रफुल्लित नोक शाखावाला पारिजात नाम वृक्ष गिरता है तब बुद्धिमान् सञ्जयने उसको पकड़लिया २१ और शान्तिपूर्वक विश्वास कराताहुआ उससे बोला कि इस प्रकार मत करो फिर वह बड़ा साहसी क्रोधसे पृथक् और रहित होकर २२ शोकसे युक्त राजा हाय भीमसेन यह शब्द कहके पुकारा उसको भीमसेन के मारने से पीड़ावान् और क्रोध से रहित जानकर २३ पुरुषोत्तम वासुदेवजी यह वचन बोले हे समर्थ, धृतराष्ट्र! शोच मत करो यह भीमसेन तुम्हारे हाथ से नहीं मारागया तुमने यह लोहेकी मूर्ति गिराई है २४ हे भरतर्षभ! तुमको क्रोध के वशीभूत देखकर मृत्युकी डाढ़ में गयाहुआ भीमसेन मैंने खैंचा २५ हे राजाओं में श्रेष्ठ! कोई तेरे समान बलवान् नहीं है हे महाबाहो! कौन मनुष्य तेरी भुजाओंके पकड़नेको सहसक्ता है २६ जैसे कि मृत्युको प्राप्त होकर कोई जीवता नहीं छूटता है इसी प्रकार तेरी भुजाओंके मध्यको पाकर कोई जीवता नहीं रहसक्ता है २७ हे कौरव! जिस हेतुसे आपके पुत्रने भीमसेनकी जो यह लोहेकी मूर्ति बनवाई वही मूर्ति मैंने तेरे पास वर्तमान करी २८ हे राजेन्द्र! पुत्रशोकसे दुःखी तेरा चित्त धर्म से पृथक् हुआ था इस हेतुसे तुम भीमसेन को मारना चाहते थे २९ हे राजन्! यह आपको योग्य नहीं है जो तुम भीमसेन को मारा चाहतेहो क्योंकि आपके पुत्र आयुर्दाय पूर्ण होजानेके कारण से किसी दशामें भी जीवते नहीं रहसक्ते थे ३० इस हेतुसे सन्धिको अंगीकार करनेवाले हम लोगों ने सन्धि के विषय में जो कर्म किया उस सबको ध्यान करो शोक में चित्त मत करो ३१ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि आयसपुरुषभंगोनाम द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि इसके अनन्तर नौकर लोग स्नान करानेके निमित्त इसके पास आकर वर्तमान हुये मधुसूदनजी इस स्नानसे निवृत्त होनेवाले राजा से बोले कि हे राजन्! तुमने वेद और नानाप्रकारके शास्त्र पढ़े पुराणों समेत शुद्ध राजधर्मों को सुना १ । २ इस प्रकार पण्डित और बड़े ज्ञानी बलाबलमें समर्थ होकर तुम अपने अपराधसे ऐसे क्रोधको किस निमित्त करतेहो हे भरतवंशिन्! तभी मैंने भीष्मने द्रोणाचार्य ने और सञ्जयने भी तुमसे कहाथा परन्तु हे राजन्! तुमने उस वचनको नहीं किया ३ । ४ हे कौरव! उस समय पाण्डवों

को बल और वीरतामें अधिक जानते और बारम्बार निषेध कियेहुये भी तुमने हमारे वचन को नहीं किया ५ जो नियतबुद्धि राजा आप दोषों समेत देश कालके विभाग को विचारता है वह परम कल्याण को पाता है ६ हित अनहित में समझाया हुआ जो पुरुष कल्याण वचनको अंगीकार नहीं करता है वह अनीति में नियत आपत्तिको पाकर शोचता है ७ हे राजन्! इस हेतुसे विपरीत चलनेवाले अपने को देखो वृद्धों के वचनों से विपरीत चित्तवाले तुम दुर्योधनकी आधीनता में नियतहुये ८ और अपनेही अपराधसे आपत्ति में फँसे सो तुम भीमसेनको क्यों मारना चाहतेहो इस हेतुसे तुम अपने क्रोधको दूर करो और अपने दुष्ट कर्मों को स्मरण करो ९ जिस नीच ने ईर्षा से उस द्रौपदी को सभा में बुलाया वह शत्रुताको बदला लेने के अभिलाषी भीमसेनके हाथ से मारागया १० अपनी और अपने दुरात्मा पुत्रकी अमर्यादगी को देखो जो तुमने निरपराधी पाण्डवों को त्याग किया अर्थात् राज्यका भाग नहीं दिया ११ वैशम्पायन बोले हे जनमेजय! श्रीकृष्णजी के इस प्रकारके सत्य २ वचनों को सुनकर उस राजा धृतराष्ट्रने देवकीनन्दन से कहा १२ कि हे महाबाहो, माधव जी! जो आप कहते हैं वह सब यथार्थ है परन्तु पुत्रकी बड़ी बलवान् प्रीति ने मुझको धैर्य से पृथक् कर दिया १३ हे श्रीकृष्णजी! प्रारब्धकी बात है कि तुमसे रक्षित बलवान् सत्य पराक्रमी भीमसेनने मेरी भुजाके मध्यको नहीं पाया १४ हे माधवजी! अब सावधान क्रोध से रहित विगतज्वर मैं मझले वीर पाण्डवको देखा चाहता हूं महाराजाओं के और पुत्रों के मरनेपर मेरे सुख और प्रीति पाण्डवों में नियत होते हैं १५ । १६ इसके पीछे बहुत रोतेहुये उस राजाने उन सुन्दर अंगवाले भीमसेन अर्जुन और पुरुषों में बड़े वीर नकुल और सहदेव को भी अंगों से स्पर्श किया और उन्होंको विश्वास देकर कल्याण के वचन कहे अर्थात् आशीर्वाद दिये १७ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिके धृतराष्ट्रकोपविमोचने पाण्डवपरिष्वंगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि इसके पीछे धृतराष्ट्रसे आज्ञा लेकर वह कौरव पाण्डव भाई केशवजी समेत गान्धारी के पास गये १ इसके पीछे पुत्रोंके शोकसे पीड़ावान्

निर्दोष गान्धारी ने उस मृतक शत्रुवाले युधिष्ठिर को पास आया हुआ जानकर शाप देना चाहा २ व्यासऋषि प्रथमही पाण्डवों के विषय में उसके पापरूप चित्त के विचारको जानकर सावधान हुये ३ और चित्तके समान शीघ्रगामी होकर वह महर्षि श्रीगंगाजीके पवित्र और सुगन्धित जल में स्नान आचमन करके उस स्थानपर आ पहुँचे और दिव्य नेत्रयुक्त अपने चित्त से देखते उस ऋषिने वहां सब जीवों के चित्त के वृत्तान्त को जाना ४ । ५ शापके समयको निरादर करके कालकी शान्तिको वर्णन करते वह महातपस्वी कल्पवादी ऋषि पुत्रवधू से बोले ६ कि हे गान्धारि ! पाण्डव के ऊपर क्रोध न करना चाहिये अपने शाप वचन को रोककर इस मेरे वचनको सुनो ७ अठारह दिनतक विजय के अभिलाषी पुत्रने कहा है कि हे मातः ! शत्रुओंके साथ मुझ युद्ध करनेवाले को शुभाशीर्वाद दो ८ हे गान्धारि ! उस विजयाभिलाषी से समय २ पर प्रार्थना करी हुई तुमने कहा है कि जिधर धर्म है उधरही विजय है ९ हे गान्धारि ! मैं पूर्व समय में तुझ दुर्योधन के शुभाशीर्वाद से प्रसन्न करनेवाले के कहेहुये वचन को मिथ्या स्मरण नहीं करता हूं तुम उस प्रकारकी समाधि धारण करनेवाली हो १० इसी से राजाओं के कठिन युद्ध में पारको पाकर पाण्डवों ने युद्ध में निस्सन्देह विजय को पाया निश्चय करके उधरही धर्म अधिक है ११ पूर्वसमयमें ऐसी क्षमावती होकर अब किस हेतुसे तू क्षमा नहीं करती है हे धर्मकी जानने वाली ! अधर्म को त्यागो जिधर धर्म है उधरही विजय है १२ हे मनस्विनि, सत्यवादिनी,गान्धारि ! अपने धर्मको और कहेहुये वचनको स्मरण करके क्रोध को रोको और इस दशावाली मत हो १३ गान्धारीने कहा हे भगवन् ! मैं गुण में दोष नहीं लगाती हूं और उनका नाशवान् होना नहीं चाहती हूं १४ परन्तु पुत्रशोकसे मेरा चित्त अत्यन्त व्याकुल होता है जिस प्रकार पाण्डव कुन्ती से रक्षा के योग्य हैं उसी प्रकार मुझसे भी हैं १५ और जैसे मुझसे रक्षा के योग्य हैं उसी प्रकार धृतराष्ट्र से भी हैं दुर्योधन शकुनी १६ कर्ण और दुश्शासन के अपराधसे यह कौरवों का नाश हुआ इसमें अर्जुन भीमसेन १७ नकुल सहदेव और युधिष्ठिरका भी कुछ अपराध नहीं है यह परस्पर युद्ध करनेवाले अहंकारी कौरव १८ एकसाथ अन्य २ लोगों के हाथ से मारेगये वह मेरा अप्रिय नहीं है परन्तु वासुदेवजी के देखते हुये भीमसेन ने कैसा कर्म किया १९ कि बड़े साहसी ने गदायुद्ध में दुर्योधनको बुलाकरके और शिक्षा में अधिक जानकर

युद्धमें अनेक रीतिसे घूमनेवाले को २० नाभि के नीचे घायल किया इस बात को सुनकर मैंने क्रोधको बढ़ाया वह शूरवीर युद्ध में प्राणों के अर्थ किसी दशा में भी धर्मको नहीं त्यागता है जोकि धर्मज्ञ महात्मा लोगों से उपदेश किया गया है २१ । २२ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकेगान्धारीसाल्वनायां चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि तब भीमसेन उसके उस वचनको सुनकर भयभीत के समान नम्रता के साथ गान्धारी से यह वचन बोला १ हे मातः ! धर्म होय वा अधर्म होय अपने शरीर की रक्षाके अभिलाषी मैंने भयसे वहां ऐसा किया आप उस मेरे अपराधको क्षमा करनेके योग्यहो २ वह बड़ा बलवान् आपका पुत्र धर्मयुद्धके द्वारा किसीके साथ लड़ने के योग्य नहीं था इस हेतुसे मैंने विपरीत कर्म किया ३ पूर्वसमय में उस दुर्योधन ने अधर्म के द्वारा युधिष्ठिरको विजय किया और हम सदैव ठगेगये इस कारणसे मैंने विपरीत कर्म किया ४ सेना के मध्य में अकेला शेष बचाहुआ यह पराक्रमी कदाचित् गदायुद्ध से मुझको मारकर राज्यको न लेले इस हेतुसे मैंने यह कर्म किया ५ आपको सब विदित है कि आपके पुत्रने एकवस्त्रा रजस्वला राजपुत्री द्रौपदी से जो वचन कहाथा इससे दुर्योधन को विना मारेहुये सागरोंसमेत निष्कण्टक पृथ्वी हमसे भोगनेके योग्य नहींथी इन बातोंको विचारकर मैंने यह कर्म किया ६।७ उसी प्रकार आपके पुत्रने हमारे अप्रियको भी किया जो सभा के मध्य में द्रौपदीको वाम जंघा दिखलाई ८ तबहीं वह आपका दुराचारी पुत्र हमारे हाथ से मारडालनेके योग्य था परन्तु उस समय हमलोग धर्मराजकी आज्ञासे नियम में नियतहुये ९ हे राज्ञि ! आपके पुत्र ने वह बड़ी शत्रुता प्रकट की और सदैव वनमें दुःखी किये इस हेतुसे मैंने यह किया १० युद्धमें दुर्योधन को मारकर अब उस शत्रुता के अन्तको पाया युधिष्ठिर ने राज्य को पाया और क्रोध से रहित हुये ११ गान्धारी बोली हे तात ! जो मेरे पुत्रके विषय में कहता है यह केवल उसको ही नहीं मारा किन्तु इसकोभी किया जो यह सब मुझसे कहता है १२ हे भरतवंशिन्, भीमसेन ! वृषसेन के हाथ से नकुल के घोड़े मरनेपर युद्ध में तुमने दुश्शासन के शरीर से उत्पन्न होनेवाले रुधिर को पिया १३

वह तुमने सत्पुरुषोंसे निन्दित निर्दय कर्म किया वह अयोग्यथा १४ भीमसेन बोला कि जब दूसरेका भी रुधिर न पीना चाहिये फिर अपना कैसे पान कर सक्ता है जैसा अपना आत्मा है वैसाही भाई है कोई मुख्यता नहीं है १५ हे मातः! रुधिर ओठोंसे नीचे नहीं गया यमराज उसको जानते हैं केवल रुधिर से भरे मेरे दोनों हाथ थे हे मातः! शोच मत कर १६ युद्ध में वृषसेन के हाथ से मृतक घोड़ेवाले नकुल को देखकर मैंने प्रसन्नचित्त भाइयों का भय उत्पन्न किया १७ द्यूत के कारण द्रौपदी के शिरके बाल पकड़ेजाने पर मैंने क्रोधसे जो कहा वह मेरे हृदय में वर्तमान है १८ हे राज्ञि! मैं उस प्रतिज्ञा को पूरा न करके बराबर वर्षोंतक क्षत्रियधर्म से च्युत होजाता इस हेतुसे मैंने उस कर्मको किया १९ हे गान्धारि! पूर्वसमय में हमारे निरपराधी होनेपर पुत्रोंको शासन न करके अब मुझको दोषों से शंका करने के योग्य नहीं हो २० जो अब हमारे ऊपर दोषों की शंका करती हो २१ गान्धारी बोली कि इस वृद्धके सौ पुत्रों के मारनेवाले तुझ अजेय ने किस हेतुसे एकको भी बाकी नहीं छोड़ा जिसने कि थोड़ा अपराध किया था २२ हे पुत्र! जोकि राज्य से हीन और वृद्ध हम दोनों की सन्तानरूप कहलाता इस अन्धे की एक लाठी भी तैंने कैसे नहीं छोड़ी २३ हे पुत्र! पुत्रों में किसीके भी बाकी रहनेपर तुझ पुत्रोंके नाशकर्ता में मेरा यह दुःख नहीं होता जो तुम धर्मको करते २४ वैशम्पायन बोले क्रोध-युक्त और पुत्र पौत्रों के मरने से पीड़ित गान्धारी ने इस प्रकार कहकर युधिष्ठिर के विषयमें पूछा कि धर्मराज कहां है २५ कम्पायमान हाथ जोड़कर युधिष्ठिर उसके पास गये और वहां इस मधुर वचन को बोले २६ हे देवि! मैं युधिष्ठिर तेरे पुत्रोंका मारनेवाला और संसार के नाशका मूल निर्दयी होकर शापके योग्य हूं मुझको शाप दे २७ उस प्रकारके सुहृज्जनों को मारकर मुझ अज्ञानी सुहृदों से शत्रुता करनेवाले को जीवन और राज्यसे कौन प्रयोजन है तब कठिन श्वासा लेनेवाली गान्धारी उस इस प्रकार बोलनेवाले भयभीत समीप पहुँचनेवाले से कुछ नहीं बोली २८। २९ उस धर्मज्ञ दूरदर्शी देवी ने उस झुके शरीर चरणों में गिरने के अभिलाषी राजा युधिष्ठिर की ३० हाथकी उँगलियों की नोक को पट्टान्तर अर्थात् बुरके के भीतर से देखा उससे दर्शनके योग्य नखवाला वह राजा युधिष्ठिर कुनखी होगया ३१ अर्जुन उसको देख-कर वासुदेवजी के पीछे चलागया हे भरतवंशिन्! इस प्रकार इधर उधर से

चेष्टा करनेवाले उन पाण्डवों को ३२ क्रोधसे रहित गान्धारी ने माताके समान विश्वास कराया उस हेतुसे आज्ञा पायेहुये वह बड़े वक्षस्स्थलवाले पाण्डव एक साथही उस वीरोंको उत्पन्न करनेवाली कुन्ती माता के पास गये पुत्रोंके विषयमें चित्तसे खेदयुक्त उस देवीने बहुत कालके पीछे अपने पुत्रोंको देखकर ३३।३४ वस्त्र से मुखको ढककर अश्रुपात किये इसके पीछे कुन्ती ने पुत्रों समेत अश्रु-पातों को करके ३५ उनको शस्त्रसमूहों से बहुत प्रकार करके घायल देखा उन पुत्रों को पृथक् २ स्पर्श करते दुःखसे पीड़ावान् उस कुन्ती ने ३६ मृतक पुत्र-वाली द्रौपदी को सोचा और पृथ्वीपर पड़ी रोवतीहुई द्रौपदी को देखा ३७ द्रौपदी बोली हे आर्ये ! अर्थात् सासू तेरे सब अभिमन्यु समेत पौत्र कहां गये अब वह बहुत कालसे तुझ तपस्विनी को देखकर तेरे पास नहीं आते हैं ३८ मुझ पुत्रोंसे रहितको राज्यसे कौनसा प्रयोजन है द्रौपदी के इस वचन को सुन-कर बड़े नेत्रवाली कुन्ती ने उसको विश्वास कराया ३९ अर्थात् उस शोक-पीड़ित रोदन करनेवाली द्रौपदी को उठाकर उसको और सब पुत्रों को साथ लेकर ४० बड़ी पीड़ित कुन्ती गान्धारी के पास गई वैशम्पायन बोले कि तब गान्धारी उस बहू समेत आनेवाली कुन्ती से बोली ४१ हे बेटी ! इस प्रकार न करना चाहिये तू मुझ दुःखीको भी देख मैं मानती हूं कि यह संसारका नाश समयकी विपरीततासे प्रकट हुआ है ४२ और रोमांच खड़ा करनेवाली अवश्य होनहार स्वभावसे वर्तमानहुई यह विदुरजीका वह बड़ा वचन सम्मुख आया ४३ जिसको कि उस बड़े बुद्धिमान्ने श्रीकृष्णकी शिक्षा के निष्फल होनेपर कहाथा इस अपरिहार्यार्थ में अर्थात् निरुपाय और व्यतीत होनेवाली बातमें शोच मत कर ४४ युद्ध में मरनेवाले वह वीर शोच के योग्य नहीं हैं जैसी मैंहूं वैसीही तूहै हम दोनोंको कौन विश्वास करावेगा मेरेही अपराध से इस उत्तम कुलका नाश हुआ ४५ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि पञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि इस प्रकार कहकर वहांपर बैठीहुई गान्धारी ने दिव्य-नेत्रों से कौरवों के सब बड़ेभारी नाशको देखा १ उस पतिव्रता महाभागा एकसा व्रत करनेवाली बड़े तपसे संयुक्त सदैव सत्यवक्ता २ पवित्रकर्मी व्याग

महर्षिके वरदान के द्वारा दिव्य ज्ञानबल से संयुक्त ने बहुत प्रकारका विलाप किया ३ उस बुद्धिमतीने दूरसेही समीप के समान नरवीरों की उस रणभूमि को जो कि शरीर के अपूर्व रोमहर्षण करनेवाली थी देखा ४ अर्थात् अस्थि केश मज्जासे युक्त रुधिरसमूह से पूर्ण हजारों शरीरों से चारों ओरको आच्छादित ५ हाथी घोड़े रथ और सवारोंके रुधिरसमूहसे युक्त शरीरों से पृथक् शिरोंके समूहों से पूर्ण ६ हाथी घोड़े मनुष्य और स्त्रियोंके शब्दोंसे व्याप्त शृगाल, बक, काकोल, कंक और कागोंसे सेवित ७ मनुष्य के खानेवाले राक्षसोंकी प्रसन्न करनेवाली कुररनाम पक्षियोंसे सेवित शृगालों के अशुभ शब्दों से शब्दायमान और गिद्धों से सेवित थी ८ इसके पीछे व्यासजी से आज्ञा पायाहुआ राजा धृतराष्ट्र और वह सब पाण्डव जिनका अग्रवर्ती युधिष्ठिर था ९ वासुदेवजी को और जिसके बन्धु मारेगये उस राजा को आगेकर सब कौरवीय स्त्रियों को साथलेकर युद्ध-भूमि में गये १० वहां विधवा स्त्रियोंने कुरुक्षेत्र को पाकर उन मृतक भाई पुत्र पिता और सुहृदोंको देखा ११ जो कि कच्चे मांस खानेवाले शृगाल, काक, भूत, पिशाच, राक्षस और नानाप्रकारके निशाचरों से खायेहुये थे १२ रुद्रजी के क्रीड़ास्थानके समान निवासस्थान को देखकर पुकारतीहुई स्त्रियां बहुमूल्य सवारियों से उतरीं १३ भरतवंशियों की स्त्रियां दुःखसे पीड़ित पूर्व में कभी न देखेहुये उस नाशको देखकर कोई शरीरों पर गिरीं और कोई पृथ्वीपर गिरने-वाली हुईं १४ पाञ्चाल और कौरवोंकी उन अनाथ और थकीहुई स्त्रियों को कुछ चेत नहीं रहा यह बड़ा दुःख हुआ १५ वह धर्मज्ञ गान्धारी दुःखितचित्त स्त्रियोंसे चारोंओर को शब्दायमान बड़ी भयानकरूप युद्धभूमि को देखकर १६ फिर पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी को समक्ष में करके इस वचनको बोलीं १७ हे कमल-लोचन, माधवजी ! इन विधवा शिरके बालोंको फैलानेवाली कुररी के समान पुकारनेवाली मेरी पुत्रबधुओं को देखो १८ यह स्त्रियां पृथक् २ पुत्र भाई पिता और सुहृदोंको मिलती पतियोंके गुणोंको याद करती पृथक् २ दौड़ने-वाली हैं १९ हे महाराज ! यह रणभूमि वीरोंके उत्पन्न करनेवाली और मृतक पुत्रवाली स्त्रियों से संयुक्त है कहीं उन वीरों की स्त्रियोंसे संयुक्त है जिनके कि वीर भर्ता मारेगये २० कहीं ज्वलित अग्नि के समान पुरुषोत्तम कर्ण, भीष्म, अभिमन्यु, द्रोणाचार्य, द्रुपद और शल्य से शोभायमान है २१ महात्माओं के स्वर्णमयी कवच निष्कमणि बाजूबन्द केयूर और मालाओं से

अलंकृत २२ वीरों की भुजाओं से छोड़ी हुई शक्ति परिघ और नाना प्रकारके तीक्ष्ण खड्ग बाणों समेत धनुषों से सुशोभित हैं २३ प्रसन्नचित्त कहीं साथ निवास करनेवाले कहीं क्रीड़ा करनेवाले कहीं सोनेवाले और कहीं मांसभक्षी राक्षसों से संयुक्त है २४ हे समर्थ वीर, श्रीकृष्णजी ! इस प्रकार की रणभूमि को देखो मैं इसको देखकर शोकसे भस्म हुई जाती हूं २५ हे मधुसूदनजी ! मैंने पाञ्चाल और कौरवोंके नाशमें पांचो तत्त्वोंके भी नाशको ध्यान किया है २६ रुधिर से भरे गरुड़ और गिद्ध उनको खेंचते हैं और हज़ारों गिद्ध चरणों से पकड़ कर उनको भक्षण करते हैं २७ कौन मनुष्य जयद्रथ, कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म और अभिमन्युके नाश की चिन्ता करने के योग्य है २८ विना घायलके समान मृतक अचेत निर्जीव गिद्ध कङ्क वट श्येन बाज श्वान और शृगालोंके भक्ष्य रूप २९ इन पुरुषोत्तमों को शान्त अग्नि के समान देखो जो कि क्रोध के स्वाधीन होकर दुर्योधनकी आज्ञा में नियत थे ३० जो सब पूर्व समयमें कोमल शयनों पर सोतेथे अब वह मृतक होकर इस विस्तृत भूमिपर सोते हैं ३१ और जो सदैव प्रशंसा करनेवाले वन्दीजनोंसे समय समयपर प्रसन्न कियेजाते थे वह शृगालों के अशुभ और भयकारी नाना प्रकार के शब्दों को सुनते हैं ३२ जो यशवान् वीर पूर्व समय में चन्दन अगर से लिप्ताङ्ग शयनोंपर सोते थे वह वीर अब पृथ्वीकी धूलपर सोते हैं ३३ बारम्बार शब्द करनेवाले भयानकरूप यह गिद्ध, काक, शृगाल मुखके भूषणों को लेकर फेंकते हैं ३४ यह सब अहङ्कारी मृतक भी जीवतेहुये युद्ध करनेवालों के समान तीक्ष्णधार पीतवर्ण बाण खड्ग और निर्मल गदाओं को धारण करते हैं ३५ सुन्दर रूप और वर्णवाले बहुत वीर कच्चे मांसभक्षियों से खैंचेजाते हैं बैलके रूप हरित मालाधारी सोते हैं ३६ फिर परिघके समान् भुजाधारी अन्य शूर गदाको प्यारी स्त्रीके समान अपने साथ लियेहुये सोते हैं ३७ हे श्रीकृष्णजी ! बहुत से मांसभक्षी स्वच्छ शस्त्र और कवचों के धारण करनेवाले वीरोंको जीवता हुआ जानकर नहीं खाते हैं ३८ बहुतेरे महात्माओं की स्वर्णमयी अपूर्व माला मांसभक्षियों से खैंचीहुई चारोंओर को फैली हैं ३९ यह भयानकरूप हज़ारों शृगाल इन यशवान् मृतक वीरोंके कण्ठमें पड़ेहुये हारों को खैंचते हैं ४० जिनको शिक्षायुक्त वन्दीजनों ने सब पिछली रात्रियों में प्रशंसा और बड़ी सेवाओंसे प्रसन्न किया था ४१ हे श्रीकृष्णजी ! बड़े दुःख का स्थान है कि यह दुःख से पीड़ित और

दुःख शोक से अत्यन्त दुःखी उत्तम स्त्रियां उनका विलाप करती हैं ४२ हे केशवजी ! उत्तम स्त्रियों के सुन्दरमुख लाल कमल के सूखे वनों के समान दृष्टि पड़ते हैं ४३ रोदन को भूलकर ध्यान में प्रवृत्त महादुःखी यह कौरवीय स्त्रियां अपने परिवारों समेत उस मार्ग से अपने पति पुत्रादि के समीप जाती हैं ४४ कौरवों की स्त्रियों के यह सूर्यवर्ण और सुवर्ण के समान प्रकाशमान मुख क्रोध और रुदन करने से शोभासे रहित हैं ४५ हे केशवजी ! दुर्योधन की उन उत्तम स्त्रियों के समूहों को जोकि श्यामा गौरी और उत्तम वर्ण से युक्त एक वस्त्र रखनेवाली हैं उनको देखो (शीतऋतु में उष्ण और ग्रीष्मऋतु में शीतल और सुखदायी होय और तपायेहुये सुवर्ण के समान वर्णवाली होय उस स्त्री को श्यामा कहते हैं और आठ वर्षवाली को गौरी कहते हैं) ४६ स्त्रियां उन्होंके विलाप और दुःखको सुनकर एक दूसरे के रोदन करने को नहीं जानती हैं ४७ यह वीरोंकी स्त्रियां लम्बी श्वासाओं से पुकारती और विलाप करके दुःख से चलायमान जीवन को त्याग करती हैं ४८ बहुतसी स्त्रियां शरीरों को देखकर पुकारती और विलाप करती हैं और बहुतसी कोमलहाथ रखनेवाली स्त्रियां हाथों से शिरों को पीटती हैं ४९ पड़ेहुये शिर हाथ और इकट्ठे होकर परस्पर मिलेहुये अङ्गों से पृथ्वी आच्छादित दिखाई पड़ती है ५० पास जानेवाली स्त्रियां इन निर्दोष शिर शरीर और शरीरों से जुदेहुये शिरों को देखकर व्याकुल और अचेत होती हैं ५१ शिर को शरीर पर रखकर देखनेवाली अचेत और दुःखी स्त्रियां वहां दूसरे शिरको देखती हैं यह समझकर कि यह इसका नहीं है ५२ विशिखनाम बाणों से मथेहुये भुज जंघा चरण और अन्य २ अङ्गोंको शरीरपर लगानेवाली दुःखसे व्याकुल यह स्त्रियां बारम्बार विमोह को पाती हैं ५३ शिरोंको काटकर पशु पक्षियों से खायेहुये अन्य वीरोंको देखकर भरतवंशियोंकी स्त्रियां अपने अपने पतियोंको नहीं जानती हैं ५४ हे मधुसूदनजी ! बहुतसी स्त्रियां शत्रुओं के हाथ से मरे हुये भाई पिता पुत्र और पतियों को देखकर हाथों से शिरोंको पीटती हैं ५५ यह पृथ्वी खड्ग रखनेवाली और कुण्डलधारी शिरोंसे दुर्गम्यरूप मांस रुधिरकी कीच रखनेवाली ५६ भरतवंशियों में श्रेष्ठ निर्जीव वीरों से दुर्गम्य के समान हुई पूर्वसमयमें जो दुःखों के योग्य कभी नहीं हुईं वह निर्दोष स्त्रियां दुःखोंको पाती हैं ५७ यह पृथ्वी भाई पति और पुत्रोंसे आच्छादित है हे जनार्दनजी !

धृतराष्ट्र की पौत्रवधुओं के उन बहुत से समूहोंको जो कि किशोरी सुन्दर केश रखनेवाली और झुण्डों के रूप हैं देखो हे केशवजी ! इससे अधिक कौनसा दुःख मुझको दिखाई देता है ५८। ५९ जो यह स्त्रियां नाना प्रकार के रूपों को करती हैं निश्चय करके विदित होता है कि मैंने पूर्व जन्ममें पाप कियाथा ६० हे माधवजी ! जो मैं पुत्र भाई और पिताओं को मृतक देखती हूं इस प्रकार पीड़ित विलाप करनेवाली और पुत्रशोकसे महादुःखी गान्धारीने श्रीकृष्णजी को यह कहकर अपने मृतक पुत्रको देखा ६१ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि षोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि शोकसे पीड़ित गान्धारी दुर्योधनको मराहुआ देखकर अकस्मात् ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ी जैसे कि वनमें टूटाहुआ केलेका वृक्ष होता है १ फिर उसने सचेतताको पाकर पुकारकर और विलाप करके उस पृथ्वीपर पड़ेहुये रुधिर से लिप्त दुर्योधनको देखकर २ हृदयसे लगाया और दुःखका विलाप किया शोकसे पीड़ित महाव्याकुल चित्त हायपुत्र ! हायपुत्र ! इस रीति से विलाप करनेलगी ३ गुप्त जत्रुस्थान रखनेवाली निष्कों के हारसे अलंकृत अपनी छातीको नेत्रों के जलसे सींचती महादुःखी उस गान्धारी ने ४ सम्मुख वर्तमान श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा कि हे समर्थ ! इस युद्ध के और जाति- वालों के नाश के वर्तमान होनेपर ५ इस हाथ जोड़नेवाले महाराज दुर्योधन ने मुझसे यह कहा कि हे मातः ! जातिवालों के युद्ध में मेरी विजयको कहो ६ हे पुरुषोत्तम ! उसके ऐसा कहनेपर मैं अपने सब दुःखके आगमनको जानती हुई बोली कि जिधर धर्म है उधरही विजय है ७ हे प्रभो ! पुत्र जैसे कि तू युद्ध को करता हुआ मोहित नहीं होता है इससे निश्चय करके देवताके समान शस्त्रों से विजय कियेहुये लोकोंको पावेगा ८ हे प्रभो ! मैंने पूर्व समय में इस प्रकार कहा था मैं इसको नहीं सोचती हूं ९ हे माधवजी ! इस अशान्त और अस्त्रज्ञ युद्धदुर्मद और शूरवीरों में श्रेष्ठ मेरे पुत्रको वीरों के शयनपर सोता देखो १० जो यह शत्रुसन्तापी महाराजाओंके भी अग्रवर्ती होकर चलता था अब वह इस पृथ्वी की रजमें सोता है समयकी विपरीतताको देखो, ११ निश्चय करके वीर दुर्योधन ने दुष्प्राप्य गतिको पाया इस प्रकार सम्मुख वीरोंसे सेवित

शयनपर सोता है १२ पूर्वसमय में राजा लोग चारों ओर वर्त्तमान होकर जिसको प्रसन्न करते थे अब उस पृथ्वीपर मरेहुये पड़ेकी गिद्ध वर्त्तमानता करते हैं अर्थात् हाजिरी देते हैं पूर्व समय में सुन्दर व्यजनों से उत्तम स्त्रियां जिसकी वायु करती थीं अब उसकी वायु पक्षीलोग अपने पक्षों से करते हैं १३।१४ युद्ध में भीमसेन के हाथ से गिराया हुआ यह सत्य पराक्रमी बलवान् महाबाहु ऐसे सोता है जैसे कि सिंहके हाथ से माराहुआ हाथी सोता है १५ हे श्रीकृष्णजी! गदा को मारकर भीमसेन से मृतक रुधिर से लिप्त सोनेवाले दुर्योधन को देखो १६ हे केशवजी! जिस महाबाहु ने पूर्वसमय में ग्यारह अक्षौहिणी सेना को युद्धभूमि में इकट्ठा किया उसने युद्ध में अनीति से नाश को पाया १७ भीमसेन के हाथसे गिरायाहुआ बड़ा बलवान् यह दुर्योधन सोता है १८ यह अभागा अज्ञान निर्बुद्धि विदुरजी समेत पिताको भी अपमान करके वृद्धोंकी अवज्ञासे मृत्यु के अधीन हुआ १९ तेरह वर्षतक शत्रुओं से रहित पृथ्वी इसके आज्ञावर्ती रही वह मेरा पुत्र राजा दुर्योधन माराहुआ पृथ्वीपर सोता है २० हे श्रीकृष्णजी! मैंने सब पृथ्वी के लोगोंको दुर्योधन के आज्ञावर्ती हाथी घोड़े और गौओं से पूर्ण देखा है माधवजी! वह बहुत कालतक नहीं है २१ हे महाबाहो! अब मैं उस पृथ्वी को दूसरे की आज्ञावर्ती हाथी घोड़े और बैलोंसे रहित देखती हूं हे माधवजी! मैं क्या जीवती हुई हूं २२ पुत्र के मरनेसे भी अधिक इस मेरे दुःखको देखो जो यह स्त्रियां युद्धभूमि में चारोंओर से मृतक शूरोंके पास नियत हैं २३ हे श्रीकृष्णजी! इस खुलेहुये केश सुन्दर श्रोणीवाली और दुर्योधन के शुभअंक में वर्त्तमान सुवर्ण की वेदी के रूप लक्ष्मणकी माता को देखो २४ निश्चय करके पूर्वसमय में राजा के जीवतेहुये यह उत्तम चित्त-वाली स्त्री सुन्दर भुजवाले दुर्योधन की भुजाओं के आश्रित होकर रमती थी २५ युद्ध में पौत्र समेत मरेहुये अपने पुत्रको मुझ देखनेवालीका यह हृदय कैसे खण्ड खण्ड नहीं होता है २६ वह निर्दोष सुन्दरी रुधिर से लिप्त पुत्रको सूंघती है और दुर्योधन को हाथ से साफ करती है २७ यह साहसी स्त्री क्या पति और पुत्रको सोचती है वह उस प्रकार पुत्रको भी देखकर नियत दिखाई देती है २८ हे माधव! बड़े नेत्रवाली स्त्री अपने शिरको पञ्चांगुलीवाले अपने हाथ से घायल करके वीर दुर्योधन की छातीपर गिरती है २९ यह तपस्विनी पति और पुत्रके मुखको साफ करके कमलके अन्तर्गत भागके समान प्रकाशित

और कमलवर्ण दिखाई देती है ३० जो शास्त्र और श्रुतियां सत्य हैं तो निश्चय करके इस राजाने अपने भुजबलों से प्राप्त लोकों को पाया ३१ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी! युद्धमें परिश्रमसे रहित मेरे सौ पुत्रों को भीमसेन की गदा से कठिन घायलहुये देखो १ अब यह मेरा बड़ा दुःखहै जो खुले केश मृतक पुत्रवाली मेरी पुत्रवधू बाला युद्धभूमि में मेरे चारोंओर दौड़ती हैं २ भूषणों से अलंकृत चरणों से महलों में फिरनेवाली स्त्रियां अपनी आपत्ति में फँसकर इस रुधिर से आर्द्र पृथ्वीको स्पर्श करती हैं यह कठिनतासे उनके ऊपर बैठेहुये गिद्ध शृगाल और काकोंको उड़ाती हैं और दुःखसे पीड़ित मतवालों के समान घूमती हैं ३।४ यह दूसरी निर्दोष शरीर मुष्टिप्रमाण सूक्ष्म कटि रखनेवाली अत्यन्त दुःखी स्त्रियां अत्यन्त भयकारी युद्धभूमि को देखकर गिरती हैं ५ हे महाबाहो! इस राजपुत्री लक्ष्मण की माताको देखकर मेरा चित्त शान्ति को नहीं पाताहै ६ यह अन्य स्त्रियां मरेहुये पृथ्वीपर पड़े अपने भाई पिता और पुत्रों को देखकर और बहुत बड़ी बड़ी भुजाओं को पकड़कर चारों ओर को गिरती हैं ७ हे अजेय! जिनके बान्धव मारेगये उन तरुण षोड़श वर्षवाली स्त्रियों के शब्दों को इस कठिन विनाश में सुना ८ हे महाबाहो! थकावट और अचेततासे पीड़ित स्त्रियां रथकी नीड़ और मृतक हाथी घोड़े के शरीरों के आश्रित होकर नियत हैं ९ हे कृष्णजी! शरीर से जुदे सुन्दर कुण्डल और वेणी रखनेवाले अपने बान्धवके शिरको पकड़कर नियत होनेवाली अन्य स्त्रियों को देखो १० हे निष्पाप! इन निर्दोष स्त्रियोंसे और मुझ निर्बुद्धि से पिछले जन्म में किया हुआ पाप छोटा नहीं है मेरी बुद्धिसे बहुत बड़ा है ११ जो यह हमारा पाप धर्मराज ने दूर किया हे यादव, श्रीकृष्णजी! शुभाशुभ कर्मों का नाश नहीं है अर्थात् उसका फल अवश्य होताहै १२ हे श्रीकृष्णजी! इन नवीन अवस्था दर्शनीय स्तन और मुखवाली कुलवन्ती लज्जावती काले पलक नेत्र और बाल रखनेवाली स्त्रियों को देखो १३ हे माधवजी! हंसके समान गद्गद बोलनेवाली दुःख शोक से अचेत सारसीके समान पुकारनेवाली पृथ्वीपर पड़ी हुई स्त्रियोंको देखो १४ कमललोचनी स्त्रियों के मुख जो कि फूले कमल के

समान और निर्दोष हैं उनको दुःखरूप सूर्य सन्तप्त कररहा है १५ अब अन्य लोग मतवाले हाथी के समान अहङ्कारी मेरे पुत्रोंकी रानियों को देखते हैं१६ हे गोविन्दजी! सौ चन्द्रमा रखनेवाली सूर्य के समान प्रकाशमान ढाल और सूर्यही के समान प्रकाशित ध्वजा रैवत प्रकार के कवच सुवर्ण के निष्क १७ पृथ्वीपर पड़े होमीहुई अग्नि के समान प्रकाशित मेरे पुत्रोंके उन मुकुटों को देखो १८ शत्रुओं के मारनेवाले शूर भीमसेन के हाथ से युद्ध में गिरायाहुआ रुधिर से लिप्त सर्वाङ्ग यह दुश्शासन सोता है १९ हे माधवजी! द्यूतके दुःखको स्मरण करके द्रौपदी की प्रेरणापूर्वक भीमसेनकी गदासे मृतक हुये मेरे पुत्रको देखो २० हे जनार्दनजी! कर्णका और भाई दुर्योधन के प्रिय करनेका अभिलाषी इस दुश्शासनने सभाके मध्य में द्यूत में पराजित द्रौपदी से यह वचन कहे २१ कि हे द्रौपदि! तू सहदेव नकुल और अर्जुन समेत दासी हुई शीघ्र हमारे घरों में प्रवेश कर २२ हे श्रीकृष्णजी! उस समय मैंने राजा दुर्योधन से कहा कि हे पुत्र! मृत्युकी फांसी में बँधेहुये शकुनिको निषेध करो २३ इस अत्यन्त दुर्बुद्धि युद्ध को प्रिय जाननेवाले मामाको समझाओ हे पुत्र! इस द्यूत को शीघ्र त्याग करके पाण्डवों के साथ शान्त हो २४ जैसे कि उल्काओं से हाथियों को पीड़ित करते हैं इसी प्रकार वचनरूप तीक्ष्ण नाराचों से क्रोधयुक्त भीमसेन को पीड़ित करता तू सचेत नहीं होता है अर्थात् हे दुर्बुद्धे! तू भीमसेनके अमर्षको नहीं जानता है २५ इस प्रकार उन वचनरूपी भालों से घायल करते उस क्रोधयुक्त ने एकान्त में उन पाण्डवोंपर इस प्रकार विषको छोड़ा जैसे कि सर्प गौ और वृषभपर छोड़ते हैं २६ जैसे कि बड़ा हाथी सिंहसे माराजाता है उसी प्रकार भीमसेन के हाथ से मृतक यह दुश्शासन भुजाओं को फैलाकर सोता है २७ अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़ा भयकारी कर्म किया जो क्रोधयुक्तने युद्धमें दुश्शासन के रुधिरको पान किया २८॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वण्यष्टादशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

गान्धारी बोली हे माधवजी! यह ज्ञानियों का अङ्गीकृत भीमसेनके हाथ से सैकड़ों खण्ड किया हुआ मेरा पुत्र विकर्ण मृतक पृथ्वी पर सोताहै १ हे मधुसूदनजी! वह विकर्ण मरेहुये हाथियों के मध्य में ऐसे सोता है जैसे कि नीले

बादलों से घिराहुआ शरद् ऋतु का चन्द्रमा होता है २ धनुष पकड़ने से बड़े चिह्न रखनेवाला खड्ग से युक्त इसका हाथ खानेके अभिलाषी गिद्धोंसे कुछ काटा जाता है ३ हे माधवजी ! उसकी तपस्विनी बाला भार्या मांस के अभिलाषी गिद्ध और काकों को हटाती है परन्तु हटाने को समर्थ नहीं होती है ४ हे पुरुषोत्तम, माधवजी ! तरुण देवतारूप शूरवीर सुखपूर्वक निवास करनेवाला विकर्ण पृथ्वीकी धूलिपर सोता है ५ युद्ध में करणी, नालीक और नाराचनाम बाणोंसे टूटे मर्मस्थलोंवाले भरतर्षभ इस विकर्णको अब भी शोभा नहीं छोड़ती है ६ युद्ध में शत्रुओं के समूहों का मारनेवाला सम्मुख रहनेवाला यह दुर्मुख उस युद्धभूमि में वीरप्रतिज्ञा पूरी करने के अभिलाषी भीमसेन के हाथसे मृतक होकर सोता है ७ हे श्रीकृष्णजी ! उसका यह मुख श्वापदजीवों से आधा खायाहुआ ऐसे अधिक प्रकाशित है जैसे कि सप्तमी का चन्द्रमा होता है ८ हे कृष्णजी ! युद्धमें मेरे शूरपुत्र के ऐसे मुखको देखो वह मेरा पुत्र किस रीति से शत्रुओंके हाथसे मारागया और युद्धकी धूलिको निगलता है ९ हे स्वामिन् ! युद्धके मुखपर जिसकी सम्मुखता करनेवाला कोई नहीं वह देवलोक का विजय करनेवाला दुर्मुख किस प्रकार शत्रुओं के हाथ से मारागया १० हे मधुसूदनजी ! इस धृतराष्ट्र के पुत्र धनुर्धारी पृथ्वीपर सोनेवाले चित्रसेन की मृतक मूर्ति को देखो ११ शोक से पीड़ित रोनेवाली स्त्रियां मांसभक्षियों के समूहों समेत उस जड़ाऊ माला और भूषण रखनेवाले चित्रसेनके पास नियत हैं १२ हे श्रीकृष्णजी ! स्त्रियों के रुदनके शब्द और मांसाहारियों की गर्जना अपूर्वरूप और विचित्र मालूम होती है १३ हे माधवजी ! यह तरुण सदैव उत्तम स्त्रियों से सेवित देवतारूप विविंशति धूलि में पड़ा सोता है १४ हे श्रीकृष्णजी ! देखो कि गिद्धनाम पक्षी इस बाणों से टूटे कवच वीर विविंशति को बड़ी रणभूमि में घेरकर बैठे हैं १५ वह शूर युद्ध में पाण्डवों की सेना में प्रवेश करके सत्पुरुषों के योग्य वीरशय्या पर सोता है १६ हे श्रीकृष्णजी ! विविंशति के मुखको देखो जो कि मन्द मुसकान समेत सुन्दर नाक और चन्द्रमा के समान बहुत उज्ज्वल है १७ बहुधा उत्तम स्त्रियों ने चारोंओर उस की ऐसी वर्तमानता करी है जैसे कि हजारों देवकन्या क्रीड़ा करनेवाले गन्धर्व की वर्तमानता करती हैं १८ शत्रुओं की सेनाके मारनेवाले युद्ध को शोभा देनेवाले और शत्रुओं का नाश करनेवाले दुःख से सहने के योग्य शूर को

कौन सहसक्ता है १९ दुस्सह का यह शरीर बाणों से युक्त ऐसा शोभायमान है जैसे कि अपने ऊपर वर्तमान कर्णिकारके पुष्पोंसे व्याप्त पर्वत होता है २० यह मृतक भी दुःखसे सहनेके योग्य स्वर्णमाला और प्रकाशित कवचसमेत ऐसे प्रकाशमान है जैसे कि अग्निसे श्वेत पर्वत प्रकाशित होता है २१॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि गान्धारीवाक्ये एकोनविंशोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय॥

गान्धारी बोली हे यादव, केशवजी! जिस अहंकारी और सिंहके समान अभिमन्यु को बल पराक्रम में पिता अर्जुन और तुमसे भी ड्योढ़ा कहा है १ जिस अकेलेने मेरे पुत्रकी सेनाको जो कि कठिनतासे चीरनेके योग्य थी चीरा वह दूसरोंका कालरूप होकर आपही कालके आधीन हुआ २ हे श्रीकृष्णजी! मैं देखती हूं कि उस अर्जुन के पुत्र बड़े तेजस्वी मरेहुये अभिमन्यु का तेज नाशको नहीं पाता है ३ यह विराट की पुत्री और अर्जुन की पुत्रवधू निर्दोष और पीड़ावान् इस बालक और वीरपति को देखकर शोच करती है ४ हे श्रीकृष्ण! यह विराट की पुत्री भार्या समीप से उस पतिको मिलकर हाथों से साफ करती है ५ यह चित्तवाली मनोहररूप तेजस्विनी उस अभिमन्यु के मुखको जो प्रफुल्लित कमल के रूप और गोलगर्दनवाला है सूंघकर उससे मिलती है जो कि पूर्व समय में माध्वीक नाम मद्यके मदसे अचेत भी लज्जा-युक्त थी ६।७ हे श्रीकृष्णजी! उसके सुवर्णजटित रुधिर से लिप्त कवच को उघारकर शरीर को देखती है ८ हे मधुसूदनजी! यह बाला उसको देखकर तुमसे कहती है कि हे कमललोचन! यह आपके समान नेत्ररखनेवाला गिराया गया ९ हे पापों से रहित! यह बल पराक्रम और तेज और बड़े रूप में आपके समान पृथ्वीपर गिराया हुआ सोता है १० अब तुम्हारा अत्यन्त कोमल शरीर और रांकनाम मृगचर्मपर सोनेवाले का शरीर पृथ्वीपर दुःख तो नहीं पाता है ११ तुम हाथी की सूंड़के समान प्रकाशमान प्रत्यञ्चाके खैंचनेसे कठिन चर्मवाले सुवर्णके बाजूबन्दोंसे अलंकृत बड़ी भुजाओं को फैलाकर सोतेहो १२ निश्चय करके बहुत प्रकार के परिश्रम करके थकावट से विश्रामयुक्त होकर सोगये हो जो इस प्रकार से विलाप करनेवाली मुझको उत्तर नहीं देतेहो १३ तुम्हारे विषय में मैं अपने अपराध को नहीं स्मरण करती हूं मुझको उत्तर क्यों

नहीं देतेहो निश्चय करके तुम पूर्वसमयमें मुझको देखकर बोलतेथे अब भी मेरा कोई अपराध नहीं है मुझसे क्यों नहीं वार्तालाप करते हो हे श्रेष्ठ! तुम मेरी सास सुभद्रा और देवताओं के समान १४ । १५ इन पिताओं समेत दुःख से पीड़ित मुझको छोड़कर कहां जाओगे फिर उसके रुधिर से लिप्त मृतक शिर को हाथ से उठाकर १६ और बगल में मुखको रखकर ऐसे पोंछती है जैसे कि जीवतेको पोंछते हैं तुम वासुदेवजी के भानजे और अर्जुन के पुत्र १७ युद्ध में वर्तमानको इन महारथियोंने कैसे मारा उन निर्दयकर्मी कृपाचार्य, कर्ण, जयद्रथ १८ द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा को धिक्कार है जिनके कि हाथसे मैं विधवा करीगई उस समय उन उत्तम रथियोंका चित्त कैसा होगया १९ कि तुझ अकेले बालकको घेरकर मेरे दुःख देनेको मारा हे वीर! नाथवान् होते तुमने पाण्डवों और पाञ्चालों के देखते अनाथ के समान कैसे मरणको पाया २० तेरा पिता पुरुषोत्तम वीर पाण्डव युद्ध में बहुतों के हाथसे तुझको मराहुआ देखकर कैसे जीवता है २१ हे कमललोचन! तेरे विना सब राज्य की प्राप्ति और शत्रु की पराजय पाण्डवों की प्रसन्नता को उत्पन्न नहीं करेगी २२ तेरे धर्म और जितेन्द्रियपन और शस्त्रों से विजय कियेहुये लोकोंको २३ शीघ्र पीछेसे मैं भी प्राप्त करूंगी वहांपर मेरी प्रतीक्षा करो फिर समय के वर्तमान न होनेपर प्रत्येक को मरना कठिन होताहै २४ जो दुर्भागिनी मैं युद्ध में तुझको मृतक देखकर जीवतीहूं हे नरोत्तम! अब इच्छा के अनुसार पितृलोक में मिलनेवालों को मन्दमुसकान के साथ मधुर वचन से २५ ऐसे अपनी ओर लगाओगे जैसे कि मुझको और स्वर्ग में अप्सराओं के चित्तों को २६ उत्तम रूप और मन्द मुसकानसमेत मधुर वाणी से मथन करोगे पुण्य से प्राप्त होनेवाले लोकोंको पाकर अप्सराओं से मिलेहुये २७ हे स्वामिन्! तुम स्वर्ग में विहार करते मेरे कर्मों को स्मरण करना इस लोक में आपका मेरे साथ इतनेही कालके लिये सम्बन्ध नियत किया था २८ हे वीर! छः महीने साथ रहे सातवें महीने में मृत्यु को पाया राजा विराट के कुलकी स्त्रियां ऐसे कहनेवाली महादुःखी निष्फल संकल्पवाली २९ इस उत्तराको हटाती हैं आप भी महापीड़ित वह स्त्रियां इस अत्यन्त पीड़ित उत्तराको हटाकर मरेहुये विराटको ३० देखकर पुकारती हैं विलाप करती हैं द्रोणाचार्य के अस्त्र और बाणों से टूटे अङ्ग रुधिरसे लिप्त सोनेवाले ३१ विराट को यह गिद्ध शृगाल और काक काटते हैं श्यामचक्षु पीड़ित स्त्रियां पक्षियों से

घायल होते विराट को देखकर ३२ पक्षियों के हटाने को समर्थ नहीं होती हैं सूर्य के तापसे तपनेवाली इन स्त्रियों के मुखों का तेज जो कि ३३ परिश्रम और थकावट से अप्रकाशित है दूर होगया उत्तर, अभिमन्यु, काम्बोज, सुदक्षिण ३४ और सुन्दर दर्शन लक्ष्मण इन सब मृतक बालकोंको देखो हे माधवजी! इन सब को युद्धभूमि में सोताहुआ देखो ३५॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि विंशतितमोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय॥

गान्धारी बोली यह बड़ा धनुर्धारी महारथी कर्ण सोता है यह अर्जुन के तेज से युद्ध में ज्वलित अग्नि के समान शान्त होगया १ बहुतसे रथियोंको मारकर पृथ्वीपर पड़ा सोता है और रुधिरसे लिप्त शरीर सूर्य के पुत्र कर्णको देखो २ यह अशान्तचित्त महाक्रोधी बड़ा धनुर्धारी पराक्रमी शूर युद्धमें अर्जुन के हाथ से माराहुआ सोता है ३ मेरे महारथी पुत्र पाण्डवों के भयसे जिसको अग्रवर्ती करके अच्छे प्रकार ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि हाथी अपने प्रधान हाथी को अग्रवर्ती करके उत्तम युद्ध करते हैं ४ वह युद्ध में अर्जुन के हाथ से ऐसे गिरायागया जैसे कि सिंह से शार्दूल और मतवाले हाथी से मतवाला हाथी गिराया जाता है ५ हे पुरुषोत्तम! यह बिखरेहुये बाल रोदन करती इकट्ठी स्त्रियां इस युद्ध में मरेहुये शूर के चारोंओर नियत हैं ६ सदैव जिससे व्याकुल भयभीत और चिन्ता करके धर्मराज युधिष्ठिरने तेरह वर्ष तक निद्रा को नहीं पाया ७ युद्ध में इन्द्रके समान अन्य शत्रुओं से अजेय प्रलयकालकी अग्नि के समान तेजस्वी हिमाचल के समान युद्ध से न हटनेवाला ८ वह वीर दुर्योधन का रक्षाश्रय होकर ऐसे मराहुआ पृथ्वीपर सोता है हे माधव! जैसे कि वायुसे टूटाहुआ वृक्ष होता है ९ तुम कर्णकी स्त्री वृषसेनकी माता पृथ्वीपर गिरी रोदन करती हुई और शोककी वार्त्ता करनेवाली को देखो १० निश्चय करके गुरु का शाप तुझको प्राप्तहुआ जो पृथ्वी ने इस तेरे रथचक्रको दबालिया इसके पीछे युद्धको शोभा देनेवाले अर्जुनके बाण से तेरा शिर काटा गया ११ हाय २ धिक्कार यह रोदन करती अत्यन्त पीड़ित शूरसेनकी माता इस सुवर्ण के बाजूबन्द से अलंकृत बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्णको देखकर अचेत पड़ी है १२ यह महात्मा श्वापदों के भक्षण करने से अभी थोड़ा शेष

रहाहै वह देखने में हमारी प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला ऐसे नहीं है जैसे कि कृष्णपक्ष की चौदसि में चन्द्रमा प्रसन्नता से रहित होता है १३ यह पृथ्वीपर पड़ी हुई महादुःखी और उठकर कर्ण के मुखको सूंघती पुत्र के मरणशोक से दुःखी रोती है १४ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वण्येकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली कि गिद्ध और शृगाल भीमसेन के गिरायेहुये राजा अवन्ती को जो कि शूरवीर और बहुत बान्धव रखनेवाला है भाइयों से रहितके समान खाते हैं १ हे श्रीकृष्णजी ! उस कर्णको भी जो कि शत्रुओं के समूहोंका मर्दन करनेवालाहै खैंचते हैं हे मधुसूदनजी ! शूरोंका नाश करके वीरशय्यापर सोने वाले रुधिर से भरेहुये उसको देखो शृगाल कंक और काकआदिक अनेक मांस-भक्षी उसको २।३ कैसे २ मार्गोंसे खैंचते हैं समय की विपरीतताको देखो युद्ध करनेवाले शूर वीरशय्यापर सोनेवाले ४ राजा अवन्ती के पास रोनेवाली स्त्रियां नियत हैं हे श्रीकृष्णजी ! इस बड़े धनुर्धारी और भल्ल से मृतक प्रतीपवंशी बाह्लीक को ५ शार्दूल के समान सोवताहुआ देखो इस मरेहुये के भी मुखका वर्ण ऐसा शोभा देताहै ६ जैसे कि पूर्णमासी का पूर्ण चन्द्रमा होताहै पुत्रशोक से दुःखी और प्रतिज्ञाको पूरा करनेवाले ७ इन्द्रके पुत्र अर्जुन से युद्ध में जयद्रथ गिराया गया प्रतिज्ञा को सत्य करने के अभिलाषी अर्जुनने ग्यारह अक्षौहिणी सेना को हटाकर महात्मासे रक्षित ८ इस जयद्रथ को मारा हे जनार्दनजी ! देखो इस सिन्धुसौवीर देशके स्वामी अहंकारी साहसी ९ जयद्रथ को शृगाल और गिद्ध खाते हैं हे अविनाशिन् ! वह डरातेहुये पक्षी इन आज्ञाकारी स्त्रियों से रक्षित जयद्रथ को १० पासही से नीचे और घने स्थानपर खैंचते हैं यह काम्बोज और यवनदेशी स्त्रियां इस रक्षित महाबाहु ११ सिन्धुसौवीर देशके स्वामी जयद्रथ के चारोंओर नियतहैं हे जनार्दनजी ! जब यह जयद्रथ केकयदेशियों समेत द्रौपदी को पकड़ कर भागा १२ तभी पाण्डवों के हाथ से मारने के योग्य था उस समय दुश्शलाके माननेवाले पाण्डवों के हाथ से जयद्रथ बचाथा १३ हे श्रीकृष्ण ! अब उन पाण्डवों ने उस बहनोई को कैसे नहीं माना वह मेरी पुत्री बालक दुःखी विलाप करती १४ और पाण्डवोंको पुकारती आप अपने शरीर

को घायल करती है हे श्रीकृष्णजी ! इससे अधिक मेरा और कौनसा दुःख होगा १५ जो बालक पुत्री विधवा और पुत्रवधू मृतकपतिवाली हैं हाय २ धिक्कार शोक भयसे जुदेके समान दुश्शला को देखो १६ उस पतिके शिरको न पाकर इधर उधर दौड़नेवाली है जिसने कि पुत्रको चाहनेवाले सब पाण्डवों को रोका १७ वह बड़ी सेनाओं को मारकर आप कालके वशीभूत हुआ चन्द्र-मुखी स्त्रियां उस हाथीके समान मतवाले बड़े दुःखसे विजय होनेवाले वीरको घेर करके रोदन करती हैं १८ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे तात ! युद्ध में धर्मज्ञ धर्मराज से माराहुआ साक्षात् नकुल का मामा यह शल्य सोता है १ हे पुरुषोत्तम ! जो कि सदैव सर्वत्र तेरे साथ ईर्षा करता था वह बड़ा बलवान् पराक्रमी मद्रका राजा सोता है २ युद्ध में कर्ण के रथको पकड़नेवाले जिस शल्यने पाण्डवोंकी विजय के निमित्त कर्णके तेजको क्षीण किया ३ दुःखका स्थान है और धिक्कार है कि शल्य के मुखको काकों से काटा हुआ देखो जो कि पूर्ण चन्द्रमा के समान सुन्दर दर्शन कमलपलाश के समान नेत्रधारी और स्वच्छ था ४ जिस सुवर्ण वर्णवाले की जिह्वा तपायेहुये सुवर्ण के समान प्रकाशमान और मुखसे निकलीहुई पक्षियोंसे भक्षण कीजाती है ५ राजा मद्रके कुलकी रोदन करनेवाली स्त्रियां इस युधिष्ठिर के हाथ से मरे हुये युद्ध के शोभादेनेवाले शल्य के चारोंओर नियत हैं ६ यह अत्यन्त सूक्ष्म-वस्त्रों की पोशाकवाली पुकारनेवाली क्षत्रियाणी नरोत्तम राजा मद्रको पाकर पुकार रही हैं ७ स्त्रियां पृथ्वीपर गिरेहुये शल्यको चारोंओरसे घेरकर ऐसे समीप नियत हैं कि जैसे बारम्बार बच्चा उत्पन्न करनेवाली हथिनियां कीच में डूबेहुये हाथी को घेरलेती हैं ८ हे वृष्णिनन्दन ! इस रक्षा देनेवाले शूर शल्य को बाणों से विदीर्ण शरीर और वीरोंकी शय्यापर सोनेवाला देखो ९ यह पहाड़ी श्रीमान् प्रतापवान् भगदत्त हाथी का अंकुश हाथ में रखनेवाला और पृथ्वीपर पड़ा हुआ सोता है १० जिस शृगालादिक के खायेहुये की यह स्वर्णमयी माला केशों को शोभा देतीहुई शिरपर विराजमान है ११ निश्चय करके इसके साथ पाण्डवों का युद्ध वह हुआ जो कि बड़ा भयकारी अत्यन्त कठिन रोमाञ्चों का

खड़ा करनेवाला था और इन्द्र और वृत्रासुर के युद्ध के समान था १२ यह महाबाहु पाण्डव अर्जुन से युद्ध करके और संशय को उत्पन्न करके कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरसे गिराया गया १३ लोक में जिसकी शूरता और बल पराक्रम के समान कोई नहीं है युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले यह भीष्मजी आसन्न-मृत्यु होकर सोते हैं १४ हे श्रीकृष्णजी ! इस सूर्य के समान तेजस्वी सोनेवाले भीष्मजी को ऐसे देखो जैसे कि प्रलयकाल में कालसे प्रेरित आकाश से गिराहुआ सूर्य होता है १५ हे केशवजी ! यह पराक्रमी नररूप सूर्य युद्ध में शस्त्रोंके तापसे शत्रुओंको सन्तप्त करके ऐसा अस्तंगत होता है जैसे कि अस्ताचलपर वर्तमान सूर्य होता है १६ इस वीर्यको च्युत न करनेवाले अजेय शरशय्यापर वर्तमान शूरवीरों से सेवित वीरशय्यापर सोनेवाले भीष्म को देखो १७ करणी नालीक और नाराचनाम बाणों से उत्तम शय्याको बिछवाकर उसपर चढ़ेहुये ऐसे सोते हैं जैसे कि भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी शरवण को पाकर सोते हैं १८ यह गंगाजी के पुत्र रुईसे रहित तीन बाणों से बने अर्जुन के दियेहुये तकिये को शिरके नीचे धरकर १९ पिता के आज्ञानुसारी ब्रह्मचारी महातपस्वी युद्ध में अनुपम भीष्मजी सोते हैं २० हे तात ! सब बातों के जाननेवाले नररूप होकर इस धर्मात्माने ब्रह्मज्ञानके बल से देवताओं के समान प्राणों को धारण किया है २१ युद्धमें कोई कर्मकर्ता पण्डित और पराक्रमी नहीं है जब कि यह शन्तनुके पुत्र भीष्मजी सरीखे भी बाणों से घायल सोते हैं २२ पाण्डवों से पूछे हुये इस शूर धर्मवान् सत्यवक्ता ने आप अपनी मृत्यु को युद्धमें बतलादिया २३ जिसने विनाशवान् कौरववंश फिर सजीव किया उस बड़े बुद्धिमान् ने कौरवों समेत नाशको पाया २४ हे माधवजी ! इस देवता के समान नरोत्तम देवव्रत भीष्म के स्वर्गवासी होने पर कौरवलोग धर्मों के विषय किससे पूछेंगे २५ जो कि अर्जुन का विनेता और और सात्यकी का गुरु है उस कौरवों के उत्तम गुरु द्रोणाचार्य को पृथ्वी पर पड़ाहुआ देखो २६ हे माधवजी ! जैसे कि देवताओं के ईश्वर इन्द्र और बड़े पराक्रमी भार्गव परशुरामजी चारोंप्रकारके अस्त्रोंके ज्ञाताथे उसीप्रकार द्रोणाचार्य भी जानते थे २७ जिसके प्रभाव से पाण्डव अर्जुन ने कठिन कर्मको किया वह मृतक होकर सोता है उसको भी अस्त्रों ने रक्षित नहीं किया २८ कौरवोंने जिसको अग्रवर्ती करके पाण्डवों को बुलाया वह पृथ्वीपर मराहुआ ऐसे सोता

है जैसे कि निर्ज्वलित अग्नि होती है २९ हे माधवजी ! मृतक द्रोणाचार्य के धनुषकी मुष्टि और युद्ध के हस्तत्राण विना जुदेहुये रणभूमि में ऐसे दिखाई पड़ते हैं जैसे कि जीवतेहुये के होते हैं ३० हे केशवजी ! चारों वेद और सब अस्त्र जिस शूरसे ऐसे पृथक् नहीं हुये जैसे कि आदिमें प्रजापतिजीसे जुदे नहीं हुये थे ३१ उनके उन दोनों चरणोंको शृगाल खेंचते हैं जो कि दण्डवत्के योग्य और वन्दीजनों से स्तूयमान अतिशुभ होकर सैकड़ों शिष्यों से पूजित थे ३२ हे मधुसूदनजी ! यह दुःख से घातितबुद्धि कृपी इस धृष्टद्युम्न के हाथ से मृतक द्रोणाचार्य के पास महादुःखी नियत है ३३ उस रोदन करनेवाली पीड़ित खुले केश नीचा शिर किये शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ अपने पति द्रोणाचार्यके समीप नियत को देखो ३४ हे केशवजी ! यह जटिला ब्रह्मचारिणी रणभूमि में धृष्टद्युम्न के बाणों से टूटे कवचवाले द्रोणाचार्य के पास नियत है ३५ यह अत्यन्त कोमल शरीर यशवन्ती दुःखी कृपी युद्धमें मृतकपति के क्रियाकर्म में दुःख से उपाय करती है ३६ सामग ब्राह्मण विधिपूर्वक अग्नियों को धारण करके सब ओर से चिताको अग्निसे प्रज्वलित करके द्रोणाचार्य को उसमें रखकर सामवेदके तीन मन्त्रों को गाते हैं ३७ हे माधवजी ! यह जटिल ब्रह्मचारी धनुष शक्ति और रथोंकी नीड़ोंसे चिताको बनाते हैं ३८ नाना प्रकार के दूसरे बाणोंसे चिताको बनाकर बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य को अच्छे प्रकार से धरकर जलातेहुये मन्त्रों को गातेहुये रुदन को करते हैं ३९ दूसरे शिष्य अग्नि में अग्नि को धारण करके और द्रोणाचार्य को अग्नि में हवन करके अन्त में नियत होकर तीन साममन्त्रों को गाते हैं ४० द्रोणाचार्य के शिष्य वह ब्राह्मण चिताको दक्षिण करके और कृपीको आगे करके श्रीगंगाजी के सम्मुख जाते हैं ४१ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी ! सम्मुखही सात्यकी के हाथ से गिरायेहुये और बहुतसे पक्षियों से घिरे हुये सोमदत्त के पुत्रको देखो १ हे जनार्दनजी ! पुत्रशोकसे दुःखी सोमदत्त मानो बड़े धनुर्धारी सात्यकी की निन्दा करता हुआ देखता है २ यह भूरिश्रवा की माता निर्दोष दुःख से पूर्ण अपने पति सोमदत्त को मानो विश्वास कराती है ३ कि हे महाराज ! प्रारब्ध से इस भरतवंशियों

के ; भयानक नाशको और कौरवों के घोर प्रलयकाल के समान रोदन करने
को तुम नहीं देखते हो ४ और प्रारब्ध से इस हजारों दक्षिणा देनेवाले बहुत
यज्ञों से पूजन करनेवाले यूप ध्वजाधारी मृतक पुत्रको नहीं देखते हो ५ हे
महाराज ! प्रारब्ध से रणभूमि में इन पुत्रवधुओं के घोर विलाप को ऐसे नहीं
देखते हो जैसे कि समुद्रपर सारसियों के शब्द होते हैं ६ तेरी पुत्रवधू मृतक पति-
वाली एकवस्त्रार्ध से गुप्त शरीर और शिरके खुले काले केशवाली चारों ओर को
दौड़ती हैं ७ तुम प्रारब्ध से शृगाल आदिक से खाई हुई टूटी भुजा और अर्जुन
से गिरायेहुये नरोत्तम पुत्र को नहीं देखते हो ८ अब यहां युद्ध में मृतक भूरि-
श्रवा और शल्यको और नानाप्रकार के पुत्रवधुओं को नहीं देखतेहो ९ प्रारब्ध
से यूपभुजाधारी महात्मा भूरिश्रवाके उस सुवर्ण के छत्रको रथके बैठने के स्थान
पर गिराहुआ नहीं देखतेहो १० भूरिश्रवाकी यह श्यामचक्षु स्त्रियां सात्यकीके
हाथ से मरेहुये पतिको घेरकर शोचती हैं ११ हे केशवजी ! दुःखकी बात है कि
पति के शोक से पीड़ित यह स्त्रियां दुःखका विलाप करके सम्मुख पृथ्वीपर
गिरती हैं १२ हे अर्जुन ! तुमने बीभत्सुनाम हो यह निन्दित कर्म कैसे किया
जो यज्ञ करनेवाले अचेत शूरकी भुजा को काटा १३ सात्यकी ने भी उससे
अधिक पापकर्म किया कि शरीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाले तीक्ष्ण-
बुद्धिका शिर काटा १४ हे धर्म के अभ्यासिन् ! दो के हाथ से मारेहुये तुम अकेले
सोते हो अर्जुन गोष्ठी और सभाओं में क्या कहेगा १५ और वह सात्यकी भी
इस अपवित्र अपकीर्ति करनेवाले कर्म को करके क्या कहेगा हे माधवजी !
यह भूरिश्रवाकी स्त्रियां पुकारती हैं १६ भूरिश्रवा की यह स्त्री जिसकी कमर
हाथकी मुट्ठी के समान है पतिकी भुजाको बगल में लेकर दुःखका विलाप
करती है १७ कि यह वह हाथ है जो कि शूरोंका मारनेवाला मित्रों को निर्भ-
यता देनेवाला हजारों गोदान करनेवाला और क्षत्रियों का नाश करनेवाला
है १८ यह वह हाथ है जो कि रसनोत्कर्षी अर्थात् स्त्रियोंके वस्त्रों का उघा-
ड़नेवाला पीनस्तनों का मर्दन करनेवाला नाभि छाती और जंघाओं का स्पर्श
करनेवाला और नीवी अर्थात् आंगीनाम स्तनरक्षक वस्त्रका हटानेवाला है १९
वासुदेवजी के सम्मुख सुगमकर्मी अर्जुनने युद्ध में दूसरे के साथ लड़नेवाले
तुझ अचेतका हाथ काटडाला २० हे जनार्दनजी ! सत्पुरुषों के मध्य में और
कथाओं में अर्जुन के इस बड़े कर्मको क्या कहोगे अथवा आप अर्जुनही क्या

कहेगा २१ यह उत्तम स्त्री इस प्रकार निन्दा करके मौन है यह सपत्नी स्त्रियां इसको ऐसे शोचती हैं जैसे कि अपनी पुत्रवधू को शोचती होती हैं २२ यह बलवान् और सत्यपराक्रमी शकुनी गान्धारदेश का राजा नातेमें मामा अपने भानजे सहदेव के हाथ से मारागया २३ जो कि पूर्वसमय में सुवर्णदण्डीवाले पंखोंसे वायु किया जाताथा वह अब सोताहुआ पक्षियों के परोंसे वायु किया जाता है २४ जो कि अपने सैकड़ों और हज़ारों रूपोंको करलेता था उस मायावी की माया पाण्डवों के तेजसे नष्ट होगई २५ जिस छली ने सभा में माया से जीवते युधिष्ठिर को और बड़े राज्य को विजय किया अन्त में वह पराजित हुआ २६ हे श्रीकृष्णजी ! पक्षीगण चारोंओर से उस शकुनी की वर्तमानता करते हैं जो कि मेरे पुत्रों के लिये कुल्हाड़ा और संसार के नाशके अर्थ शिक्षा पानेवाला हुआ २७ इसने मेरे पुत्र और अपने समूह समेत अपने मरने के लिये पाण्डवों के साथ बड़ी शत्रुता करी २८ हे प्रभो ! जैसे कि मेरे पुत्रों के लोक शस्त्रों से विजयहुये उसी प्रकार इस दुर्बुद्धिके भी लोक शस्त्रों से विजय होगये २९ हे मधुसूदनजी ! यह कुटिलबुद्धि वहां भी मेरे सत्य बुद्धि-वाले पुत्रों को कहीं भाइयों समेत विरोधी न करे ३० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी ! इस मृतक और पृथ्वी की धूलिपर सोनेवाले काम्बोज के राजा को देखो जो कि अजेय उत्तम स्कन्धयुक्त होकर काम्बोज-देशी उत्तम पुरुषों के योग्य है १ वह भार्या जिसकी रुधिर भरी चन्दनसे लिप्त भुजा को देखकर महादुःखी होकर दुःखका यह विलाप करती है २ कि यह वह शुभ उँगलियां और हथेली रखनेवाले परिघनाम शस्त्र के समान भुजा हैं पूर्व समय में जिनके मध्य को पाकर मुझको कभी प्रीतिने नहीं त्याग किया ३ हे राजन् ! मृतक बन्धुवाली अनाथ कम्पायमान मधुर शब्दवाली मैं तुमसे जुदी होकर किस दशाको पाऊंगी ४ धूपमें म्लान नाना प्रकार की मालाओं का रूपान्तर होजाता है परिश्रम से पीड़ित स्त्रियों के शरीरको शोभा त्याग नहीं करती है ५ हे मधुसूदनजी ! इस सोनेवाले शूरवीर राजा कलिङ्ग को चारों ओर से देखो जिसकी बड़ी भुजा प्रकाशित बाजूबन्दों के जोड़े से अलंकृत है ६ हे

जनार्दनजी ! स्त्रियां सब ओरसे इस जयत्सेन राजा मगधको घेरकर अत्यन्त रोदन करती हुई व्याकुल हैं ७ हे मधुसूदनजी ! इन बड़े नेत्रवाली और सुन्दर स्वरवाली स्त्रियों के शब्द जो कि चित्तरोचक और श्रवणोंको प्यारे हैं मेरे मनको व्यथित करते हैं ८ गिरेहुये वस्त्र और भूषणवाली शोकसे पीड़ित रोदन करनेवाली मगधदेशी स्त्रियां जो कि सुन्दर वस्त्रवाले शयनों से युक्त थीं पृथ्वी पर सोती हैं ९ यह स्त्रियां कौशलदेशों के राजा बृहद्बलनाम अपने पतिको घेर कर पृथक् पृथक् रोती हैं १० यह बारम्बार अचेत और दुःख से पूर्ण स्त्रियां अभिमन्यु के भुजबलसे मारे और उसके अंगों में लगेहुये बाणोंको निकालती हैं ११ हे माधवजी ! इन सब निर्दोष स्त्रियों के मुख धूप और परिश्रम से ऐसे दिखाई पड़ते हैं जैसे कि कुम्हलाये हुये कमल होते हैं १२ धृष्टद्युम्नके सब पुत्र बालक सुवर्णकी माला और सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले शूरवीर द्रोणाचार्य के हाथ से मरेहुये सोते हैं १३ जिसका रथ अग्निकुण्ड है धनुष अग्नि है और बाण शक्ति गदा यह इन्धन हैं उस द्रोणाचार्य को पाकर ऐसे भस्म होगये जैसे शलभनाम पक्षी अग्निको पाकर भस्म होजाते हैं १४ उसी प्रकार सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले कैकयदेशी पांचों शूर भाई सम्मुखता में द्रोणाचार्य के हाथ से मरेहुये सोते हैं १५ तप्त सुवर्ण के समान कवच तालवृक्ष के समान ध्वजाधारी रथों के समूह अपने तेज से पृथ्वी को ऐसे प्रकाशित करते हैं जैसे कि ज्वलित अग्नि प्रकाश करती है १६ हे माधवजी ! युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथ से गिराये हुये द्रुपद को ऐसे देखो जैसे कि वन में बड़े सिंह से मारेहुये बड़े हाथी को देखते हैं १७ राजा द्रुपद का श्वेत निर्मल छत्र ऐसे प्रकाशमान है जैसे कि शरदऋतु में चन्द्रमा होता है १८ यह दुःखी भार्या और पुत्रवधू पाञ्चाल के वृद्ध राजा द्रुपदको दाह देकर दाहिनी ओरसे जाती हैं १९ अचेत स्त्रियां द्रोणाचार्य के हाथ से मारेहुये इस महात्मा शूर चंदेरके राजा धृष्टद्युम्नको उठाती हैं २० हे मधुसूदनजी ! यह बड़ा धनुर्धारी युद्ध में द्रोणाचार्य के अस्त्र को दूर करके माराहुआ ऐसे सोता है जैसे कि नदी से उखाड़ाहुआ वृक्ष होता है २१ यह महारथी शूर चंदेरी का राजा धृष्टकेतु युद्ध में हज़ारों शत्रुओं को मारकर मरा हुआ सोता है २२ हे हृषीकेशजी ! स्त्रियां उन पक्षियों से घायल होती सेना और बान्धवों समेत मरेहुये राजा चंदेरी के पास नियत हैं २३ हे श्रीकृष्णजी ! राजा चंदेरी की यह उत्तम स्त्रियां इस सत्यपराक्रमी वीर मैदान में सोनेवाले

अपने पौत्र को बगल में लेकर रोती हैं २४ हे श्रीकृष्णजी ! इसके पुत्र सुन्दर मुख और कुण्डलधारी को युद्ध में द्रोणाचार्य के बहुत प्रकार के बाणों से घायल देखो २५ निश्चय करके इसने अबतक भी रणभूमि में नियत शत्रुओं के साथ युद्ध करनेवाले वीर पिताको त्याग नहीं किया २६ हे माधवजी ! इस प्रकार मेरे पुत्र का भी पुत्र शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला लक्ष्मण अपने पिता दुर्योधन के पीछे गया २७ हे श्रीकृष्णजी ! इन अवन्तिदेश के राजा विन्द अनुविन्द को ऐसे देखो जैसे कि हिमऋतु के अन्त पर वायु से गिरायेहुये दो पुष्पित शालवृक्षों को देखते हैं यह दोनों सुवर्ण के बाजूबन्द और कवच से अलंकृत बाण खड्ग धनुष धारण करनेवाले बैलके समान नेत्र रखनेवाले निर्मल मालाधारी सोते हैं २८। २९ हे श्रीकृष्णजी ! सब पाण्डव आपके साथ मारने के अयोग्य हैं जो कि द्रोणाचार्य, भीष्म, कर्ण और कृपाचार्य से भी बचेहुये हैं दुर्योधन, अश्वत्थामा, सिन्धुका राजा जयद्रथ, विकर्ण, सोमदत्त और शूर कृतवर्मा से भी बचे ३०। ३१ जो नरोत्तम शस्त्रों की तीक्ष्णतासे देवताओं को भी मारसक्ते थे वह सब इस युद्ध में मारेगये इस विपरीत समय को देखो ३२ हे माधव जी ! निश्चय करके दैवका कोई बड़ाभार नहीं है जो यह शूर क्षत्रिय क्षत्रियों के हाथ से मारेगये ३३ हे श्रीकृष्णजी ! मेरे वेगवान् पुत्र तभी मारेगये जब कि तुम अपने अभीष्ट प्राप्ति से रहित उपप्लवी स्थानको लौटकर गये ३४ उसी समय मुझको भीष्मपितामह और ज्ञानी विदुरजी ने समझायाथा कि अपने पुत्रोंपर प्रीति मत करो ३५ उन दोनों की वह दूरदर्शकता मिथ्या होने के योग्य नहीं थी इसीसे हे जनार्दनजी ! मेरे पुत्र थोड़ेही दिनोंमें नाश होगये ३६ वैशम्पायन बोले हे भरतवंशिन् ! वह गान्धारी यह सब कहकर शोकसे मूर्च्छित दुःख से घायलबुद्धि धैर्यको त्यागकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ३७ फिर क्रोधसे पूर्ण शरीर पुत्रशोकमें डूबी असावधान इन्द्रिय गान्धारीने श्रीकृष्णजी को दोष लगाया ३८ गान्धारी बोली हे श्रीकृष्ण ! पाण्डवों के और धृष्टद्युम्नके पुत्रादिक सब परस्पर भस्महुये हे जनार्दन ! तुम किस हेतुसे इन विनाश होनेवालों को त्याग किया ३९ समर्थ और बहुतसे नौकर चाकर रखनेवाले बड़े बल में नियत दोनों ओर के विषयों में समर्थ शस्त्ररूप वचन रखनेवाले ने किस कारण से उपद्रव को दूर नहीं किया ४० हे महाबाहो, मधुसूदनजी ! जिस कारण से तुझ इच्छावान् ने जान बूझकर कौरवों का नाश होनेदिया इस हेतुसे तुमभी उसके फलको

पावोगे ४१ पतिकी सेवा करनेवाली मैंने जो कुछ तप प्राप्त किया उस दुष्प्राप्य तप के द्वारा तुझ चक्रगदाधारी को शाप देती हूं ४२ हे गोविन्दजी ! जो कि तुमने परस्पर जातिवालों को मारनेवाले कौरव और पाण्डवों को नहीं रोका इस हेतु से तुम भी अपनी जातिवालोंको मारोगे ४३ हे मधुसूदनजी ! तुमभी छत्तीसवां वर्ष वर्तमान होनेपर मन्त्री पुत्र ज्ञातिवाले वनमें फिरनेवाले ४४ अज्ञातरूप लोकों में गुप्त अनाथ के समान निन्दित उपाय से मरणको पावोगे ४५ इसी प्रकार तेरी स्त्रियां भी जिनके पुत्र बान्धव और ज्ञातिवाले मारेगये ऐसे चारोंओर को दौड़ेंगी जैसे कि यह भरतवंशियों की स्त्रियां दौड़ती हैं ४६ वैशम्पायन बोले कि बड़े साहसी वासुदेवजी इस घोर वचनको सुनकर मन्द मुसकान करते हुये उस देवी गान्धारी से बोले हे क्षत्रियाणी ! मैं जानता हूं कि तू मेरे कर्म के समान कर्मको भी अपने तपके नाश के लिये करती है यादवलोग दैवसेही नाशको पावेंगे इसमें सन्देह नहीं है हे शुभस्त्री ! मेरे सिवाय कोई दूसरा पुरुष यादवों की सेनाको मारनेवाला नहीं है वह सब अन्य मनुष्य देवता और दानवों से भी अवध्य हैं ४७।४८ इस हेतु से यादव परस्पर विनाश को पावेंगे श्री-कृष्णजी के इस प्रकार कहने पर पाण्डव लोग भयभीत चित्त अत्यन्त व्याकुल और जीवन में निराशायुक्त हुये ५० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि पञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले हे गान्धारि ! उठो उठो शोक में चित्तको मत करो तेरे अपराध से कौरवों ने नाशको पाया १ जो उस दुर्बुद्धि अत्यन्त अहंकारी ईर्षा करनेवाले दुर्योधन को अग्रवर्ती करके अपने दुष्ट कर्मको अच्छा मानती है २ जो कि कठोर वचन शत्रुताको प्रिय जाननेवाला मनुष्य और वृद्धों की आज्ञा के विपरीत विरुद्धकर्म करनेवाला था यहां तू अपने कियेहुये दोषको कैसे मुझमें लगाना चाहती है ३ जो मृतक अथवा विनाशयुक्त व्यतीत समय को शोचती है और दुःख से दुःखको पाती है अर्थात् आदि अन्त के दोनों दुःखोंको पाती है ४ ब्राह्मणीने तपके निमित्त उत्पन्न होनेवाले गर्भको धारण किया गौ ने भार लेचलनेवाले को घोड़ीने दौड़नेवाले को शूद्राने दास को वैश्याने पशुपालको और राजपुत्री क्षत्रियाने युद्धके अभिलाषी गर्भको धारण किया ५ वैशम्पायन

बोले कि शोकसे व्याकुल नेत्र गान्धारी वासुदेवजीके उस अप्रिय और दुर्बारा कहे हुये वचनको सुनकर मौन होगई ६ फिर राजऋषि धृतराष्ट्र ने अज्ञान से उत्पन्न होनेवाले मोहको रोककर धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिरसे पूछा ७ कि हे पाण्डव ! तुम जीवतीहुई सेनाकी संख्या के जाननेवाले हो और जो मृतक शूरवीरों की संख्या को जानते हो तो मुझसे कहो ८ युधिष्ठिर बोले हे राजन् ! इस युद्ध में एक अरब छियासठ किरोड़ बीस हज़ार शूरवीर मारेगये ९ (इस समय के लोग आश्चर्य न करें और दो बातों की ओर ध्यान करें प्रथम यह कि इस महाभारतके युद्ध में सब संसार भरेके राजा सेनासमेत इकट्ठे हुयेथे वह सब सेनासमेत मारेगये दूसरे आजकलकी अपेक्षा उन दिनों में मनुष्यों में संख्या भी अधिकथी इसी प्रकार पृथ्वी का परिमाण भी अधिकथा) हे राजेन्द्र ! दृष्टि न आनेवाले वीरों की संख्या चौबीस हज़ार एकसौ पैंसठ है धृतराष्ट्र बोले हे पुरुषोत्तम, महाबाहो, युधिष्ठिर ! उन्हों ने किस गतिको पाया वह मुझ से कहो मेरे विचार से तुम सब बातों के जाननेवालेहो १० । ११ युधिष्ठिर बोले जिन प्रसन्नचित्तों ने बड़े युद्ध में अपने शरीर को नाश किया वह सत्यपराक्रमी इन्द्रलोक के समान लोकों को गये १२ हे भरतवंशिन् ! जो अप्रसन्नचित्तसे युद्ध में लड़तेहुये मारेगये वह गन्धर्बलोक को गये १३ और जो रणभूमि में नियत याचना करते पराङ्मुख होकर शस्त्रों से मारेगये वह गुह्यकों के लोकों को गये १४ जो पात्यमान अशस्त्र लज्जा से युक्त और बड़े साहसी युद्ध में शत्रुओं के सम्मुख शत्रुओं के हाथसे गिरते क्षत्रिय धर्मको उत्तम माननेवाले तेजशस्त्रोंसे मारेगये वह निस्सन्देह ब्रह्मलोकको गये १५ । १६ हे राजन् ! जो मनुष्य यहां रणभूमिके मध्य में जिस किसी प्रकार से मारे गये वह उत्तर कौरवदेश को गये १७ धृतराष्ट्र बोले हे पुत्र ! तुम सिद्धों के समान किस ज्ञानबल से इस प्रकार देखतेहो हे महाबाहो ! वह मुझ से कहो जो मेरे सुनने के योग्य है १८ युधिष्ठिर बोले कि पूर्व समयमें आपकी आज्ञानुसार वनमें घूमनेवाले मैंने तीर्थयात्रा के योगसे इस अनुग्रह को प्राप्त किया १९ देवऋषि लोमशऋषि देखे उनसे इस मनुस्मृतिको पाया और निश्चय करके पूर्व समय में ज्ञानयोग से दिव्य नेत्रों को पाया २० धृतराष्ट्र बोले हे भरतवंशिन् ! क्या तुम अनाथ और सनाथ लोगों के शरीरों को विधि के अनुसार दाह करोगे २१ जिन्होंका संस्कार करनेके योग्य नहीं है और यहां जिनकी अग्नि नियत नहीं है हे तात ! कर्मों की अधिकतासे हम

किसका क्रियाकर्म करें जिन्होंको सुपर्ण अर्थात् गरुड़ और गिद्ध इधर उधर से खैंचते हैं हे युधिष्ठिर ! क्रियाकर्म से उन्होंके लोक होंगे २२ । २३ वैशम्पायन बोले हे महाराज ! इस वचन को सुनकर कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिरने दुर्योधनका पुरोहित सुधर्मा, धौम्यऋषि, सूत, संजय, बड़े बुद्धिमान् विदुरजी, कौरव युयुत्सु, इन्द्रसेनादिक भृत्य और सब सूत २४ । २५ इन सबलोगोंको आज्ञा करी कि आप सबलोग इन्हों के सब प्रेतकार्यों को करो जिससे कि कोई शरीर अनाथ के समान नाशको न पावे २६ धर्मराजकी आज्ञा से विदुर, सूत, संजय, सुधर्मा और धौम्य पुरोहित समेत इन्द्रसेन और जयने २७ चन्दन, अगुरु, काष्ठ और कालीयक, घृत, तेल, सुगन्धियां, बहुमूल्य क्षौमवस्त्र २८ लकड़ियों के ढेर और वहां पर टूटेहुये रथ और नानाप्रकार के शस्त्रोंको इकट्ठा करके २९ सावधानों ने बड़े उपायों से चिताओंको बनाकर मुख्य मुख्य राजाओं को शास्त्रविहित कर्मों के द्वारा दाह किया ३० राजा दुर्योधन उसके सौ भाई शल्य राजा शल भूरिश्रवा ३१ राजा जयद्रथ, अभिमन्यु, दुश्शासन के पुत्र, राजा धृष्टकेतु ३२ बृहन्त, सोमदत्त, सैकड़ों सृंजयदेशी, राजा क्षेमधन्वा, विराट, द्रुपद, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, पराक्रमी युधामन्यु, उत्तमौजस ३३ । ३४ कौशल्य, द्रौपदी के पुत्र, सौबलका पुत्र शकुनी, अचल, वृषक, राजा भगदत्त ३५ क्रोधयुक्त सूर्यका पुत्र कर्ण, पुत्रों समेत बड़े धनुर्धारी केकयदेशी, महारथी त्रिगर्तदेशी ३६ राक्षसाधिप घटोत्कच, बक, राक्षसोंका राजा अलम्बुष राजा जलसिन्धु इनको और अन्य हजारों राजाओंको घृत की धाराओं से होमीहुई प्रकाशमान अग्नियों से अच्छे प्रकार दाह किया ३७।३८ कितनेही महात्माओं के पितृयज्ञ वर्तमान हुये और सामवेदके मन्त्रों से गान किया उन्होंने दूसरोंके साथ शोच किया रात्रिमें सामवेद की ऋचा और स्त्रियों के रोदनों के शब्दों से सब जीवों का मोह आदिक वर्तमान हुआ ३९ । ४० वह निर्धूम अत्यन्त प्रकाशित अग्नियां आकाश में दृष्टिपड़ीं और ग्रह छोटे बादलों से ढकगये ४१ वहांपर नाना प्रकार के देशोंसे आनेवाले जो अनाथ भी थे उन सबको इकट्ठा करके ४२ सीधे वृद्धियुक्त तेल से संयुक्त लकड़ियों की चिताओं से विदुरजी ने राजा की आज्ञानुसार उन सबको दाह किया कौरवराज युधिष्ठिर उन्होंकी क्रियाओं को कराके धृतराष्ट्र को आगे करके श्रीगङ्गाजी के सम्मुख गये ४३ । ४४ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि कुरूणामौर्ध्वदैहिके षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि उन्होंने कल्याणरूप पवित्र जलोंसे पूर्ण श्रीगङ्गाजी को और बड़ी रूपवती स्वच्छ जल रखनेवाली ह्रदिनीको पाकर १ उत्तरीयवस्त्र और पगड़ी आदि को उतारकर पिता भाई पौत्र स्वजन पुत्र और नानाओंके जलदानों को किया अत्यन्त दुःखी रोनेवाली सब कौरवीय स्त्रियों ने अपने अपने पतियों को जलदान किया २। ३ धर्मज्ञ लोगोंने सुहृदों की भी जल-क्रियाओं को किया वीरोंकी पत्नियों से वीरों का जलदान करनेपर ४ गङ्गाजी सूपतीर्था अर्थात् सुन्दर घाटवाली हुई और फिर शीघ्रगामी होगई वह गङ्गाजी का तट महासमुद्रके रूप प्रसन्नता और उत्सवसे रहित ५ वीरों की स्त्रियों से संयुक्त होकर महाशोभायमान हुआ हे महाराज! इसके पीछे शोकसे पीड़ित धीरे धीरे रोदन करती कुन्ती ६ अकस्मात् अपने पुत्रों से यह वचन बोली कि जो वह बड़ा धनुर्धारी महारथी ७ वीरों के चिह्नों से चिह्नित युद्ध में अर्जुन के हाथ से विजय हुआ हे पाण्डव! तुम जिसको सूतका और राधाका पुत्र मानतेहो ८ और जो समर्थ सूर्य के समान सेनाके मध्यमें विराजमान हुआ प्रथम जिसने तुम सब समेत तुम्हारे साथियोंसे युद्ध किया ९ और जो दुर्योधन की सब सेना को खेंचता शोभायमान हुआ जिसके बलके समान सम्पूर्ण पृथ्वीपर कोई राजा नहीं है १० और जिस शूरने सदैव इस पृथ्वीपर शुभ कीर्ति को प्राणों से भी अधिक चाहा उस सत्यप्रतिज्ञ युद्ध में पराङ्मुख न होनेवाले ११ सुगमकर्मी अपने भाई कर्ण का जलदान करो वह तुम्हारा बड़ा भाई सूर्यदेवता से मुझमें उत्पन्न हुआ था वह शूर कुण्डल कवचधारी और सूर्य के समान तेजस्वी था सब पाण्डव माता के उस अप्रिय वचनको सुनकर १२। १३ कर्णको शोचते हुये फिर पीड़ावान् हुये इसके पीछे सर्प के समान श्वास लेता वह कुन्ती का पुत्र पुरुषोत्तम वीर युधिष्ठिर अपनी मातासे बोला कि जो बाणरूप तरङ्ग ध्वजा रूप भँवर बड़ी भुजारूप बड़े ग्राह रखनेवाली १४। १५ ज्याशब्द से शब्दाय-मान बड़े ह्रदरूप उत्तम रथका रखनेवाला था और अर्जुन के सिवाय दूसरा मनुष्य जिसकी बाणवृष्टि को पाकर सम्मुख नियत नहीं हुआ वह देवकुमार पूर्वसमय कैसे आपका पुत्र हुआ जिसके भुजों के प्रताप से हम सब ओर से तपाये गये १६। १७ जैसे कि अग्नि को कपड़ों से ढके उसी प्रकार तुमने

इसको किस निमित्त गुप्त किया जिसकी कठिन भुजाओं का बल धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे ऐसे उपासना कियागया १८ जैसे कि हम लोगोंसे अर्जुन के भुजबल की उपासना करीगई सब राजाओं के मध्य में कुन्ती के पुत्र कर्ण के सिवाय दूसरा रथी और महाबलवान् उत्तम रथी भी रथोंकी सेनाको नहीं रोकसक्ता था और सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ हमारा बड़ा भाई था १९ । २० आपने प्रथमही उस श्रेष्ठ पराक्रमीको कैसे उत्पन्न किया दुःखकी बात है कि आपके भेद गुप्त करनेसे हम मारेगये २१ हम बान्धवों समेत कर्ण के मरने से पीड़ावान् हुये अभिमन्यु द्रौपदी के पुत्र २२ पाञ्चालोंके नाश और कौरवोंके गिरनेसे भी हम पीड़ावान् हुये परन्तु उन सबसे भी सौगुने इस दुःखने अब मुझको दबाया है २३ मैं कर्णकोही शोचताहुआ मानो अग्नि में नियत होकर जलता हूं स्वर्ग में प्राप्त होकर भी मेरा कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं था २४ जो यह घोर युद्ध कौरवों का नाश करनेवाला न होता हे राजन् ! इस प्रकार धर्मराज युधिष्ठिरने बहुत विलाप करके २५ धीरे धीरे बहुत रोदन किया इसके पीछे उस प्रभुने उसका जलदान किया उस समय सब स्त्री पुरुष अकस्मात् पुकारे २६ वहां उस जलदानक्रिया में गङ्गाजी समीप जलरखनेवाली नियत हुई इसके पीछे उस बुद्धिमान् कौरवपति युधिष्ठिर ने भाई के प्रेमसे कर्णकी सब स्त्रियों को परिवारसमेत बुला लिया उस धर्मात्मा बुद्धिमान् धर्मराज युधिष्ठिर ने उन्हों के साथ निस्सन्देह विधिपूर्वक प्रेतक्रिया को किया इस माताके गुप्तपाप से मुझसे बड़ाभाई जातिवाला गिरायागया २७ । २८ इस हेतुसे स्त्रियोंके चित्तमें जो गुप्त करनेके योग्य बात है वह गुप्त नहीं होगी वह महाव्याकुलचित्त ऐसा कहकर गङ्गाजी को उतरा और सब भाइयोंसमेत गङ्गाजी के तटको प्राप्त किया ३० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि कर्णगूढजन्मकथनन्नाम सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७ ॥

शुभम्भूयात् ॥

इति स्त्रीपर्व समाप्तम् ॥

[illegible] पुस्तकें।

पुस्तक		मूल्य
महाभारतवार्त्तिक कामिल,		२०)
आदिपर्व,	....	१।=)
सभापर्व,	....	॥)
वनपर्व,	....	२।=)
विराटपर्व,	....	॥)
उद्योगपर्व,	....	१॥)
भीष्मपर्व,	....	१।)
द्रोणपर्व,	....	१॥।)
कर्णपर्व,	....	१)
शल्यपर्व, गदापर्व,	....	॥।)
अनुशासनपर्व,	....	१॥)
शान्तिपर्व, मय राजधर्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म,	....	३।)
अश्वमेधपर्व,	....	॥≡)
आश्रमवासिकपर्व, मुशलपर्व, महाप्रस्थानपर्व, स्वर्गारोहणपर्व,	....	।≡)
हरिवंशपर्व,	....	३)
महाभारत काशीनरेश,		६)

पुस्तक		मूल्य
महाभारत सबलसिंह चौहान		
काग़ज़ सफ़ेद गुन्दा मुजल्लद		१॥।)
तथा काग़ज़ रस्मी	....	१।-)॥
आदिपर्व,	....	=)
सभापर्व,	....	=)
वनपर्व,	....	-)
विराटपर्व,	....	=)
उद्योगपर्व,	....	≡)॥
भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदापर्व,	....	।)॥
सौप्तिकपर्व, यौषिकपर्व,		)॥
स्त्रीपर्व,	....	)॥
शान्तिपर्व,	....	-)
अश्वमेधपर्व,	....	≡)॥
आश्रमवासिक, मुशलपर्व,		-)
स्वर्गारोहणपर्व,	....	)॥
तारीख़ रूसिया भाषा,		२)
तथा मुजल्लद,	....	२॥)
तारीख़ इंग्लिस्तान हिंदी,		॥।)

मिलने का [illegible]

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ.